''मीठे बच्चे – बाप को तुम बच्चे ही प्यारे हो, बाप तुम्हें ही सुधारने के लिए श्रीमत देते हैं, सदा ईश्वरीय मत पर चल स्वयं को पवित्र बनाओ''

प्रश्नः- विश्व में शान्ति की स्थापना कब और किस विधि से होती है?

उत्तरः- तुम जानते हो विश्व में शान्ति तो महाभारत लड़ाई के बाद ही होती है। लेकिन उसके लिए तुम्हें पहले से ही तैयार होना है। अपनी कर्मातीत अवस्था बनाने की मेहनत करनी है। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सिमरण कर बाप की याद से सम्पूर्ण पावन बनना है तब इस सृष्टि का परिवर्तन होगा।

गीतः- आज अन्धेरे में है इंसान .....

ओम् शान्ति। यह गीत है भक्ति मार्ग का गाया हुआ। कहते हैं हम अन्धेरे में हैं, अब ज्ञान का तीसरा नेत्र दो। ज्ञान मांगते हैं ज्ञान सागर से। बाकी है अज्ञान। कहा जाता है कलियुग में सब अज्ञान की आसुरी नींद में सोये हुए कुम्भकरण हैं। बाप कहते हैं ज्ञान तो बहुत ही सिम्पुल है। भक्ति मार्ग में कितने वेद-शास्त्र आदि पढ़ते हैं, हठयोग करते हैं, गुरू आदि करते हैं। अब उन सबको छोड़ना पड़ता है क्योंकि वह कभी राजयोग सिखला न सकें। बाप ही तो राजाई देंगे। मनुष्य, मनुष्य को दे न सकें। परन्तु उसके लिए ही संन्यासी कहते हैं काग विष्टा समान सुख है क्योंकि खुद घरबार छोड़ भागते हैं। यह ज्ञान सिवाए ज्ञान सागर बाप के और कोई दे न सके। यह राजयोग भगवान ही सिखलाते हैं। मनुष्य, मनुष्य को पावन बना न सके। पतित-पावन एक ही बाप है। मनुष्य भक्ति मार्ग में कितना फँसे हुए हैं। जन्म-जन्मान्तर से भक्ति करते आये हैं। स्नान करने जाते हैं। ऐसे भी नहीं सिर्फ गंगा में स्नान करते हैं। जहाँ भी पानी का तालाब आदि देखेंगे तो उसको भी पतित-पावन समझते हैं। यहाँ भी गऊमुख है। झरने से पानी आता है। जैसे कुएं में पानी आता है तो उनको पतित-पावनी गंगा थोड़ेही कहेंगे। मनुष्य समझते हैं यह भी तीर्थ है। बहुत मनुष्य भावना से वहाँ जाकर स्नान आदि करते हैं। तुम बच्चों को अभी ज्ञान मिला है। तुम बतलाते हो तो भी मानते नहीं। अपना देह-अहंकार बहुत है। हम इतने शास्त्र पढ़े हैं.....! बाप कहते हैं यह पढ़ा हुआ सब भूलो। अब इन सब बातों का मनुष्यों को कैसे पता पड़े इसलिए बाबा कहते हैं ऐसी-ऐसी प्वाइंट्स लिखकर एरोप्लेन द्वारा गिराओ। जैसे आजकल कहते हैं – विश्व में शान्ति कैसे हो? कोई ने राय दी तो उनको इनाम मिलता रहता है। अब वह शान्ति की स्थापना तो कर न सकें। शान्ति है कहाँ? झूठी प्राइज़ देते रहते हैं।

अब तुम जानते हो विश्व में शान्ति तो होती है लड़ाई के बाद। यह लड़ाई तो कोई भी समय लग सकती है। ऐसी तैयारी है। सिर्फ तुम बच्चों की ही देरी है। जब तुम बच्चे कर्मातीत अवस्था को पाओ, इसमें ही मेहनत है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो और गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनो और सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सिमरण करते रहो। तुम लिख भी सकते हो – ड्रामा अनुसार कल्प पहले मुआफ़िक विश्व में शान्ति स्थापन हो जायेगी। तुम यह भी समझा सकते हो कि विश्व में शान्ति तो सतयुग में ही होती है। यहाँ जरूर अशान्ति रहेगी। परन्तु कई हैं जो तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं करते क्योंकि उनको स्वर्ग में आना ही नहीं है तो श्रीमत पर चलेंगे नहीं। यहाँ भी बहुत हैं जो श्रीमत पर पवित्र रह नहीं सकते। ऊंच ते ऊंच भगवान की तुमको मत मिलती है। कोई की चलन अच्छी नहीं होती है तो कहते हैं ना तुमको ईश्वर अच्छी मत दे। अभी तुमको ईश्वरीय मत पर चलना चाहिए। बाप कहते हैं 63 जन्म तुमने विषय सागर में गोते खाये हैं। बच्चों से बात करते हैं। बच्चों को ही बाप सुधारेंगे ना। सारी दुनिया को कैसे सुधारेंगे। बाहर वालों को कहेंगे बच्चों से समझो। बाप बाहर वालों से बात नहीं कर सकते। बाप को बच्चे ही प्यारे लगते हैं। सौतेले बच्चे थोड़ेही लगेंगे। लौकिक बाप भी सपूत बच्चों को धन देते हैं। सब बच्चे समान तो नहीं होंगे। बाप भी कहते हैं जो मेरे बनते हैं, उन्हों को ही मैं वर्सा देता हूँ। जो मेरे नहीं बनते हैं, वह हज़म नहीं कर सकेंगे। श्रीमत पर चल नहीं सकेंगे। वह हैं भगत। बाबा के बहुत देखे हुए हैं। कोई बड़ा संन्यासी आता है तो बहुत उन्हों के फालोअर्स होते हैं। फण्ड (चन्दा) इकट्ठा करते हैं। अपनी-अपनी ताकत अनुसार फण्ड्स निकालते हैं। यहाँ बाप तो ऐसे नहीं कहेंगे – फण्ड्स इकट्ठा करो। नहीं, यहाँ तो जो बीज बोयेंगे 21 जन्म उसका फल पायेंगे। मनुष्य दान करते हैं तो समझते हैं ईश्वर अर्थ हम करते हैं। ईश्वर समर्पणम् कहते हैं वा तो कहेंगे श्रीकृष्ण समर्पणम्। श्रीकृष्ण का नाम क्यों लेते हैं? क्योंकि गीता का भगवान समझते हैं। श्री राधे अर्पणम् कभी नहीं कहेंगे। ईश्वर या श्रीकृष्ण अर्पणम् कहते हैं। जानते हैं फल देने वाला ईश्वर ही है। कोई साहूकार के घर में जन्म लेते हैं तो

कहते हैं ना, आगे जन्म में बहुत दान-पुण्य किये हैं तब यह बना है। राजा भी बन सकते हैं। परन्तु वह है अल्पकाल काग विष्टा समान सुख। राजाओं को भी संन्यासी लोग संन्यास कराते हैं तो उनको कहते हैं स्त्री तो सर्पिणी है, लेकिन द्रोपदी ने तो पुकारा है, दु:शासन मुझे नंगन करते हैं। अब भी अबलायें कितना पुकारती हैं – हमारी लाज रखो। बाबा यह हमको बहुत मारते हैं। कहते हैं विष दो नहीं तो खून करता हूँ। बाबा इन बंधनों से छुड़ाओ। बाप कहते हैं बंधन तो खलास होने ही हैं फिर 21 जन्म कभी नंगन नहीं होंगे। वहाँ विकार होता नहीं। इस मृत्युलोक में यह अन्तिम जन्म है। यह है ही विशश वर्ल्ड।

दूसरी बात, बाप समझाते हैं कि इस समय मनुष्य कितने बेसमझ बन गये हैं। जब कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्ग पधारा। लेकिन स्वर्ग है कहाँ। यह तो नर्क है। स्वर्गवासी हुआ तो ज़रूर नर्क में था। परन्तु किसको सीधा कहो – तुम नर्कवासी हो तो क्रोध में आकर बिगड़ पड़ेंगे। ऐसे-ऐसे को तुमको लिखना चाहिए। फलाना स्वर्गवासी हुआ तो इसका मतलब तुम नर्कवासी हो ना। हम तुमको ऐसी युक्ति बतायें जो तुम सच-सच स्वर्ग में जाओ। यह पुरानी दुनिया तो अब खत्म होनी है। अखबार में निकालो कि इस लड़ाई के बाद विश्व में शान्ति होनी है, 5 हज़ार वर्ष पहले मुआफ़िक। वहाँ एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। वो लोग फिर कहते वहाँ भी कंस, जरासन्धी आदि असुर थे, त्रेता में रावण था। अब उनसे माथा कौन मारे। ज्ञान और भक्ति में रात-दिन का फ़र्क है। इतनी सहज बात भी मुश्किल किसकी बुद्धि में बैठती है। तो ऐसे-ऐसे स्लोगन्स बनाने चाहिए। इस लड़ाई के बाद विश्व में शान्ति होनी है ड्रामा अनुसार। कल्प-कल्प विश्व में शान्ति होती है फिर कलियुग अन्त में अशान्ति होती है। सतयुग में ही शान्ति होती है। यह भी तुम लिख सकते हो, गीता में भूल करने से ही भारत का यह हाल हुआ है। पूरे 84 जन्म लेने वाले श्रीकृष्ण का नाम डाल दिया है। श्री नारायण का भी नहीं डाला है। उनके फिर भी 84 जन्मों में से कुछ दिन कम कहेंगे ना। श्रीकृष्ण के पूरे 84 जन्म होते हैं। शिवबाबा आते हैं बच्चों को हीरे जैसा बनाने तो उनके लिए फिर डिब्बी भी ऐसी सोने की चाहिए, जिसमें बाप आकर प्रवेश करे। अब यह सोने का कैसे बने तो फट से उनको साक्षात्कार कराया – तुम तो विश्व के मालिक बनते हो। अब मामेकम् याद करो, पवित्र बनो तो झट पवित्र होने लग पड़े। पवित्र बनने बिगर तो ज्ञान की धारणा हो न सके। शेरणी के दूध लिए सोने का बर्तन चाहिए। यह ज्ञान तो है - परमपिता परमात्मा का। इसको धारण करने के लिए भी सोने का बर्तन चाहिए। पवित्र चाहिए, तब धारणा हो। पवित्रता की प्रतिज्ञा करके फिर गिर पड़ते हैं तो योग की यात्रा ही खत्म हो जाती है। ज्ञान भी खत्म हो जाता है। किसको कह न सके – भगवानुवाच, काम महाशत्रु है। उनका तीर लगेगा नहीं। वह फिर कुक्कड़ ज्ञानी हो पड़ते। कोई भी विकार न हो। रोज़ पोतामेल रखो। जैसे बाप सर्वशक्तिमान् है वैसे माया भी सर्वशक्तिमान् है। आधाकल्प रावण का राज्य चलता है। इन पर जीत बाप बिगर कोई पहना न सके। ड्रामा अनुसार रावण राज्य भी होना ही है। भारत की ही हार और जीत पर यह ड्रामा बना हुआ है। यह बाप तुम बच्चों को ही समझाते हैं। मुख्य है पवित्र होने की बात। बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ पतितों को पावन बनाने। बाकी शास्त्रों में पाण्डव और कौरवों की लड़ाई, जुआ आदि बैठ दिखाये हैं। ऐसी बात हो कैसे सकती। राजयोग की पढ़ाई ऐसी होती है क्या? युद्ध के मैदान में गीता पाठशाला होती है क्या? कहाँ जन्म-मरण रहित शिवबाबा, कहाँ पूरे 84 जन्म लेने वाला श्रीकृष्ण। उनके ही अन्तिम जन्म में बाप आकर प्रवेश करते हैं। कितना क्लीयर है। गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र भी बनना है। संन्यासी तो कहते हैं – दोनों इकट्ठे रह पवित्र नहीं रह सकते। कहो तुमको तो कोई प्राप्ति नहीं, तो कैसे रहेंगे। यहाँ तो विश्व की बादशाही मिलती है। बाप कहते हैं मेरे खातिर कुल की लाज रखो। शिवबाबा कहते हैं इनके दाढ़ी की लाज रखो। यह एक अन्तिम जन्म पवित्र रहो तो स्वर्ग के मालिक बनेंगे। अपने लिए ही मेहनत करते हैं। दूसरा कोई स्वर्ग में आ नहीं सकता। यह तुम्हारी राजधानी स्थापन हो रही है। इसमें सब चाहिए ना। वहाँ वजीर तो होते नहीं। राजाओं को राय की दरकार नहीं। पतित राजाओं को भी एक वजीर होता है। यहाँ तो देखो कितने मिनिस्टर्स हैं। आपस में लड़ते रहते हैं। बाप सभी झंझटों से छुड़ा देते हैं। 3 हज़ार वर्ष फिर कोई लड़ाई नहीं होगी। जेल आदि नहीं रहेगा। कोर्ट आदि कुछ नहीं होगा। वहाँ तो सुख ही सुख है। इसके लिए पुरूषार्थ करना है। मौत सिर पर खड़ा है। याद की यात्रा से विकर्माजीत बनना है। तुम ही मैसेन्जर्स हो जो सबको बाप का मैसेज देते हो कि मनमनाभव। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) ज्ञान की धारणा करने के लिए पवित्र बन बुद्धि रूपी बर्तन को स्वच्छ बनाना है। सिर्फ कुक्कड़ ज्ञानी नहीं बनना है।

2) डायरेक्ट बाप के आगे अपना सब कुछ अर्पण कर श्रीमत पर चलकर 21 जन्मों के लिए राजाई पद लेना है।

वरदान:- हर शक्ति को कार्य में लगाकर वृद्धि करने वाले श्रेष्ठ धनवान वा समझदार भव

समझदार बच्चे हर शक्ति को कार्य में लगाने की विधि जानते हैं। जो जितना शक्तियों को कार्य में लगाते हैं उतना उनकी वह शक्तियां वृद्धि को प्राप्त होती हैं। तो ऐसा ईश्वरीय बजट बनाओ जो विश्व की हर आत्मा आप द्वारा कुछ न कुछ प्राप्ति करके आपके गुणगान करे। सभी को कुछ न कुछ देना ही है। चाहे मुक्ति दो, चाहे जीवनमुक्ति दो। ईश्वरीय बजेट बनाकर सर्व शक्तियों की बचत कर जमा करो और जमा हुई शक्ति द्वारा सर्व आत्माओं को भिखारीपन से, दु:ख अशान्ति से मुक्त करो।

स्लोगन:- शुद्ध संकल्पों को अपने जीवन का अनमोल खजाना बना लो तो मालामाल बन जायेंगे।

मातेश्वरी जी के अनमोल महावाक्य - ''अब विकर्म बनाने की कॉम्पीटेशन नहीं करनी है''

पहले-पहले तो अपने पास यह एम अवश्य रखनी है कि हमको किस भी रीति से अपने विकारों को वश करना है, तब ही ईश्वरीय सुख शान्ति में रह सकते हैं। अपना मुख्य पुरुषार्थ है खुद शान्ति में रहकर औरों को शान्ति में लाना, इसमें सहनशक्ति जरूर चाहिए। सारा अपने ऊपर मदार है, ऐसा नहीं कोई ने कुछ कहा तो अशान्ति में आ जाना चाहिए, नहीं। ज्ञान का पहला गुण है सहनशक्ति धारण करना। देखो अज्ञानकाल में कहते हैं भल कोई कितनी भी गाली देवे, ऐसे समझो कि मुझे कहाँ लगी? भल जिसने गाली दी वो खुद तो अशान्ति में आ गया, उन्हों का हिसाब-किताब अपना बना। लेकिन हम भी अशान्ति में आए, कुछ कह दिया तो फिर हमारा विकर्म बनेगा, तो विकर्म बनाने की कॉम्पीटेशन नहीं करनी है। अपने को तो विकर्मों को भस्म करना है, न कि बनाना है, ऐसे विकर्म तो जन्म जन्मान्तर बनाते आये और दु:ख उठाते आये। अब तो नॉलेज मिल रही है इन पाँच विकारों को जीतो। विकारों का भी बड़ा प्रस्ताव (विस्तार) है, बहुत सूक्ष्म रीति से आते हैं। कब ईर्ष्या आ जाती है तो सोचते हैं इसने ऐसा किया तो मैं क्यों न करूँ? यह है बड़ी भूल। अपने को तो अभुल बनाना है, अगर कोई ने कुछ कहा तो ऐसे समझो यह भी मेरी परीक्षा है, कितने तक मेरे अन्दर सहनशक्ति है? अगर कोई कहे मैंने बहुत सहन किया, एक बारी भी जोश आ गया तो आखरीन फेल हो गया। जिसने कहा उसने अपना बिगाड़ा परन्तु अपने को तो बनाना है, न कि बिगाड़ना है इसलिए अच्छा पुरुषार्थ कर जन्म जन्मान्तर के लिये अच्छी प्रालब्ध बनानी है। बाकी जो विकारों के वश है गोया उन्हों में भूत प्रवेश है, भूतों की भाषा ही ऐसे निकलती है परन्तु जो दैवी सोल्स हैं, उनकी भाषा दैवी ही निकलेगी। तो अपने को दैवी बनाना है न कि आसुरी। अच्छा-ओम् शान्ति।

अव्यक्त इशारे – सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

परमात्म-प्यार के अनुभवी बनो तो इसी अनुभव से सहजयोगी बन उड़ते रहेंगे। परमात्म-प्यार उड़ाने का साधन है। उड़ने वाले कभी धरनी की आकर्षण में आ नहीं सकते। माया का कितना भी आकर्षित रूप हो लेकिन वह आकर्षण उड़ती कला वालों के पास पहुँच नहीं सकती।

''मीठे बच्चे – कभी थक कर याद की यात्रा को छोड़ना नहीं, सदा देही-अभिमानी रहने का प्रयत्न करो, बाप का प्यार खींचने वा स्वीट बनने के लिए याद में रहो''

प्रश्नः- 16 कला सम्पूर्ण अथवा परफेक्ट बनने के लिए कौन-सा पुरूषार्थ जरूर करना है?

उत्तरः- जितना हो सके स्वयं को आत्मा समझो। प्यार के सागर बाप को याद करो तो परफेक्ट बन जायेंगे। ज्ञान बहुत सहज है लेकिन 16 कला सम्पूर्ण बनने के लिए याद से आत्मा को परफेक्ट बनाना है। आत्मा समझने से मीठे बन जायेंगे। सब खिटखिटें समाप्त हो जायेंगी।

गीतः- तू प्यार का सागर है.....

ओम् शान्ति। प्यार का सागर अपने बच्चों को भी ऐसा प्यार का सागर बनाते हैं। बच्चों की एम ऑब्जेक्ट ही है कि हम ऐसे लक्ष्मी-नारायण बनें। इनको सब कितना प्यार करते हैं। बच्चे जानते हैं बाबा हमको इन जैसा मीठा बनाते हैं। मीठा यहाँ ही बनना है और बनेंगे याद से। भारत का योग गाया हुआ है, यह है याद। इस याद से ही तुम इन जैसे विश्व के मालिक बनते हो। यही बच्चों को मेहनत करनी है। तुम इस घमण्ड में मत आओ कि हमको ज्ञान बहुत है। मूल बात है याद। याद ही प्यार देती है। बहुत मीठे, बहुत प्यारे बनने चाहते हो, ऊंच पद पाना चाहते हो तो मेहनत करो। नहीं तो बहुत पछतायेंगे क्योंकि बहुत बच्चे हैं जिनसे याद में रहना पहुँचता नहीं है, थक जाते हैं तो छोड़ देते हैं। एक तो देही-अभिमानी बनने के लिए बहुत प्रयत्न करो। नहीं तो बहुत कम पद पा लेंगे। इतना स्वीट कभी नहीं होंगे। बहुत थोड़े बच्चे हैं जो खींचते हैं क्योंकि याद में रहते हैं। सिर्फ बाप की याद चाहिए। जितना याद करेंगे उतना बहुत स्वीट बनेंगे। इन लक्ष्मी-नारायण ने भी अगले जन्म में बहुत याद किया है। याद से स्वीट बने हैं। सतयुग के सूर्यवंशी पहले नम्बर में हैं, चन्द्रवंशी सेकण्ड नम्बर हो गये। यह लक्ष्मी-नारायण बहुत प्रिय लगते हैं। इन लक्ष्मी-नारायण के फीचर्स और राम-सीता के फीचर्स में बहुत फ़र्क है। इन लक्ष्मी-नारायण पर कभी कोई कलंक नहीं लगाया है। श्रीकृष्ण पर भूल से कलंक लगाये हैं, राम-सीता पर भी लगाये हैं।

बाप कहते हैं बहुत मीठा तब बनेंगे जब समझेंगे कि हम आत्मा हैं। आत्मा समझ बाप को याद करने में बहुत मज़ा है। जितना याद करेंगे उतना सतोप्रधान, 16 कला सम्पूर्ण बनेंगे। 14 कला फिर भी डिफेक्टेड हुआ फिर और डिफेक्ट होती जाती है। 16 कला परफेक्ट बनना है। ज्ञान तो बिल्कुल सहज है। कोई भी सीख जायेंगे। 84 जन्म कल्प-कल्प लेते आये हैं। अब वापिस तो कोई नहीं जा सकते, जब तक पूरा पवित्र न बनें। नहीं तो सज़ायें खानी पड़े। बाबा बार-बार समझाते हैं, जितना हो सके पहले-पहले यह एक बात पक्की करो कि मैं आत्मा हूँ। हम आत्मा अपने घर में रहती हैं तो हम सतोप्रधान हैं फिर यहाँ जन्म लेते हैं। कोई कितने जन्म, कोई कितने जन्म लेते हैं। पिछाड़ी में तमोप्रधान बनते हैं। दुनिया की वह इज्जत कम होती जाती है। नया मकान होता है तो उसमें कितनी आराम आती है। फिर डिफेक्टेड हो जाता है, कलायें कम होती जाती हैं। अगर तुम बच्चे चाहते हो परफेक्ट दुनिया में जायें तो परफेक्ट बनना है। सिर्फ नॉलेज को परफेक्ट नहीं कहा जाता। आत्मा को परफेक्ट बनना है। जितना हो सके कोशिश करो – मैं आत्मा हूँ, बाबा का बच्चा हूँ। अन्दर में बहुत खुशी रहनी चाहिए। मनुष्य अपने को देहधारी समझ खुश होते हैं। हम फलाने का बच्चा हूँ ..... वह है अल्पकाल का नशा। अब तुम बच्चों को बाप के साथ पूरा बुद्धियोग लगाना है, इसमें मूँझना नहीं है। भल विलायत में कहाँ भी जाओ सिर्फ एक बात पक्की रखो, कि बाबा को याद करना है। बाबा प्यार का सागर है। यह महिमा कोई मनुष्य की नहीं। आत्मा अपने बाप की महिमा करती है। आत्मायें सब आपस में भाई-भाई हैं। सभी का बाप एक है। बाप सबको कहते हैं – बच्चे, तुम सतोप्रधान थे सो अब तमोप्रधान बने। तमोप्रधान बनने से तुम दु:खी बने हो। अब मुझ आत्मा को परमात्मा बाप कहते हैं तुम पहले परफेक्ट थे। सब आत्मायें वहाँ परफेक्ट ही हैं। भल पार्ट अलग-अलग है, परन्तु परफेक्ट तो हैं ना। प्योरिटी बिगर तो वहाँ कोई जा न सके। सुखधाम में तुमको सुख भी है तो शान्ति भी है, इसलिए तुम्हारा ऊंच ते ऊंच धर्म है। अथाह सुख रहता है। विचार करो हम क्या बनते हैं। स्वर्ग के मालिक बनते हैं। वह है हीरे जैसा जन्म। अभी तो कौड़ी जैसा जन्म है। अब बाप इशारा देते हैं याद में रहने का। तुम बुलाते ही हो कि हमको आकर पतित से पावन बनाओ। सतयुग में हैं सम्पूर्ण निर्विकारी। राम-सीता को भी सम्पूर्ण नहीं कहेंगे। वह सेकण्ड ग्रेड में चले गये। याद की यात्रा में पास

नहीं हुए। नॉलेज में भल कितना भी तीखा हो, कभी भी बाप को मीठा नहीं लगेंगे। याद में रहेंगे तब ही मीठे बनेंगे। फिर बाप भी तुमको मीठा लगेगा। पढ़ाई तो बिल्कुल कॉमन है, पवित्र बनना है, याद में रहना है। यह अच्छी रीति नोट कर दो फिर यह जो कहाँ-कहाँ खिट-खिट होती है, अहंकार आ जाता है, वह कभी नहीं होगा – याद की यात्रा में रहने से। मूल बात अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। दुनिया में मनुष्य कितना लड़ते झगड़ते हैं। जीवन ही जैसे ज़हर मिसल कर देते हैं। यह अक्षर सतयुग में नहीं होंगे। आगे चल यहाँ तो मनुष्यों की जीवन और ही ज़हर होती जायेगी। यह है ही विषय सागर। रौरव नर्क में सब पड़े हैं, बहुत गन्द है। दिन-प्रतिदिन गन्द वृद्धि को पाता रहता है। इनको कहा जाता है डर्टी वर्ल्ड। एक-दो को दु:ख ही देते रहते क्योंकि देह-अभिमान का भूत है। काम का भूत है। बाप कहते हैं इन भूतों को भगाओ। यह भूत ही तुम्हारा काला मुँह करते हैं। काम चिता पर बैठ काले बन जाते हैं तब बाप कहते हैं फिर हम आकर ज्ञान अमृत की वर्षा करते हैं। अभी तुम क्या बनते हो! वहाँ तो हीरों के महल होते हैं, सब प्रकार के वैभव होते हैं। यहाँ तो सब मिलावटी चीजें हैं। गऊओं का खाना देखो, सबसे तन्त (सार) निकाल बाकी दे देते हैं। गाय को खाना भी ठीक नहीं मिलता। श्रीकृष्ण की गायें देखो कैसी फर्स्टक्लास दिखाते हैं। सतयुग में गायें ऐसी होती हैं, बात मत पूछो। देखने से ही फरहत आ जाती है। यहाँ तो हर चीज़ से इसेन्स निकाल देते हैं। यह बहुत छी-छी गन्दी दुनिया है। तुम्हें इससे दिल नहीं लगानी है। बाप कहते हैं तुम कितने विकारी बन गये हो। लड़ाई में कैसे एक-दो को मारते रहते हैं। एटॉमिक बॉम्ब्स बनाने वालों का भी मान कितना है, इनसे सबका विनाश हो जाता है। बाप बैठ बताते हैं – आज के मनुष्य क्या हैं, कल के क्या होंगे। अभी तुम हो बीच में। संग तारे कुसंग बोरे। तुम पुरूषोत्तम बनने के लिए बाप का हाथ पकड़ते हो। कोई तैरना सीखते हैं तो सिखलाने वाले का हाथ पकड़ना होता है। नहीं तो घुटका आ जाए, इसमें भी हाथ पकड़ना है। नहीं तो माया खींच लेती है। तुम इस सारे विश्व को स्वर्ग बनाते हो। अपने को नशे में लाना चाहिए। हम श्रीमत से अपनी राजाई स्थापन कर रहे हैं। सभी मनुष्य मात्र दान तो करते ही हैं। फकीरों को देते हैं। तीर्थ यात्रा पर पण्डों को दान देते हैं, चावल मुट्ठी भी दान जरूर करेंगे। वह सब भक्ति मार्ग में चला आता है। अभी बाबा हमको डबल दानी बनाते हैं। बाप कहते हैं तीन पैर पृथ्वी पर तुम यह ईश्वरीय युनिवर्सिटी, ईश्वरीय हॉस्पिटल खोलो जिसमें मनुष्य 21 जन्मों के लिए आकर शफा पायेंगे। यहाँ तो कैसी-कैसी बीमारियां होती हैं। बीमारी में कितनी बांस हो जाती है। हॉस्पिटल में देखो तो नफ़रत आती है। कर्मभोग कितना है। इन सब दु:खों से छूटने के लिए बाप कहते हैं – सिर्फ याद करो और कोई तकलीफ तुमको नहीं देता हूँ। बाबा जानते हैं बच्चों ने बहुत तकलीफ देखी है। विकारी मनुष्यों की शक्ल ही बदल जाती है। एकदम जैसे मुर्दे बन जाते हैं। जैसे शराबी शराब बिगर रह नहीं सकते। शराब से बहुत नशा चढ़ता है परन्तु अल्पकाल के लिए। इससे विकारी मनुष्यों की आयु भी कितनी छोटी हो जाती है। निर्विकारी देवताओं की आयु एवरेज 125-150 वर्ष होती है। एवरहेल्दी बनेंगे तो आयु भी तो बढ़ेगी ना। निरोगी काया हो जाती है। बाप को अविनाशी सर्जन भी कहा जाता है। ज्ञान इन्जेक्शन सतगुरू दिया अज्ञान अन्धेर विनाश। बाप को जानते नहीं हैं इसलिए अज्ञान अंधेरा कहा जाता है, भारतवासियों की ही बात है। क्राइस्ट को तो जानते हैं फलाने संवत में आया। उन्हों की सारी लिस्ट है। कैसे नम्बरवार पोप गद्दी पर बैठते हैं। एक ही भारत है जो कोई की बॉयोग्राफी नहीं जानते। बुलाते भी हैं हे दु:ख हर्ता सुख कर्ता परमात्मा, हे मात-पिता..... अच्छा, मात-पिता की बॉयोग्राफी तो बताओ। कुछ भी पता नहीं।

तुम जानते हो – यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। हम अभी पुरुषोत्तम बन रहे हैं तो पूरा पढ़ना चाहिए। लोक-लाज कुल की मर्यादा में भी बहुत फँसे रहते हैं। इस बाबा ने तो कोई की भी परवाह नहीं की। कितनी गालियाँ आदि खाई, न मन न चित। रास्ते चलते-चलते ब्राह्मण फँस गया। बाबा ने ब्राह्मण बनाया तो गाली खाने लगे। सारी पंचायत थी एक तरफ, दादा दूसरी तरफ। सारी सिन्धी पंचायत कहे कि यह क्या करते हो! अरे गीता में भगवानुवाच है ना – काम महाशत्रु है, इन पर जीत पाने से विश्व के मालिक बनोगे। यह तो गीता के अक्षर हैं। मुझ से भी कोई कहलाते हैं कि काम विकार को जीतने से तुम जगतजीत बनेंगे। इन लक्ष्मी-नारायण ने भी जीत पाई है ना। इसमें लड़ाई आदि की कोई बात नहीं। तुमको स्वर्ग की बादशाही देने आया हूँ। अब पवित्र बनो और बाप को याद करो। स्त्री कहे हम पावन बनेंगी, पति कहे मैं नहीं बनूँगा। एक हंस एक बगुला हो जाता। बाप आकर ज्ञान रत्न चुगने वाला हंस बनाते हैं। परन्तु एक बनता, दूसरा नहीं बनता तो झगड़ा होता है। शुरूआत में तो बहुत ताकत थी। अभी इतनी हिम्मत कोई में नहीं है। भल कहते हैं हम वारिस हैं, परन्तु वारिस

बनने की बात और है। शुरू में तो कमाल थी। बड़े-बड़े घर वाले फट से छोड़ आये वर्सा पाने। तो वह लायक बन गये। पहले-पहले आने वालों ने तो कमाल की। अभी ऐसे कोई विरले निकलेंगे। लोक-लाज बहुत है। पहले जो आये उन्हों ने बहुत हिम्मत दिखाई। अभी कोई इतना साहस रखें – बहुत मुश्किल है। हाँ, गरीब रख सकते हैं। माला का दाना बनना है तो पुरूषार्थ करना पड़े। माला तो बहुत बड़ी है। 8 की भी है, 108 की भी है, फिर 16108 की भी है। बाप खुद कहते हैं बहुत-बहुत मेहनत करो। अपने को आत्मा समझो। सच बतलाते नहीं हैं। अच्छे-अच्छे जो अपने को समझते हैं, उनसे भी विकर्म हो जाते हैं। भल ज्ञानी तू आत्मा हैं। समझानी अच्छी है परन्तु योग है नहीं, दिल पर नहीं चढ़ते। याद में ही नहीं रहते तो दिल पर भी नहीं चढ़ते। याद से ही याद मिलेगी ना। शुरू में फट से वारी गये। अब वारी जाना मासी का घर नहीं। मूल बात है याद, तब ही खुशी का पारा चढ़ेगा। जितनी कलायें कम होती गई हैं उतना दु:ख बढ़ता गया है। अब फिर जितनी कलायें बढ़ेगी उतना खुशी का पारा चढ़ेगा। पिछाड़ी में तुमको सब साक्षात्कार होंगे। जास्ती याद करने वालों को क्या पद मिलता है। बहुत पिछाड़ी में साक्षात्कार होगा। जब विनाश होगा तब तुम स्वर्ग के साक्षात्कार के हलवे खायेंगे। बाबा बार-बार समझाते हैं – याद को बढ़ाओ। किसको थोड़ा समझाया – इसमें बाबा खुश नहीं होते। एक पण्डित की भी कथा है ना। बोला राम-राम कहने से सागर पार हो जायेंगे। यह दिखाते हैं – निश्चय में ही विजय है। बाप में संशय आने से विनशन्ती हो जाते हैं। बाप की याद से ही पाप कटते हैं, रात-दिन कोशिश करनी चाहिए। फिर कर्मेन्द्रियों की चंचलता बन्द हो जायेगी। इसमें बहुत मेहनत है। बहुत हैं जिनकी याद का चार्ट है नहीं। गोया फाउन्डेशन है नहीं। जितना हो सके कैसे भी याद करना है तब ही सतोप्रधान, 16 कला बनेंगे। पवित्रता के साथ याद की यात्रा भी चाहिए। पवित्र रहने से ही याद में रह सकेंगे। यह प्वाइंट अच्छी रीति धारण करो। बाप कितना निरहंकारी है। आगे चल तुम्हारे चरणों में सब झुकेंगे। कहेंगे बरोबर यह मातायें स्वर्ग का द्वार खोलती हैं। याद का जौहर अभी कम है। कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में ही मेहनत है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार :-

1) इस पतित छी-छी दु:खदाई दुनिया से दिल नहीं लगानी है। एक बाप का हाथ पकड़ इससे पार जाना है।

2) माला का दाना बनने के लिए बहुत साहस रख पुरुषार्थ करना है। ज्ञान रत्न चुगने वाला हंस बनना है। कोई भी विकर्म नहीं करने हैं।

वरदान:- निमित्त भाव द्वारा सेवा में सफलता प्राप्त करने वाले श्रेष्ठ सेवाधारी भव

निमित्त भाव–सेवा में स्वत: सफलता दिलाता है। निमित्त भाव नहीं तो सफलता नहीं। श्रेष्ठ सेवाधारी अर्थात् हर कदम बाप के कदम पर रखने वाले। हर कदम श्रेष्ठ मत पर श्रेष्ठ बनाने वाले। जितना सेवा में, स्व में व्यर्थ समाप्त हो जाता है उतना ही समर्थ बनते हैं और समर्थ आत्मा हर कदम में सफलता प्राप्त करती है। श्रेष्ठ सेवाधारी वह है जो स्वयं भी सदा उमंग उत्साह में रहे और औरों को भी उमंग उत्साह दिलाये।

स्लोगन:- ईश्वरीय सेवा में स्वयं को आफर करो तो आफरीन मिलती रहेगी।

अव्यक्त इशारे – सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

यह परमात्म प्यार की डोर दूर-दूर से खींचकर ले आती है। यह ऐसा सुखदाई प्यार है जो इस प्यार में एक सेकण्ड भी खो जाओ तो अनेक दु:ख भूल जायेंगे और सदा के लिए सुख के झूले में झूलने लगेंगे। बाप का आप बच्चों से इतना प्यार है जो जीवन के सुख-शान्ति की सब कामनायें पूर्ण कर देते हैं। बाप सुख ही नहीं देते लेकिन सुख के भण्डार का मालिक बना देते हैं।

''मीठे बच्चे – बाबा आये हैं तुम्हें किंग ऑफ फ्लावर बनाने, इसलिए विकारों की कोई भी बदबू नहीं होनी चाहिए''

प्रश्नः- विकारों का अंश समाप्त करने के लिए कौन-सा पुरूषार्थ करना है?

उत्तरः- निरन्तर अन्तर्मुखी रहने का पुरूषार्थ करो। अन्तर्मुख अर्थात् सेकण्ड में शरीर से डिटैच। इस दुनिया की सुध-बुध बिल्कुल भूल जाए। एक सेकण्ड में ऊपर जाना और आना। इस अभ्यास से विकारों का अंश समाप्त हो जायेगा। कर्म करते-करते बीच-बीच में अन्तर्मुखी हो जाओ, ऐसा लगे जैसे बिल्कुल सन्नाटा है। कोई भी चुरपुर नहीं। यह सृष्टि तो जैसे है ही नहीं।

ओम् शान्ति। यहाँ हर एक को बिठाया जाता है कि अशरीरी हो बाप की याद में बैठो और साथ-साथ यह जो सृष्टि चक्र है उनको भी याद करो। मनुष्य 84 के चक्र को समझते नहीं हैं। समझेंगे ही नहीं। जो 84 का चक्र लगाते हैं वही समझने आयेंगे। तुमको यही याद करना चाहिए, इनको स्वदर्शन चक्र कहा जाता है, जिससे आसुरी ख्यालात खत्म हो जायेंगे। ऐसे नहीं कि कोई असुर बैठे हैं जिनका गला कट जायेगा। मनुष्य स्वदर्शन चक्र का भी अर्थ नहीं समझते हैं। यह ज्ञान तुम बच्चों को यहाँ मिलता है। कमल फूल समान गृहस्थ व्यवहार में रह पवित्र बनो। भगवानुवाच है ना। यह एक जन्म पवित्र बनने से भविष्य 21 जन्म तुम पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे। सतयुग को कहा जाता है शिवालय। कलियुग है वेश्यालय। यह दुनिया बदलती है। भारत की ही बात है। औरों की बात में जाना ही नहीं चाहिए। बोले जानवरों का क्या होगा? और धर्मों का क्या होगा? बोलो, पहले अपना तो समझो, पीछे औरों की बात। भारतवासी ही अपने धर्म को भूल दु:खी हुए हैं। भारत में ही पुकारते हैं तुम मात-पिता..... विलायत में मात-पिता अक्षर नहीं कहते। वह सिर्फ गॉड फादर कहते हैं। बरोबर भारत में ही सुख घनेरे थे, भारत स्वर्ग था – यह भी तुम जानते हो। बाप आकर कांटों को फूल बनाते हैं। बाप को बागवान कहते हैं। बुलाते हैं – आकर कांटों को फूल बनाओ। बाप फूलों का बगीचा बनाते हैं। माया फिर कांटों का जंगल बनाती है। मनुष्य तो कह देते हैं – ईश्वर तेरी माया बड़ी प्रबल है। न ईश्वर को, न माया को समझते हैं। कोई ने अक्षर कहा बस रिपीट करते रहते हैं। अर्थ कुछ नहीं। तुम बच्चे समझते हो यह ड्रामा का खेल है – रामराज्य का और रावण राज्य का। राम राज्य में सुख, रावण राज्य में दु:ख है। यहाँ की ही बात है। यह कोई प्रभू की माया नहीं है। माया कहा जाता है 5 विकारों को, जिसको रावण कहते हैं। बाकी मनुष्य तो पुनर्जन्म ले 84 के चक्र में आते हैं। सतोगुणी से तमोप्रधान बनना है। इस समय सब विकार से पैदा होते हैं – इसलिए विकारी कहा जाता है। नाम भी है विशश दुनिया फिर वाइसलेस दुनिया अर्थात् पुरानी दुनिया से नई कैसे बनती है, यह तो समझने की कॉमन बात है। न्यु वर्ल्ड में पहले हेविन था। बच्चे जानते हैं स्वर्ग की स्थापना करने वाला परमपिता परमात्मा है, उसमें सुख घनेरे हुए हैं। ज्ञान से दिन, भक्ति से रात कैसे होती है – यह भी कोई समझते नहीं हैं। कहेंगे ब्रह्मा तथा ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मणों का दिन फिर उन्हीं ब्राह्मणों की रात। दिन और रात यहाँ होता है, यह कोई नहीं समझते। प्रजापिता ब्रह्मा की रात, तो जरूर उनके ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मणों की भी रात होगी। आधाकल्प दिन, आधाकल्प रात।

अब बाप आये हैं निर्विकारी दुनिया बनाने। बाप कहते हैं – बच्चे, काम महाशत्रु है, उन पर जीत पानी है। सम्पूर्ण निर्विकारी पवित्र बनना है। अपवित्र होने से तुमने पाप बहुत किये हैं। यह है ही पाप आत्माओं की दुनिया। पाप जरूर शरीर के साथ करेंगे, तब पाप आत्मा बनेंगे। देवताओं की पवित्र दुनिया में पाप होता नहीं। यहाँ तुम श्रीमत से श्रेष्ठ पुण्य आत्मा बन रहे हो। श्री श्री 108 की माला है। ऊपर में है फूल, उनको कहेंगे शिव। वह है निराकारी फूल। फिर साकार में मेल-फीमेल हैं, उनकी माला बनी हुई है। शिवबाबा द्वारा यह पूजन सिमरण लायक बनते हैं। तुम बच्चे जानते हो – बाबा हमको विजय माला का दाना बनाते हैं। हम विश्व पर विजय पा रहे हैं याद के बल से, याद से ही विकर्म विनाश होंगे। फिर तुम सतोप्रधान बन जायेंगे। वो लोग तो बिगर समझ कह देते हैं प्रभू तेरी माया प्रबल है। किसके पास धन होगा कहेंगे इनके पास माया बहुत है। वास्तव में माया 5 विकारों को कहा जाता है, जिसको रावण भी कहा जाता है। उन्होंने फिर रावण का चित्र बना दिया है 10 शीश वाला। अब चित्र है तो समझाया जाता है। जैसे अंगद के लिए भी दिखाते हैं, उनको रावण ने हिलाया परन्तु

हिला न सका। दृष्टान्त बना दिये हैं। बाकी कोई चीज़ है नहीं। बाप कहते हैं माया तुमको कितना भी हिलाये परन्तु तुम स्थिर रहो। रावण, हनूमान, अंगद आदि यह सब दृष्टान्त बना दिये हैं, जिनका अर्थ तुम बच्चे जानते हो। भ्रमरी का भी दृष्टान्त है। भ्रमरी और ब्राह्मणी राशि मिलती है। तुम विष्टा के कीड़ों को ज्ञान-योग की भूँ-भूँ कर पतित से पावन बनाते हो। बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे। कछुए का भी दृष्टान्त है। इन्द्रियों को समेटकर अन्तर्मुख हो बैठ जाते हैं। तुमको भी बाप कहते हैं भल कर्म करो फिर अन्तर्मुख हो जाओ। जैसेकि यह सृष्टि है नहीं। चुरपुर बन्द हो जाती है। भक्ति मार्ग में बाहरमुखी बन पड़ते हैं। गीत गाना, यह करना, कितना हंगामा, कितना खर्चा होता है। कितने मेले लगते हैं। बाप कहते हैं यह सब छोड़ अन्तर्मुख हो जाओ। जैसेकि यह सृष्टि है नहीं। अपने को देखो हम लायक बने हैं? कोई विकार तो नहीं सताता है? हम बाप को याद करते हैं? बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं, ऐसे बाप को दिन-रात याद करना चाहिए। हम आत्मा हैं, हमारा वह बाप है। अन्दर में यह चलता रहे – हम अब नई दुनिया के फूल बन रहे हैं। अक का वा टांगर का फूल नहीं बनना है। हमको तो एकदम किंग ऑफ फ्लावर बिल्कुल खुशबूदार बनना है। कोई बदबू न रहे। बुरे ख्यालात निकल जाने चाहिए। माया के तूफान गिराने के लिए बहुत आयेंगे। कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना है। ऐसे-ऐसे अपने को पक्का करना है। अपने को सुधारना है। कोई भी देहधारी को मुझे याद नहीं करना है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो, शरीर निर्वाह अर्थ कर्म भी भल करो। उनसे भी टाइम निकाल सकते हो। भोजन खाने समय भी बाप की महिमा करते रहो। बाबा को याद कर खाने से भोजन भी पवित्र हो जाता है। जब बाप को निरन्तर याद करेंगे तब याद से ही बहुत जन्मों के पाप कटेंगे और तुम सतोप्रधान बनेंगे। देखना है कितना सच्चा सोना बना हूँ? आज कितना घण्टा याद में रहा? कल 3 घण्टा याद में रहा, आज 2 घण्टा रहा – यह तो आज घाटा हो गया। उतरना और चढ़ना होता रहेगा। यात्रा पर जाते हैं तो कहाँ ऊंचे, कहाँ नीचे होते हैं। तुम्हारी अवस्था भी नीचे-ऊपर होती रहेगी। अपना खाता देखना है। मुख्य है याद की यात्रा।

भगवानुवाच है तो जरूर बच्चों को ही पढ़ायेंगे। सारी दुनिया को कैसे पढ़ायेंगे। अब भगवान किसको कहा जाए? कृष्ण तो शरीरधारी है। भगवान तो निराकार परमपिता परमात्मा को कहा जाता है। खुद कहते हैं मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। ब्रह्मा का भी बुढ़ा तन गाया हुआ है। सफेद दाढ़ी मूँछ तो बुढ़े की होती है ना। चाहिए भी जरूर अनुभवी रथ। छोटे रथ में थोड़ेही प्रवेश करेंगे। खुद ही कहते हैं मुझे कोई जानते नहीं। वह है सुप्रीम गॉड फादर अथवा सुप्रीम सोल। तुम भी 100 परसेन्ट पवित्र थे। अभी 100 परसेन्ट अपवित्र बने हो। सतयुग में 100 परसेन्ट प्योरिटी थी तो पीस एण्ड प्रासपर्टी भी थी। मुख्य है प्योरिटी। देखते भी हो प्योरिटी वालों को इमप्योर माथा टेकते हैं, उनकी महिमा गाते हैं। संन्यासियों के आगे ऐसा कभी नहीं कहेंगे कि आप सर्वगुण सम्पन्न..... हम पापी नीच हैं। देवताओं के आगे ऐसे कहते हैं। बाबा ने समझाया है – कुमारी को सब माथा टेकते हैं फिर शादी करती है तो सबके आगे माथा टेकती है क्योंकि विकारी बनती है ना। अभी बाप कहते हैं तुम निर्विकारी बनेंगे तो आधाकल्प निर्विकारी हो रहेंगे। अभी 5 विकारों का राज्य ही खत्म होता है। यह है मृत्युलोक, वह है अमरलोक। अभी तुम आत्माओं को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है। बाप ही देते हैं। तिलक भी मस्तक पर देते हैं। अभी आत्मा को ज्ञान मिल रहा है, किसके लिए? तुम अपने को आपेही राजतिलक दो। जैसे बैरिस्टरी पढ़ते हैं तो पढ़कर अपने को आपेही बैरिस्टरी का तिलक देते हैं। पढ़ेंगे तो तिलक मिलेगा। आशीर्वाद से थोड़ेही मिलेगा। फिर तो सबके ऊपर टीचर कृपा करे, सब पास हो जाएं। बच्चों को अपने को आपेही राजतिलक देना है। बाप को याद करेंगे तो विकर्म विनाश होंगे और चक्र को याद करने से चक्रवर्ती महाराजा बन जायेंगे। बाप कहते हैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। देवी-देवतायें डबल सिरताज बनते हैं। पतित राजायें भी उन्हों की पूजा करते हैं। तुमको पुजारी राजाओं से भी ऊंच बनाते हैं। जो बहुत दान-पुण्य करते हैं तो राजाओं के पास जन्म लेते हैं क्योंकि कर्म अच्छे किये हैं। अभी यहाँ तुमको मिला है अविनाशी ज्ञान धन, वह धारण कर फिर दान करना है। यह सोर्स ऑफ इनकम है। टीचर भी पढ़ाई का दान करते हैं। वह पढ़ाई है अल्पकाल के लिए। विलायत से पढ़कर आते हैं, आने से ही हार्टफेल हो जाते हैं तो पढ़ाई खत्म। विनाशी हो गई ना। मेहनत सारी मुफ्त में गई। तुम्हारी मेहनत ऐसे नहीं जा सकती। तुम जितना अच्छा पढ़ेंगे उतना 21 जन्म तुम्हारी पढ़ाई कायम रहेगी। वहाँ अकाले मृत्यु होती ही नहीं। यह पढ़ाई साथ ले जायेंगे।

अब जैसे बाप कल्याणकारी है वैसे तुम बच्चों को भी कल्याणकारी बनना है। सबको रास्ता बताना है। बाबा तो राय बहुत अच्छी देते हैं। एक ही बात समझाओ कि सर्वश्रेष्ठ शिरोमणी श्रीमद् भगवत गीता की इतनी महिमा क्यों है? भगवान की ही श्रेष्ठ मत है। अब भगवान किसको कहा जाए? भगवान तो एक ही होता है। वह है निराकार, सब आत्माओं का बाप, इसलिए आपस में भाई-भाई कहते हैं फिर जब ब्रह्मा द्वारा नई सृष्टि रचते हैं तो बहन-भाई हो जाते हैं। इस समय तुम भाई-बहन हो तो पवित्र रहना पड़े। यह है युक्ति। क्रिमिनल आई एकदम निकल जाए। सम्भाल रखनी है, हमारी आंखें कहाँ मतवाली तो नहीं बनी? बजार में चने देख दिल तो नहीं हुई? ऐसे दिल बहुतों की होती है, फिर खा भी लेते हैं। ब्राह्मणी है, किसी भाई के साथ जाती है वह कहते हैं चना खायेंगी, एक बार खाने से पाप थोड़ेही लग जायेगा! जो कच्चे होते हैं वह झट खा लेते हैं। इस पर शास्त्रों में भी दृष्टान्त हैं। यह कहानियाँ बैठ बनाई हैं। बाकी हैं सब इस समय की बातें।

तुम सब सीतायें हो। तुमको बाप कहते हैं एक बाप को याद करो तो पाप कट जायेंगे। बाकी और कोई बातें हैं नहीं। अभी तुम समझते हो रावण कोई ऐसा मनुष्य नहीं है। यह तो विकारों की प्रवेशता हो जाती है तो रावण सम्प्रदाय कहा जाता है। जैसे कोई-कोई ऐसा काम करते हैं तो कहते हैं – तुम तो असुर हो। चलन आसुरी है। विकारी बच्चे को कहेंगे तुम कुल कलंकित बनते हो। यह फिर बेहद का बाप कहते हैं तुमको हम काले से गोरा बनाते हैं फिर काला मुँह करते हो। प्रतिज्ञा कर फिर विकारी बन पड़ते हो। काले से भी काला बन जाते हैं, इसलिए पत्थरबुद्धि कहा जाता है। फिर अब तुम पारसबुद्धि बनते हो। तुम्हारी चढ़ती कला होती है। बाप को पहचाना और विश्व का मालिक बनें। संशय की बात हो नहीं सकती। बाप है हेविनली गॉड फादर। तो जरूर हेविन सौगात में लायेंगे ना, बच्चों के लिए। शिव जयन्ती भी मनाते हैं – क्या करते होंगे? व्रत आदि रखते होंगे। वास्तव में व्रत रखना चाहिए विकारों का। विकार में नहीं जाना है। इनसे ही तुमने आदि-मध्य-अन्त दु:ख पाया है। अब यह एक जन्म पवित्र बनो। पुरानी दुनिया का विनाश सामने खड़ा है। तुम देखना भारत में 9 लाख जाकर रहेंगे, फिर शान्ति हो जायेगी। और धर्म ही नहीं रहेंगे जो ताली बजे। एक धर्म की स्थापना बाकी अनेक धर्म विनाश हो जायेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार :-

1) अविनाशी ज्ञान धन स्वयं में धारण कर फिर दान करना है। पढ़ाई से अपने आपको स्वयं ही राज तिलक देना है। जैसे बाप कल्याणकारी है वैसे कल्याणकारी बनना है।

2) खाने-पीने की पूरी-पूरी परहेज रखनी है। कभी भी आंखें धोखा न दें – यह सम्भाल करनी है। अपने को सुधारना है। कर्मेन्द्रियों से कोई भी विकर्म नहीं करना है।

वरदान:- मन्सा शक्ति के अनुभव द्वारा विशाल कार्य में सदा सहयोगी भव

प्रकृति को, तमोगुणी आत्माओं के वायब्रेशन को परिवर्तन करना तथा खूने नाहेक वायुमण्डल, वायब्रेशन में स्वयं को सेफ रखना, अन्य आत्माओं को सहयोग देना, नई सृष्टि में नई रचना का योगबल से प्रारम्भ करना–इन सब विशाल कार्यों के लिए मन्सा शक्ति की आवश्यकता है। मन्सा शक्ति द्वारा ही स्वयं की अन्त सुहानी होगी। मन्सा शक्ति अर्थात् श्रेष्ठ संकल्प शक्ति, एक के साथ लाइन क्लीयर - अभी इसके अनुभवी बनो तब बेहद के कार्य में सहयोगी बन बेहद विश्व के राज्य अधिकारी बनेंगे।

स्लोगन:- निर्भयता और नम्रता ही योगी व ज्ञानी आत्मा का स्वरूप है।

अव्यक्त इशारे – सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

परमात्म प्यार आनंदमय झूला है, इस सुखदाई झूले में झूलते सदा परमात्म प्यार में लवलीन रहो तो कभी कोई परिस्थिति वा माया की हलचल आ नहीं सकती। परमात्म-प्यार अखुट है, अटल है, इतना है जो सर्व को प्राप्त हो सकता है लेकिन परमात्म-प्यार प्राप्त करने की विधि है–न्यारा बनना। जितना न्यारा बनेंगे उतना परमात्म प्यार का अधिकार प्राप्त होगा।

''मीठे बच्चे – बाप आये हैं इस वेश्यालय को शिवालय बनाने। तुम्हारा कर्तव्य है – वेश्याओं को भी ईश्वरीय सन्देश दे उनका भी कल्याण करना''

प्रश्नः- कौन-से बच्चे अपना बहुत बड़ा नुकसान करते हैं?

उत्तरः- जो किसी भी कारण से मुरली (पढ़ाई) मिस करते हैं, वह अपना बहुत बड़ा नुकसान करते हैं। कई बच्चे तो आपस में रूठ जाने के कारण क्लास में ही नहीं आते। कोई न कोई बहाना बनाकर घर में ही सो जाते हैं, इससे वे अपना ही नुकसान करते हैं क्योंकि बाबा तो रोज़ कोई न कोई नई युक्तियाँ बताते रहते हैं, सुनेंगे ही नहीं तो अमल में कैसे लायेंगे।

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चे यह तो जानते हैं कि अभी हम विश्व के मालिक बनने के लिए पुरूषार्थ कर रहे हैं। भल माया भी भुला देती है। कोई-कोई को तो सारा दिन भुला देती है। कभी याद ही नहीं करते जो खुशी भी हो। हमको भगवान पढ़ाते हैं यह भी भूल जाते हैं। भूल जाने के कारण फिर कोई सर्विस नहीं कर सकते। रात को बाबा ने समझाया – अधम ते अधम जो वेश्यायें हैं उनकी सर्विस करनी चाहिए। वेश्याओं के लिए तुम एलान करो कि तुम बाप के इस ज्ञान को धारण करने से स्वर्ग के विश्व की महारानी बन सकती हो, साहूकार लोग नहीं बन सकते। जो जानते हैं, पढ़े लिखे हैं वह प्रबन्ध करेंगे, उन्हों को ज्ञान देने का, तो बिचारी बहुत खुश होंगी क्योंकि वह भी अबलायें हैं, उनको तुम समझा सकते हो। युक्तियाँ तो बहुत ही बाप समझाते रहते हैं। बोलो, तुम ही ऊंच ते ऊंच, नीच ते नीच बनी हो। तुम्हारे नाम से ही भारत वेश्यालय बना है। फिर तुम शिवालय में जा सकती हो – यह पुरूषार्थ करने से। तुम अभी पैसे के लिए कितना गंदा काम करती हो। अब यह छोड़ो। ऐसा समझाने से वह बहुत खुश होंगी। तुमको कोई रोक नहीं सकते। यह तो अच्छी बात है ना। गरीबों का है ही भगवान। पैसे के कारण बहुत गंदा काम करती हैं। उन्हों का जैसे धन्धा चलता है। अभी बच्चे कहते हैं हम युक्तियाँ निकालेंगे, सर्विस वृद्धि को कैसे पाये। कोई बच्चे कोई न कोई बात में रूठ भी पड़ते हैं। पढ़ाई भी छोड़ देते हैं। यह नहीं समझते कि हम नहीं पढ़ेंगे तो अपना ही नुकसान करेंगे। रूठकर बैठ जाते हैं। फलानी ने यह कहा, ऐसे कहा इसलिए आते नहीं। हफ्ते में एक बार मुश्किल आते हैं। बाबा तो मुरलियों में कभी क्या राय, कभी क्या राय देते रहते हैं। मुरली सुनना तो चाहिए ना। क्लास में जब आयेंगे तो सुनेंगे। ऐसे बहुत हैं, कारण-अकारणे बहाना बनाए सो जायेंगे। अच्छा, आज नहीं जाते हैं। अरे, बाबा ऐसी अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स सुनाते हैं। सर्विस करेंगे तो ऊंच पद भी पायेंगे। यह तो है पढ़ाई। बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी आदि में शास्त्र बहुत पढ़ते हैं। दूसरा कोई धन्धा नहीं होगा तो बस शास्त्र कण्ठ कर सतसंग शुरू कर देते हैं। उनमें उद्देश्य आदि तो कुछ है नहीं। इस पढ़ाई से तो सबका बेड़ा पार होता है। तो तुम बच्चों को ऐसे-ऐसे अधम की सर्विस करनी है। साहूकार लोग जब देखेंगे यहाँ ऐसे-ऐसे आते हैं तो उनके आने की दिल नहीं होगी। देह-अभिमान है ना। उनको लज्जा आयेगी। अच्छा, तो उनका एक अलग स्कूल खोल लो। वह पढ़ाई तो है पाई पैसे की, शरीर निर्वाह अर्थ। यह तो है 21 जन्मों के लिए। कितनों का कल्याण हो जायेगा। अक्सर करके मातायें भी पूछती हैं कि बाबा घर में गीता पाठशाला खोलें? उन्हों को ईश्वरीय सेवा का शौक रहता है। पुरूष लोग तो इधर-उधर क्लब आदि में घूमते रहते हैं। साहूकारों के लिये तो यहाँ ही स्वर्ग है। कितने फैशन आदि करते रहते हैं। लेकिन देवताओं की तो नैचुरल ब्युटी देखो कैसी है। कितना फ़र्क है। वैसे यहाँ तुमको सच सुनाया जाता है तो कितने थोड़े आते हैं। सो भी गरीब। उस तरफ झट चले जाते हैं। वहाँ भी श्रृंगार आदि करके जाते हैं। गुरू लोग सगाई भी कराते हैं। यहाँ किसकी सगाई कराई जाती है तो भी बचाने के लिए। काम चिता पर चढ़ने से बच जाए। ज्ञान चिता पर बैठ पद्म भाग्यशाली बन जाएं। माँ-बाप को कहते हैं यह बरबादी का धंधा छोड़ चलो स्वर्ग में। तो कहते हैं क्या करें, यह दुनिया वाले हमारे ऊपर बिगड़ेंगे कि कुल का नाम बदनाम करते हैं। शादी न कराना कायदे के बरखिलाफ है। लोक लाज, कुल की मर्यादा छोड़ते नहीं हैं। भक्ति मार्ग में गाते हैं – मेरा तो एक, दूसरा न कोई। मीरा के भी गीत हैं। फीमेल्स में नम्बरवन भक्तिन मीरा, मेल्स में नारद गाया हुआ है। नारद की भी कहानी है ना। तुमको कोई नया आदमी कहे – मैं लक्ष्मी को वर सकता हूँ। तो बोलो, अपने को देखो लायक हो? पवित्र सर्वगुण सम्पन्न... हो? यह तो विकारी पतित दुनिया है। बाप आये हैं उनसे निकाल पावन बनाने।

पावन बनो तब तो लक्ष्मी को वरने के लायक बन सकेंगे। यहाँ बाबा के पास आते हैं, प्रतिज्ञा करते फिर घर में जाकर विकार में गिरते हैं। ऐसे-ऐसे समाचार आते हैं। बाबा कहते हैं ऐसे-ऐसे को जो ब्राह्मणी ले आती है उनके ऊपर भी असर पड़ जाता है। इन्द्र सभा की कहानी भी है ना। तो ले आने वाले पर भी दण्ड पड़ जाता है। बाबा ब्राह्मणियों को हमेशा कहते हैं कच्चे-कच्चे को मत ले आओ। तुम्हारी अवस्था भी गिर पड़ेगी क्योंकि बेकायदे ले आये। वास्तव में ब्राह्मणी बनना है बहुत सहज। 10-15 दिन में बन सकती है। बाबा किसको भी समझाने की बहुत सहज युक्ति बताते हैं। तुम भारतवासी आदि सनातन देवी-देवता धर्म के थे, स्वर्गवासी थे। अब नर्कवासी हो फिर स्वर्गवासी बनना है तो यह विकार छोड़ो। सिर्फ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जाएं। कितना सहज है। परन्तु कोई बिल्कुल समझते नहीं हैं। खुद ही नहीं समझते तो औरों को क्या समझायेंगे। वानप्रस्थ अवस्था में भी मोह की रग जाती रहती है। आजकल वानप्रस्थ अवस्था में इतने नहीं जाते हैं। तमोप्रधान हैं ना। यहाँ ही फंसे रहते हैं। आगे वानप्रस्थियों के बड़े-बड़े आश्रम थे। आजकल इतने नहीं हैं। 80-90 वर्ष के हो जाते तो भी घर को नहीं छोड़ते। समझते ही नहीं कि वाणी से परे जाना है। अब ईश्वर को याद करना है। भगवान कौन है, यह सब नहीं जानते। सर्वव्यापी कह देते तो याद किसको करें। यह भी नहीं समझते कि हम पुजारी हैं। बाप तो तुमको पुजारी से पूज्य बनाते हैं सो भी 21 जन्मों के लिए। इसके लिए पुरूषार्थ तो करना पड़ेगा।

बाबा ने समझाया है यह पुरानी दुनिया तो खत्म होनी है। अभी हमको जाना है घर – बस यही तात रहे। वहाँ क्रिमिनल बात होती ही नहीं। बाप आकर उस पवित्र दुनिया के लिए तैयारी कराते हैं। सर्विसएबुल लाडले बच्चों को तो नयनों पर बिठाकर ले जाते हैं। तो अधमों का उद्धार करने के लिए बहादुरी चाहिए, उस गवर्मेन्ट में तो बड़े-बड़े झुण्ड होते हैं। टिपटॉप हो जाते हैं पढ़े-लिखे। यहाँ तो कई गरीब साधारण हैं। उनको बाप बैठ इतना ऊंच उठाते हैं। चलन भी बड़ी रॉयल चाहिए। भगवान पढ़ाते हैं। उस पढ़ाई में कोई बड़ा इम्तहान पास करते हैं तो कितना टिपटॉप हो जाते हैं। यहाँ तो बाप गरीब निवाज़ हैं। गरीब ही कुछ-न-कुछ भेज देते हैं। एक-दो रूपये का भी मनीऑर्डर भेज देते हैं। बाप कहते हैं तुम तो महान् भाग्यशाली हो। रिटर्न में बहुत मिल जाता है। यह भी कोई नई बात नहीं। साक्षी हो ड्रामा देखते हैं। बाप कहते हैं बच्चे अच्छी रीति पढ़ो। यह ईश्वरीय यज्ञ है जो चाहे सो लो। लेकिन यहाँ लेंगे तो वहाँ कम हो जायेगा। स्वर्ग में तो सब कुछ मिलना है। बाबा को तो सर्विस में बड़े फुर्त बच्चे चाहिए। सुदेश जैसी, मोहिनी जैसी, जिनको सर्विस का उमंग हो। तुम्हारा नाम बहुत बाला हो जायेगा। फिर तुमको बहुत मान देंगे। बाबा सब डायरेक्शन देते रहते हैं। बाबा तो कहते हैं यहाँ बच्चों को जितना समय मिले, याद में रहो। इम्तहान के दिन नज़दीक होते हैं तो एकान्त में जाकर पढ़ते हैं। प्राइवेट टीचर भी रखते हैं। हमारे पास टीचर तो बहुत हैं, सिर्फ पढ़ने का शौक चाहिए। बाप तो बहुत सहज समझाते हैं। सिर्फ अपने को आत्मा निश्चय करो। यह शरीर तो विनाशी है। तुम आत्मा अविनाशी हो। यह ज्ञान एक ही बार मिलता है फिर सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक किसको मिलता ही नहीं। तुमको ही मिलता है। हम आत्मा हैं यह तो पक्का निश्चय कर लो। बाप से हमको वर्सा मिलता है। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। बस। यह अन्दर रटते रहें तो भी बहुत कल्याण हो सकता है। परन्तु चार्ट रखते ही नहीं। लिखते-लिखते फिर थक जाते हैं। बाबा बहुत सहज कर बतलाते हैं। हम आत्मा सतोप्रधान थी, अब तमोप्रधान बनी हूँ। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे। कितना सहज है फिर भी भूल जाते हैं। जितना समय बैठो अपने को आत्मा समझो। मैं आत्मा बाबा का बच्चा हूँ। बाप को याद करने से स्वर्ग की बादशाही मिलेगी। बाप को याद करने से आधाकल्प के पाप भस्म हो जायेंगे। कितना सहज युक्ति बतलाते हैं। सब बच्चे सुन रहे हैं। यह बाबा खुद भी प्रैक्टिस करते हैं तब तो सिखाते हैं ना। मैं बाबा का रथ हूँ, बाबा मुझे खिलाते हैं। तुम बच्चे भी ऐसे समझो। शिवबाबा को याद करते रहो तो कितना फायदा हो जाए। परन्तु भूल जाते हैं। बहुत सहज है। धन्धे में कोई ग्राहक नहीं है तो याद में बैठ जाओ। मैं आत्मा हूँ, बाबा को याद करना है। बीमारी में भी याद कर सकते हो। बांधेली हो तो वहाँ बैठ तुम याद करती रहो तो 10-20 वर्ष वालों से भी ऊंच पद पा सकती हो। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) सर्विस में बहुत-बहुत फुर्त बनना है। जितना समय मिले एकान्त में बैठ बाप को याद करना है। पढ़ाई का शौक रखना है। पढ़ाई से रूठना नहीं है।

2) अपनी चलन बहुत-बहुत रॉयल रखनी है, बस अब घर जाना है, पुरानी दुनिया खत्म होनी है इसलिए मोह की रगें तोड़ देनी हैं। वानप्रस्थ (वाणी से परे) अवस्था में रहने का अभ्यास करना है। अधमों का भी उद्धार करने की सेवा करनी है।

वरदान:- श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा वृत्तियों का परिवर्तन करने वाले सदा सिद्धि स्वरूप भव

सिद्धि स्वरूप बनने के लिए वृत्ति द्वारा वृत्तियों को, संकल्प द्वारा संकल्पों को परिवर्तन करने का कार्य करो, इसकी रिसर्च करो। जब इस सेवा में बिजी हो जायेंगे तो यह सूक्ष्म सेवा स्वत:कई कमजोरियों से पार कर देगी। अभी इसका प्लैन बनाओ तो जिज्ञासू भी ज्यादा बढ़ेंगे, मदोगरी भी बहुत बढ़ेगी, मकान भी मिल जायेंगे–सब सिद्धियां सहज हो जायेंगी। यह विद्धि-सिद्धि स्वरूप बना देगी।

स्लोगन:- समय को सफल करते रहो तो समय के धोखे से बच जायेंगे।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

बाप का बच्चों से इतना प्यार है जो रोज़ प्यार का रेसपान्ड देने के लिए इतना बड़ा पत्र लिखते हैं। यादप्यार देते हैं और साथी बन सदा साथ निभाते हैं, तो इस प्यार में अपनी सब कमजोरियां कुर्बान कर दो। परमात्म प्यार में ऐसे समाये रहो जो कभी हद का प्रभाव अपनी ओर आकर्षित न कर सके। सदा बेहद की प्राप्तियों में मगन रहो जिससे रूहानियत की खुशबू वातावरण में फैल जाए।

विशेष सूचना

बाबा की श्रीमत अनुसार, मुरली केवल बाबा के बच्चों के लिए हैं, न कि उन आत्माओं के लिए जिन्होंने राजयोग का कोर्स भी नहीं किया है। इसलिए सभी निमित्त टीचर्स एवं भाई बहनों से विनम्र निवेदन है कि साकार मुरली की ऑडियो या वीडियो को यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम या किसी भी व्हाट्सएप ग्रुप पर पोस्ट न करें।

''मीठे बच्चे – जितना समय मिले एकान्त में जाकर याद की यात्रा करो, जब तुम मंजिल पर पहुँच जायेंगे तब यह यात्रा पूरी हो जायेगी''

प्रश्नः- संगम पर बाप अपने बच्चों में कौन-सा ऐसा गुण भर देते हैं, जो आधाकल्प तक चलता रहता है?

उत्तरः- बाप कहते – जैसे मैं अति स्वीट हूँ, ऐसे बच्चों को भी स्वीट बना देता हूँ। देवतायें बहुत स्वीट हैं। तुम बच्चे अभी स्वीट बनने का पुरूषार्थ कर रहे हो। जो बहुतों का कल्याण करते हैं, जिनमें कोई शैतानी ख्यालात नहीं हैं, वही स्वीट हैं। उन्हें ही ऊंच पद प्राप्त होता है। उनकी ही फिर पूजा होती है।

ओम् शान्ति। बाप बैठ समझाते हैं इस शरीर का मालिक है आत्मा। यह पहले समझना चाहिए क्योंकि अभी बच्चों को ज्ञान मिला है। पहले-पहले तो समझना है हम आत्मा हैं। शरीर से आत्मा काम लेती है, पार्ट बजाती है। ऐसे-ऐसे ख्यालात और कोई मनुष्य को आते नहीं क्योंकि देह-अभिमान में हैं। यहाँ इस ख्याल में बिठाया जाता है – मैं आत्मा हूँ। यह मेरा शरीर है। मैं आत्मा परमपिता परमात्मा की सन्तान हूँ। यह याद ही घड़ी-घड़ी भूल जाती है। यह पहले पूरी याद करनी चाहिए। यात्रा पर जब जाते हैं तो कहते हैं चलते रहो। तुमको भी याद की यात्रा पर चलते रहना है, यानी याद करना है। याद नहीं करते, गोया यात्रा पर नहीं चलते। देह-अभिमान आता है। देह-अभिमान से कुछ न कुछ विकर्म बन जाता है। ऐसे भी नहीं मनुष्य सदैव विकर्म करते हैं। फिर भी कमाई तो बन्द हो जाती है ना इसलिए जितना हो सके याद की यात्रा में ढीला नहीं पड़ना चाहिए। एकान्त में बैठ अपने साथ विचार सागर मंथन कर प्वाइंट्स निकालनी होती हैं। कितना समय बाबा की याद में रहते हैं, मीठी चीज़ की याद पड़ती है ना।

बच्चों को समझाया है, इस समय सभी मनुष्य मात्र एक-दो को नुकसान ही पहुंचाते हैं। सिर्फ टीचर की महिमा बाबा करते हैं, उनमें कोई-कोई टीचर खराब होते हैं, नहीं तो टीचर माना टीच करने वाला, मैनर्स सिखलाने वाला। जो रिलीजस माइन्डेड, अच्छे स्वभाव के होते हैं, उनकी चलन भी अच्छी होती है। बाप अगर शराब आदि पीते हैं तो बच्चों को भी वह संग लग जाता है। इसको कहेंगे खराब संग क्योंकि रावण राज्य है ना। रामराज्य था जरूर परन्तु वह कैसे था, कैसे स्थापन हुआ, यह वन्डरफुल मीठी बातें तुम बच्चे ही जानते हो। स्वीट, स्वीटर, स्वीटेस्ट कहा जाता है ना। बाप की याद में रहकर ही तुम पवित्र बन और पवित्र बनाते हो। बाप नई सृष्टि में नहीं आते हैं। सृष्टि में मनुष्य, जानवर, खेती-बाड़ी आदि सब होता है। मनुष्य के लिए सब कुछ चाहिए ना। शास्त्रों में प्रलय का वृतान्त भी रांग है। प्रलय होती ही नहीं। यह सृष्टि का चक्र फिरता ही रहता है। बच्चों को आदि से अन्त तक ख्याल में रखना है। मनुष्यों को तो अनेक प्रकार के चित्र याद आते हैं। मेले मलाखड़े याद आते हैं। वह सभी हैं हद के, तुम्हारी है बेहद की याद, बेहद की खुशी, बेहद का धन। बेहद का बाप है ना। हद के बाप से सब हद का मिलता है। बेहद के बाप से बेहद का सुख मिलता है। सुख होता ही है धन से। धन तो वहाँ अपार है। सब कुछ सतोप्रधान है वहाँ। तुम्हारी बुद्धि में है, हम सतोप्रधान थे फिर बनना है। यह भी तुम अभी जानते हो, तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं - स्वीट, स्वीटर, स्वीटेस्ट हैं ना। बाबा से भी स्वीट होने वाले हैं। वही ऊंच पद पायेंगे। स्वीटेस्ट वह हैं जो बहुतों का कल्याण करते हैं। बाप भी स्वीटेस्ट है ना, तब तो सब उनको याद करते हैं। कोई शहद या चीनी को ही स्वीटेस्ट नहीं कहा जाता। यह मनुष्य की चलन पर कहा जाता है। कहते हैं ना यह स्वीट चाइल्ड (मीठा बच्चा) है। सतयुग में कोई भी शैतानी बात नहीं होती। इतना ऊंच पद जो पाते हैं, जरूर यहाँ पुरूषार्थ किया है।

तुम अभी नई दुनिया को जानते हो। तुम्हारे लिए तो जैसे कल नई दुनिया सुखधाम होगी। मनुष्यों को पता ही नहीं – शान्ति कब थी। कहते हैं विश्व में शान्ति हो। तुम बच्चे जानते हो – विश्व में शान्ति थी जो अभी फिर स्थापन कर रहे हो। अब यह सभी को समझायें कैसे? ऐसी-ऐसी प्वाइंट्स निकालनी चाहिए, जिसकी बहुत चाहना है मनुष्यों को। विश्व में शान्ति हो, इसके लिए रड़ी मारते रहते हैं क्योंकि अशान्ति बहुत है। यह लक्ष्मी-नारायण का चित्र सामने देना है। इनका जब राज्य था तो विश्व में शान्ति थी, उनको ही हेविन डीटी वर्ल्ड कहते हैं। वहाँ विश्व में शान्ति थी। आज से 5 हज़ार वर्ष पहले की बातें और कोई नहीं जानते। यह है मुख्य बात। सब आत्मायें मिलकर कहती हैं विश्व में शान्ति कैसे हो? सभी आत्मायें पुकारती हैं, तुम यहाँ विश्व में शान्ति स्थापन करने का पुरूषार्थ कर रहे हो। जो विश्व में शान्ति चाहते हैं उन्हें तुम सुनाओ कि भारत

में ही शान्ति थी। जब भारत स्वर्ग था तो शान्ति थी, अब नर्क है। नर्क (कलियुग) में अशान्ति है क्योंकि धर्म अनेक हैं, माया का राज्य है। भक्ति का भी पाम्प है। दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती जाती है। मनुष्य भी मेले मलाखड़े आदि पर जाते हैं, समझते हैं जरूर कुछ सच होगा। अभी तुम समझते हो उनसे कोई पावन नहीं बन सकते हैं। पावन बनने का रास्ता मनुष्य कोई बता न सकें। पतित-पावन एक ही बाप है। दुनिया एक ही है, सिर्फ नई और पुरानी कहा जाता है। नई दुनिया में नया भारत, नई देहली कहते हैं। नई होनी है, जिसमें फिर नया राज्य होगा। यहाँ पुरानी दुनिया में पुराना राज्य है। पुरानी और नई दुनिया किसको कहा जाता है, यह भी तुम जानते हो। भक्ति का कितना बड़ा प्रस्ताव है। इसको कहा जाता है अज्ञान। ज्ञान सागर एक बाप है। बाप तुमको ऐसे नहीं कहते कि राम-राम कहो वा कुछ करो। नहीं, बच्चों को समझाया जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है। यह एज्युकेशन तुम पढ़ रहे हो। इसका नाम ही है रूहानी एज्युकेशन। स्प्रीचुअल नॉलेज। इनका अर्थ भी कोई नहीं जानते। ज्ञान सागर तो एक ही बाप को कहा जाता है। वह है – स्प्रीचुअल नॉलेजफुल फादर। बाप रूहों से बात करते हैं। तुम बच्चे समझते हो रूहानी बाप पढ़ाते हैं। यह है स्प्रीचुअल नॉलेज। रूहानी नॉलेज को ही स्प्रीचुअल नॉलेज कहा जाता है।

तुम बच्चे जानते हो परमपिता परमात्मा बिन्दी है, वह हमको पढ़ाते हैं। हम आत्मायें पढ़ रही हैं। यह भूलना नहीं चाहिए। हम आत्मा को जो नॉलेज मिलती है, फिर हम दूसरी आत्माओं को देते हैं। यह याद तब ठहरेगी जब अपने को आत्मा समझ बाप की याद में रहेंगे। याद में बहुत कच्चे हैं, झट देह-अभिमान आ जाता है। देही-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस करनी है। हम आत्मा इनको सौदा देते हैं। हम आत्मा व्यापार करते हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने में ही फायदा है। आत्मा को ज्ञान है हम यात्रा पर हैं। कर्म तो करना ही है। बच्चों आदि को भी सम्भालना है। धंधा धोरी भी करना है। धन्धे आदि में याद रहे हम आत्मा हैं, यह बड़ा मुश्किल है। बाप कहते हैं कोई भी उल्टा काम कभी नहीं करना। सबसे बड़ा पाप है विकार का। वही बड़ा तंग करने वाला है। अभी तुम बच्चे पावन बनने की प्रतिज्ञा करते हो। उसका ही यादगार यह राखी बंधन है। आगे तो पाई पैसे की राखी मिलती थी। ब्राह्मण लोग जाकर राखी बांधते थे। आजकल तो राखी भी कितनी फेशनेबुल बनाते हैं। वास्तव में है अभी की बात। तुम बाप से प्रतिज्ञा करते हो – हम कभी विकार में नहीं जायेंगे। आप से विश्व के मालिक बनने का वर्सा लेंगे। बाप कहेंगे 63 जन्म तो विषय वैतरणी नदी में गोते खाये अब तुमको क्षीर सागर में ले चलते हैं। सागर कोई है नहीं। भेंट में कहा जाता है। तुमको शिवालय में ले जाते हैं। वहाँ अथाह सुख है। अभी यह अन्तिम जन्म है, हे आत्मायें पवित्र बनो। क्या बाप का कहना नहीं मानेंगे। ईश्वर तुम्हारा बाप कहते हैं मीठे बच्चे विकार में नहीं जाओ। जन्म-जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं, वह मुझे याद करने से ही भस्म होंगे। कल्प पहले भी तुमको शिक्षा दी थी। बाप गैरन्टी तब करते हैं जब तुम यह गैरन्टी करते हो कि बाबा हम आपको याद करते रहेंगे। इतना याद करते रहो जो शरीर का भान न रहे। संन्यासियों में भी कोई-कोई तीखे बहुत पक्के ब्रह्म ज्ञानी होते हैं, वह भी ऐसे बैठे-बैठे शरीर छोड़ते हैं। यहाँ तुमको तो बाप समझाते हैं, पावन बनकर जाना है। वह तो अपनी मत पर चलते हैं। ऐसे नहीं कि वह शरीर छोड़कर कोई मुक्ति-जीवनमुक्ति में जाते हैं। नहीं। आते फिर भी यहाँ ही हैं परन्तु उनके फालोअर्स समझते हैं कि वह निर्वाण गया। बाप समझाते हैं – एक भी वापिस नहीं जा सकता, कायदा ही नहीं। झाड़ वृद्धि को जरूर पाना है।

अभी तुम संगमयुग पर बैठे हो, और सब मनुष्य हैं कलियुग में। तुम दैवी सम्प्रदाय बन रहे हो। जो तुम्हारे धर्म के होंगे वह आते जायेंगे। देवी-देवताओं का भी वहाँ सिजरा है ना। यहाँ बदली होकर और धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं, फिर निकल आयेंगे। नहीं तो वहाँ जगह कौन भरेंगे। जरूर वह अपनी जगह भरने फिर आ जायेंगे। यह बहुत महीन बातें हैं। बहुत अच्छे-अच्छे भी आयेंगे जो दूसरे धर्म में कनवर्ट हो गये हैं तो फिर अपनी जगह पर आ जायेंगे। तुम्हारे पास मुसलमान आदि भी आते हैं ना। बड़ी खबरदारी रखनी पड़ती है, झट जांच करेंगे, यहाँ दूसरे धर्म वाले कैसे जाते हैं? इमरजेन्सी में तो बहुतों को पकड़ते हैं फिर पैसे मिलने से छोड़ भी देते हैं। जो कल्प पहले हुआ है, तुम अभी देख रहे हो। कल्प आगे भी ऐसा हुआ था। तुम अभी मनुष्य से देवता उत्तम पुरूष बनते हो। यह है सर्वोत्तम ब्राह्मणों का कुल। इस समय बाप और बच्चे रूहानी सेवा पर हैं। कोई गरीब को धनवान बनाना – यह रूहानी सेवा है। बाप कल्याण करते हैं तो बच्चों को भी मदद करनी चाहिए। जो बहुतों को रास्ता बताते हैं वह बहुत ऊंच चढ़ सकते हैं। तुम बच्चों को पुरूषार्थ करना है लेकिन चिंता

नहीं, क्योंकि तुम्हारी रेसपान्सिबिलिटी बाप के ऊपर है। पुरूषार्थ जोर से कराया जाता है फिर जो फल निकलता है, समझा जाता है कल्प पहले मिसल। बाप बच्चों को कहते हैं – बच्चे, फिक्र मत करो। सेवा में मेहनत करो। नहीं बनते तो क्या करेंगे! इस कुल का नहीं होगा तो तुम भल कितना भी माथा मारो, कोई कम तुम्हारा माथा खपायेंगे, कोई जास्ती। बाबा ने कहा है जब दु:ख बहुत आता जायेगा तो फिर आयेंगे। तुम्हारा व्यर्थ कुछ नहीं जायेगा। तुम्हारा काम है राइट बताना। शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। ऐसे बहुत कहते हैं भगवान जरूर है। महाभारत लड़ाई के समय भगवान था। सिर्फ कौन-सा भगवान था, उसमें मूँझ गये हैं। श्रीकृष्ण तो हो न सके। श्रीकृष्ण उसी फीचर्स से फिर सतयुग में ही होगा। हर जन्म में फीचर्स बदलते जाते हैं। सृष्टि अब बदल रही है। पुराने को नया अब भगवान कैसे बनाते हैं, वह भी कोई नहीं जानते। तुम्हारा आखिर नाम निकलेगा। स्थापना हो रही है फिर यह राज्य करेंगे, विनाश भी होगा। एक तरफ नई दुनिया, एक तरफ पुरानी दुनिया – यह चित्र बड़ा अच्छा है। कहते भी हैं ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश.... परन्तु समझते कुछ नहीं। मुख्य चित्र है त्रिमूर्ति का। ऊंच ते ऊंच है शिवबाबा। तुम जानते हो – शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा हमको याद की यात्रा सिखला रहे हैं। बाबा को याद करो, योग अक्षर डिफीकल्ट लगता है। याद अक्षर बहुत सहज है। बाबा अक्षर बहुत लवली है। तुमको खुद ही लज्जा आयेगी – हम आत्मायें बाप को याद नहीं कर सकती हैं, जिनसे विश्व की बादशाही मिलती है! आपेही लज्जा आयेगी। बाप भी कहेंगे तुम तो बेसमझ हो, बाप को याद नहीं कर सकते हो तो वर्सा कैसे पायेंगे! विकर्म विनाश कैसे होंगे! तुम आत्मा हो मैं तुम्हारा परमपिता परमात्मा अविनाशी हूँ ना। तुम चाहते हो हम पावन बन सुखधाम में जायें तो श्रीमत पर चलो। मुझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश कैसे होंगे! अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) हर प्रकार से पुरूषार्थ करना है, फिक्र (चिंता) नहीं क्योंकि हमारा रेसपान्सिबुल स्वयं बाप है। हमारा कुछ भी व्यर्थ नहीं जा सकता।

2 बाप समान बहुत-बहुत स्वीट बनना है। अनेकों का कल्याण करना है। इस अन्तिम जन्म में पवित्र जरूर बनना है। धंधा आदि करते अभ्यास करना है कि मैं आत्मा हूँ।

वरदान:- प्रवृत्ति के विस्तार में रहते फरिश्ते पन का साक्षात्कार कराने वाले साक्षात्कार मूर्त भव

प्रवृत्ति का विस्तार होते हुए भी विस्तार को समेटने और उपराम रहने का अभ्यास करो। अभी-अभी स्थूल कार्य कर रहे हैं, अभी-अभी अशरीरी हो गये–यह अभ्यास फरिश्ते पन का साक्षात्कार करायेगा। ऊंची स्थिति में रहने से छोटी-छोटी बातें व्यक्त भाव की अनुभव होंगी। ऊंचा जाने से नीचापन आपेही छूट जायेगा। मेहनत से बच जायेंगे। समय भी बचेगा, सेवा भी फास्ट होगी। बुद्धि इतनी विशाल हो जायेगी जो एक समय पर कई कार्य कर सकती है।

स्लोगन:- खुशी को कायम रखने के लिए आत्मा रूपी दीपक में ज्ञान का घृत रोज़ डालते रहो।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

बच्चों से बाप का प्यार है इसलिए सदा कहते हैं बच्चे जो हो, जैसे हो–मेरे हो। ऐसे आप भी सदा प्यार में लवलीन रहो, दिल से कहो बाबा जो हो वह सब आप ही हो। कभी असत्य के राज्य के प्रभाव में नहीं आओ। श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींचने का कलम बाप ने आप बच्चों के हाथ में दी है, आप जितना चाहे उतना भाग्य बना सकते हो।

विशेष सूचना

बाबा की श्रीमत अनुसार, मुरली केवल बाबा के बच्चों के लिए हैं, न कि उन आत्माओं के लिए जिन्होंने राजयोग का कोर्स भी नहीं किया है। इसलिए सभी निमित्त टीचर्स एवं भाई बहनों से विनम्र निवेदन है कि साकार मुरली की ऑडियो या वीडियो को यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम या किसी भी व्हाट्सएप ग्रुप पर पोस्ट न करें।

''मीठे बच्चे – अविनाशी ज्ञान रत्न धारण कर अब तुम्हें फकीर से अमीर बनना है, तुम आत्मा हो रूप-बसन्त''

प्रश्नः- कौन-सी शुभ भावना रख पुरूषार्थ में सदा तत्पर रहना है?

उत्तरः- सदा यही शुभ भावना रखनी है कि हम आत्मा सतोप्रधान थी, हमने ही बाप से शक्ति का वर्सा लिया था अब फिर से ले रहे हैं। इसी शुभ भावना से पुरुषार्थ कर सतोप्रधान बनना है। ऐसे नहीं सोचना कि सब सतोप्रधान थोड़ेही बनेंगे। नहीं, याद की यात्रा पर रहने का पुरूषार्थ करते रहना है, सर्विस से ताकत लेनी है।

गीतः- इस पाप की दुनिया से.....

ओम् शान्ति। यह है पढ़ाई। हर एक बात समझनी है और जो भी सतसंग आदि हैं, वह सब हैं भक्ति के। भक्ति करते-करते बेगर बन गये हैं। वह बेगर्स फकीर और हैं, तुम और किसम के बेगर्स हो। तुम अमीर थे, अभी फकीर बने हो। यह किसको भी पता नहीं कि हम अमीर थे, तुम ब्राह्मण जानते हो – हम विश्व के मालिक अमीर थे। अमीरचन्द से फकीरचन्द बने हैं। अब यह है पढ़ाई, जिसको अच्छी रीति पढ़ना है, धारण करना है और धारण कराने की कोशिश करनी है। अविनाशी ज्ञान रत्न धारण करने हैं। आत्मा रूप बसन्त है ना। आत्मा ही धारण करती है, शरीर तो विनाशी है। काम की जो चीज़ नहीं होती है, उनको जलाया जाता है। शरीर भी काम का नहीं रहता है तो उनको आग में जलाते हैं। आत्मा को तो नहीं जलाते। हम आत्मा हैं, जबसे रावण राज्य हुआ है तो मनुष्य देह-अभिमान में आ गये हैं। मैं शरीर हूँ, यह पक्का हो जाता है। आत्मा तो अमर है। अमरनाथ बाप आकर आत्माओं को अमर बनाते हैं। वहाँ तो अपने समय पर अपनी मर्जी से एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं क्योंकि आत्मा मालिक है। जब चाहे शरीर छोड़े। वहाँ शरीर की आयु बड़ी होती है। सर्प का मिसाल है। अभी तुम जानते हो यह तुम्हारे बहुत जन्मों के अन्त के जन्म की पुरानी खाल है। 84 जन्म पूरे लिए हैं। कोई के 60-70 जन्म भी हैं, कोई के 50 हैं, त्रेता में जरूर आयु कुछ न कुछ कम हो जाती है। सतयुग में फुल आयु होती है। अब पुरूषार्थ करना है कि हम पहले-पहले सतयुग में आयें। वहाँ ताकत रहती है तो अकाले मृत्यु नहीं होती। ताकत कम होती है तो फिर आयु भी कम हो जाती है। अब जैसे बाप सर्व शक्तिमान् है, तुम्हारी आत्मा को भी शक्तिवान बनाते हैं। एक तो पवित्र बनना है और याद में रहना है तब शक्ति मिलती है। बाप से शक्ति का वर्सा लेते हो। पाप आत्मा तो शक्ति ले न सके। पुण्य आत्मा बनते हैं तो शक्ति मिलती है। यह ख्याल करो – हमारी आत्मा सतोप्रधान थी। हमेशा शुभ भावना रखनी चाहिए। ऐसे नहीं कि सब थोड़ेही सतोप्रधान होंगे। कोई तो सतो भी होंगे ना। नहीं, अपने को समझना चाहिए हम पहले-पहले सतोप्रधान थे। निश्चय से ही सतोप्रधान बनेंगे। ऐसे नहीं कि हम कैसे सतोप्रधान बन सकेंगे। फिर खिसक जाते हैं। याद की यात्रा पर नहीं रहते। जितना हो सके पुरूषार्थ करना चाहिए। अपने को आत्मा समझ सतोप्रधान बनना है। इस समय सब मनुष्य मात्र तमोप्रधान हैं। तुम्हारी आत्मा भी तमोप्रधान है। आत्मा को अब सतोप्रधान बनाना है बाप की याद से। साथ-साथ सर्विस भी करेंगे तो ताकत मिलेगी। समझो कोई सेन्टर खोलते हैं तो बहुतों की आशीर्वाद उन्हों के सिर पर आयेगी। मनुष्य धर्मशाला बनाते हैं कि कोई भी आए विश्राम पाये। आत्मा खुश होगी ना। रहने वालों को आराम मिलता है तो उसका आशीर्वाद बनाने वाले को मिलता है। फिर परिणाम क्या होगा? दूसरे जन्म में वह सुखी रहेगा। मकान अच्छा मिलेगा। मकान का सुख मिलेगा। ऐसे नहीं कि कभी बीमार नहीं होंगे। सिर्फ मकान अच्छा मिलेगा। हॉस्पिटल खोली होगी तो तन्दुरुस्ती अच्छी रहेगी। युनिवर्सिटी खोली होगी तो पढ़ाई अच्छी रहेगी। स्वर्ग में तो यह हॉस्पिटल आदि होती नहीं। यहाँ तुम पुरूषार्थ से 21 जन्मों के लिए प्रालब्ध बनाते हो। बाकी वहाँ हॉस्पिटल, कोर्ट, पुलिस आदि कुछ नहीं होगा। अभी तुम चलते हो सुखधाम में। वहाँ वजीर भी होता नहीं। ऊंच ते ऊंच खुद महाराजा-महारानी, वह वजीर की राय थोड़ेही लेंगे। राय तब मिलती है जब बेअक्ल बनते हैं, जब विकारों में गिरते हैं। रावण राज्य में बिल्कुल ही बेअक्ल तुच्छ बुद्धि बन जाते हैं इसलिए विनाश का रास्ता ढूँढते रहते हैं। खुद समझते हैं हम विश्व को बहुत ऊंच बनाते हैं परन्तु यह और ही नीचे गिरते जाते हैं। अब विनाश सामने खड़ा है।

तुम बच्चे जानते हो हमको घर जाना है। हम भारत की सेवा कर दैवी राज्य स्थापन करते हैं। फिर हम राज्य करेंगे। गाया भी जाता है फालो फादर। फादर शोज़ सन, सन शोज़ फादर। बच्चे जानते हैं – इस समय शिवबाबा ब्रह्मा के तन में आकर हमको पढ़ाते हैं। समझाना भी ऐसे है। हम ब्रह्मा को भगवान वा देवता आदि नहीं मानते। यह तो पतित थे, बाप ने पतित शरीर में प्रवेश किया है। झाड़ में देखो ऊपर चोटी में खड़ा है ना। पतित हैं फिर नीचे पावन बनने के लिए तपस्या कर फिर देवता बनते हैं। तपस्या करने वाले हैं ब्राह्मण। तुम ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ सब राजयोग सीख रहे हो। कितना क्लीयर है। इसमें योग बड़ा अच्छा चाहिए। याद में नहीं रहेंगे तो मुरली में भी वह ताकत नहीं रहेगी। ताकत मिलती है शिवबाबा की याद में। याद से ही सतोप्रधान बनेंगे, नहीं तो सज़ायें खाकर फिर कम पद पा लेंगे। मूल बात है याद की, जिसको ही भारत का प्राचीन योग कहा जाता है। नॉलेज का किसको पता नहीं है। आगे के ऋषि-मुनि कहते थे – रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को हम नहीं जानते। तुम भी आगे कुछ नहीं जानते थे। इन 5 विकारों ने ही तुमको बिल्कुल वर्थ नाट ए पेनी बनाया है। अभी यह पुरानी दुनिया जलकर बिल्कुल खत्म हो जानी है। कुछ भी रहने का नहीं है। तुम सब नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार भारत को स्वर्ग बनाने की तन-मन-धन से सेवा करते हो। प्रदर्शनी में भी तुमसे पूछते हैं तो बोलो हम बी.के. अपने ही तन-मन-धन से श्रीमत पर सेवा कर रामराज्य स्थापन कर रहे हैं। गांधी जी तो ऐसे नहीं कहते थे कि श्रीमत पर हम रामराज्य स्थापन करते हैं। यहाँ तो इसमें श्री श्री 108, बाप बैठे हैं। 108 की माला भी बनाते हैं। माला तो बड़ी बनती है। उसमें 8-108 अच्छी मेहनत करते हैं। नम्बरवार तो बहुत हैं, जो अच्छी मेहनत करते हैं। रूद्र यज्ञ होता है तो सालिग्रामों की भी पूजा होती है। जरूर कुछ सर्विस की है तब तो पूजा होती है। तुम ब्राह्मण रूहानी सेवाधारी हो। सबकी आत्माओं को जगाने वाले हो। मैं आत्मा हूँ, यह भूलने से देह-अभिमान आ जाता है। समझते हैं मैं फलाना हूँ। किसको भी यह पता थोड़ेही है – मैं आत्मा हूँ, फलाना नाम तो इस शरीर का है। हम आत्मा कहाँ से आती है – यह ज़रा भी कोई को ख्याल नहीं। यहाँ पार्ट बजाते-बजाते शरीर का भान पक्का हो गया है। बाप समझाते हैं – बच्चे, अब गफ़लत छोड़ो। माया बड़ी जबरदस्त है, तुम युद्ध के मैदान में हो। तुम आत्म-अभिमानी बनो। आत्माओं और परमात्मा का यह मेला है। गायन है आत्मा-परमात्मा अलग रहे बहुकाल। इनका भी अर्थ वह नहीं जानते। तुम अभी जानते हो – हम आत्मायें बाप के साथ रहने वाली हैं। वह आत्माओं का घर है ना। बाप भी वहाँ है, उनका नाम है शिव। शिव जयन्ती भी गाई जाती है, दूसरा कोई नाम देना ही नहीं चाहिए। बाप कहते हैं – मेरा असली नाम है कल्याणकारी शिव। कल्याणकारी रुद्र नहीं कहेंगे। कल्याणकारी शिव कहते हैं। काशी में भी शिव का मन्दिर है ना। वहाँ जाकर साधू लोग मन्त्र जपते हैं। शिव काशी विश्वनाथ गंगा। अब बाप समझाते हैं शिव जो काशी के मन्दिर में बिठाया है, उनको कहते हैं - विश्वनाथ। अब मैं तो विश्व-नाथ हूँ नहीं। विश्व के नाथ तुम बनते हो। मैं बनता ही नहीं हूँ। ब्रह्म तत्व के नाथ भी तुम बनते हो। तुम्हारा वह घर है। वह राजधानी है। मेरा घर तो एक ही ब्रह्म तत्व है। मैं स्वर्ग में आता नहीं हूँ। न मैं नाथ बनता हूँ। मेरे को कहते ही हैं शिवबाबा। मेरा पार्ट ही है पतितों को पावन बनाने का। सिक्ख लोग भी कहते हैं मूत पलीती कपड़ धोए..... परन्तु अर्थ नहीं समझते। महिमा भी गाते हैं एकोअंकार..... अजोनि यानी जन्म-मरण रहित। मैं तो 84 जन्म लेता नहीं हूँ। मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। मनुष्य 84 जन्म लेते हैं। इनकी आत्मा जानती है – बाबा मेरे साथ इकट्ठा बैठा हुआ है तो भी घड़ी-घड़ी याद भूल जाती है। इस दादा की आत्मा कहती है मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ती है। ऐसे नहीं कि मेरे साथ बैठा है तो याद अच्छी रहती है। नहीं। एकदम इकट्ठा है। जानता हूँ मेरे पास है। इस शरीर का जैसे वह मालिक है। फिर भी भूल जाता हूँ। बाबा को यह (शरीर) मकान दिया है रहने के लिए। बाकी एक कोने में मैं बैठा हूँ। बड़ा आदमी हुआ ना। विचार करता हूँ, बाजू में मालिक बैठा है। यह रथ उनका है। वह इनकी सम्भाल करते हैं। मुझे शिवबाबा खिलाते भी हैं। मैं उनका रथ हूँ। कुछ तो खातिरी करेंगे। इस खुशी में खाता हूँ। दो-चार मिनट बाद भूल जाता हूँ, तब समझता हूँ बच्चों को कितनी मेहनत होगी इसलिए बाबा समझाते रहते हैं – जितना हो सके बाप को याद करो। बहुत-बहुत फायदा है। यहाँ तो थोड़ी बात में तंग हो पड़ते हैं फिर पढ़ाई को छोड़ देते हैं। बाबा-बाबा कह फारकती दे देते हैं। बाप को अपना बनावन्ती, ज्ञान सुनावन्ती, पशन्ती, दिव्य दृष्टि से स्वर्ग देखन्ती, रास करन्ती, अहो मम माया मुझे फारकती देवन्ती, भागन्ती। जो विश्व का मालिक बनाते उनको फारकती दे देते हैं। बड़े-बड़े नामीग्रामी भी फारकती दे देते हैं।

अभी तुमको रास्ता बताया जाता है। ऐसे नहीं कि हाथ से पकड़कर ले जायेंगे। इन आंखों से तो अन्धे नहीं हैं। हाँ ज्ञान का तीसरा नेत्र तुमको मिलता है। तुम सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। यह 84 का चक्र बुद्धि में फिरना चाहिए। तुम्हारा नाम है स्वदर्शन चक्रधारी। एक बाप को ही याद करना है। दूसरे कोई की याद न रहे। पिछाड़ी में यह अवस्था रहे। जैसे स्त्री का पुरूष से लव रहता है। उनका है जिस्मानी लव, यहाँ तुम्हारा है रूहानी लव। तुम्हें उठते-बैठते, पतियों के पति, बापों के बाप को याद करना है। दुनिया में ऐसे बहुत घर हैं जहाँ स्त्री-पुरूष तथा परिवार आपस में बहुत प्यार से रहते हैं। घर में जैसे स्वर्ग लगा रहता है। 5-6 बच्चे इकट्ठे रहते, सुबह को जल्दी उठ पूजा में बैठते, कोई झगड़ा आदि घर में नहीं। एकरस रहते हैं। कहाँ तो फिर एक ही घर में कोई राधास्वामी के शिष्य होंगे तो कोई फिर धर्म को ही नहीं मानते। थोड़ी बात पर नाराज़ हो पड़ते। तो बाप कहते हैं – इस अन्तिम जन्म में पूरा पुरूषार्थ करना है। अपना पैसा भी सफल कर अपना कल्याण करो। तो भारत का भी कल्याण होगा। तुम जानते हो – हम अपनी राजधानी श्रीमत पर फिर से स्थापन करते हैं। याद की यात्रा से और सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानने से ही हम चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे फिर उतरना शुरू होगा। फिर अन्त में बाबा के पास आ जायेंगे। श्रीमत पर चलने से ही ऊंच पद पायेंगे। बाप कोई फाँसी पर नहीं चढ़ाते हैं। एक तो कहते हैं पवित्र बनो और बाप को याद करो। सतयुग में पतित कोई होता नहीं। देवी-देवतायें भी बहुत थोड़े ही रहते हैं। फिर आहिस्ते-आहिस्ते वृद्धि होती है। देवताओं का है छोटा झाड़। फिर कितनी वृद्धि हो जाती है। आत्मायें सब आती रहती हैं, यह बना-बनाया खेल है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) रूहानी सेवाधारी बन आत्माओं को जगाने की सेवा करनी है। तन-मन-धन से सेवा कर श्रीमत पर रामराज्य की स्थापना के निमित्त बनना है।

2) स्वदर्शन चक्रधारी बन 84 का चक्र बुद्धि में फिराना है। एक बाप को ही याद करना है। दूसरे कोई की याद न रहे। कभी किसी बात से तंग हो पढ़ाई नहीं छोड़नी है।

वरदान:- संगठन में रहते लक्ष्य और लक्षण को समान बनाने वाले सदा शक्तिशाली आत्मा भव

संगठन में एक दो को देखकर उमंग उत्साह भी आता है तो अलबेलापन भी आता है। सोचते हैं यह भी करते हैं, हमने भी किया तो क्या हुआ इसलिए संगठन से श्रेष्ठ बनने का सहयोग लो। हर कर्म करने के पहले यह विशेष अटेन्शन वा लक्ष्य हो कि मुझे स्वयं को सम्पन्न बनाकर सैम्पुल बनना है। मुझे करके औरों को कराना है। फिर बार-बार इस लक्ष्य को इमर्ज करो। लक्ष्य और लक्षण को मिलाते चलो तो शक्तिशाली हो जायेंगे।

स्लोगन:- लास्ट में फास्ट जाना है तो साधारण और व्यर्थ संकल्पों में समय नहीं गंवाओ।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

जो प्यारा होता है, उसे याद किया नहीं जाता, उसकी याद स्वत: आती है। सिर्फ प्यार दिल का हो, सच्चा और नि:स्वार्थ हो। जब कहते हो मेरा बाबा, प्यारा बाबा–तो प्यारे को कभी भूल नहीं सकते और नि:स्वार्थ प्यार सिवाए बाप के किसी आत्मा से मिल नहीं सकता इसलिए कभी मतलब से याद नहीं करो, नि:स्वार्थ प्यार में लवलीन रहो।

विशेष सूचना

बाबा की श्रीमत अनुसार, मुरली केवल बाबा के बच्चों के लिए हैं, न कि उन आत्माओं के लिए जिन्होंने राजयोग का कोर्स भी नहीं किया है। इसलिए सभी निमित्त टीचर्स एवं भाई बहनों से विनम्र निवेदन है कि साकार मुरली की ऑडियो या वीडियो को यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम या किसी भी व्हाट्सएप ग्रुप पर पोस्ट न करें।

''मीठे बच्चे – सदा इसी खुशी में रहो कि हमने 84 का चक्र पूरा किया, अब जाते हैं अपने घर, बाकी थोड़े दिन यह कर्मभोग है''

प्रश्नः- विकर्माजीत बनने वाले बच्चों को विकर्मों से बचने के लिए किस बात पर बहुत ध्यान देना है?

उत्तरः- जो सर्व विकर्मों की जड़ देह-अभिमान है, उस देह-अभिमान में कभी न आयें, यह ध्यान रखना है। इसके लिए बार-बार देही-अभिमानी बन बाप को याद करना है। अच्छे और बुरे का फल जरूर मिलता है, अन्त में विवेक खाता है। लेकिन इस जन्म के पापों के बोझ को हल्का करने के लिए बाप को सच-सच सुनाना है।

ओम् शान्ति। बड़े ते बड़ी मंजिल है याद की। बहुतों को सिर्फ सुनने का शौक रहता है। ज्ञान को समझना तो बहुत सहज है। 84 के चक्र को समझना है, स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। जास्ती कुछ नहीं है। तुम बच्चे समझते हो हम सब स्वदर्शन चक्रधारी हैं। स्वदर्शन चक्र से कोई का गला नहीं काटते हैं। जैसे श्रीकृष्ण के लिए दिखाया है। अब यह लक्ष्मी-नारायण विष्णु के दो रूप हैं। क्या उनको स्वदर्शन चक्र है? फिर श्रीकृष्ण को चक्र क्यों दिखाते हैं? एक मैगज़ीन निकालते हैं, जिसमें श्रीकृष्ण के ऐसे बहुत चित्र दिखाते हैं। बाप तो आकर तुम्हें राजयोग सिखाते हैं, न कि चक्र से असुरों का घात करते हैं। असुर उनको कहा जाता, जिनका आसुरी स्वभाव है। बाकी मनुष्य तो मनुष्य हैं ना। ऐसे नहीं स्वदर्शन चक्र से बैठ सबको मारते हैं। भक्ति मार्ग में क्या-क्या चित्र बैठ बनाये हैं। रात-दिन का फ़र्क है। तुम बच्चों को इस सृष्टि चक्र और सारे ड्रामा को जानना है क्योंकि सब एक्टर्स हैं। वह हद के एक्टर्स तो ड्रामा को जानते हैं। यह है बेहद का ड्रामा। इसमें डिटेल में नहीं समझ सकेंगे। वह तो 2 घण्टे का ड्रामा होता है। डीटेल में पार्ट जानते हैं। यह तो 84 जन्मों को जानना होता है।

बाप ने समझाया है – मैं ब्रह्मा के रथ में प्रवेश करता हूँ। ब्रह्मा के भी 84 जन्मों की कहानी चाहिए। मनुष्यों की बुद्धि में यह बातें आ न सकें। यह भी नहीं समझते कि 84 लाख जन्म हैं या 84 जन्म हैं? बाप कहते हैं तुम्हारे 84 जन्मों की कहानी सुनाता हूँ। 84 लाख जन्म हों तो कितने वर्ष सुनाने में लग जायें। तुम तो सेकण्ड में जान जाते हो - यह 84 जन्मों की कहानी है। हमने 84 का चक्र कैसे लगाया है, 84 लाख हो तो सेकण्ड में थोड़ेही समझ सकते। 84 लाख जन्म हैं ही नहीं। तुम बच्चों को भी खुशी होनी चाहिए। हमारा 84 का चक्र पूरा हुआ। अब हम घर जाते हैं। बाकी थोड़े दिन यह कर्मभोग है। विकर्म भस्म हो कर्मातीत अवस्था कैसे हो जाए, इसके लिए यह युक्ति बताई है। बाकी समझाते हैं इस जन्म में जो भी विकर्म किये हुए हैं वह लिखकर दो तो बोझ हल्का हो जाए। जन्म-जन्मान्तर के विकर्म तो कोई लिख न सके। विकर्म तो होते आये हैं। जबसे रावण राज्य शुरू हुआ है तो कर्म विकर्म हो पड़ते हैं। सतयुग में कर्म अकर्म होते हैं। भगवानुवाच – तुमको कर्म-अकर्म-विकर्म की गति को समझाता हूँ। विकर्माजीत का संवत लक्ष्मी-नारायण से शुरू होता है। सीढ़ी में बड़ा क्लीयर है। शास्त्रों में कोई यह बातें नहीं हैं। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी का राज़ भी तुम बच्चों ने समझा है कि हम ही थे। विराट रूप का चित्र भी बहुत बनाते हैं परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं जानते। बाप बिगर कोई समझा नहीं सकते। इस ब्रह्मा के ऊपर भी कोई है ना, जिसने सिखाया होगा। अगर कोई गुरू ने सिखाया होता तो उस गुरू का सिर्फ एक शिष्य तो नहीं हो सकता। बाप कहते हैं – बच्चे, तुम्हें पतित से पावन, पावन से पतित बनना ही है। यह भी ड्रामा में नूँध है। अनेक बार यह चक्र पास किया है। पास करते ही रहेंगे। तुम हो आलराउन्ड पार्टधारी। आदि से अन्त तक पार्ट और कोई का है नहीं। तुमको ही बाप समझाते हैं। फिर तुम यह भी समझते हो कि दूसरे धर्म वाले फलाने-फलाने समय पर आते हैं। तुम्हारा तो आलराउन्ड पार्ट है। क्रिश्चियन के लिए तो नहीं कहेंगे कि सतयुग में थे। वह तो द्वापर के भी बीच में आते हैं। यह नॉलेज तुम बच्चों की ही बुद्धि में है। किसको समझा भी सकते हो। दूसरा कोई सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते। रचयिता को ही नहीं जानते तो रचना को कैसे जानेंगे। बाबा ने समझाया है जो राइटियस बातें हैं वह छपाकर एरोप्लेन से सब जगह गिरानी है। वह प्वाइंट्स अथवा टॉपिक्स बैठ लिखनी चाहिए। बच्चे कहते हैं काम नहीं है। बाबा कहते हैं यह सर्विस तो बहुत है। यहाँ एकान्त में बैठ यह काम करो। जो भी बड़ी-बड़ी संस्थायें हैं, गीता पाठशालायें आदि हैं, उन सबको जगाना है। सबको सन्देश देना है। यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। जो समझदार होंगे वह झट समझेंगे, जरूर संगमयुग पर ही नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश होता है। सतयुग में पुरुषोत्तम मनुष्य होते हैं। यहाँ है आसुरी

स्वभाव वाले पतित मनुष्य। यह भी बाबा ने समझाया है, कुम्भ का मेला आदि जो लगता है। बहुत मनुष्य जाते हैं स्नान करने। क्यों स्नान करने जाते हैं? पावन होना चाहते हैं। तो जहाँ-जहाँ मनुष्य स्नान करने जाते हैं वहाँ जाकर सर्विस करनी चाहिए। मनुष्यों को समझाना चाहिए, यह पानी कोई पतित-पावनी नहीं है। तुम्हारे पास चित्र भी हैं। गीता पाठशालाओं में जाकर यह पर्चे बांटने चाहिए। बच्चे सर्विस मांगते हैं। यह बैठकर लिखो – गीता का भगवान परमपिता परमात्मा शिव है, न कि श्रीकृष्ण। फिर उनकी बायोग्राफी की महिमा लिखो। शिवबाबा की बायोग्राफी लिखो। फिर आपेही वह जज करेंगे। यह प्वाइंट्स भी लिखनी है कि पतित-पावन कौन? फिर शिव और शंकर का भेद भी दिखाना है। शिव अलग है, शंकर अलग है। यह भी बाबा ने समझाया है - कल्प 5 हज़ार वर्ष का है। मनुष्य 84 जन्म लेते हैं, न कि 84 लाख। यह मुख्य-मुख्य बातें शॉर्ट में लिखनी चाहिए। जो एरोप्लेन से भी गिरा सकते हैं, समझा भी सकते हैं। यह जैसे गोला है, इसमें क्लीयर है फलाने-फलाने धर्म फलाने-फलाने समय पर स्थापन होते हैं। तो यह गोला भी होना चाहिए इसलिए मुख्य 12 चित्रों के कैलेन्डर्स भी छपवा सकते हो जिसमें सारा ज्ञान आ जाए और सर्विस सहज हो सके। यह चित्र बिल्कुल ज़रूरी है। कौन-से चित्र बनाने हैं, क्या-क्या प्वाइंट लिखनी चाहिए। वह बैठ लिखो।

तुम गुप्तवेष में इस पुरानी दुनिया का परिवर्तन कर रहे हो। अननोन वारियर्स हो। तुमको कोई नहीं जानते। बाबा भी गुप्त, नॉलेज भी गुप्त। इनका कोई शास्त्र आदि बनता नहीं, और धर्म स्थापक के बाइबिल आदि छपते हैं जो पढ़ते आते हैं। हर एक के छपते हैं। तुम्हारा फिर भक्ति मार्ग में छपता है। अभी नहीं छपना है क्योंकि अभी तो यह शास्त्र आदि सब खत्म हो जाने हैं। अभी तुमको बुद्धि में सिर्फ याद करना है। बाप के पास भी बुद्धि में ज्ञान है। कोई शास्त्र आदि थोड़ेही पढ़ते। वह तो नॉलेजफुल है। नॉलेजफुल का अर्थ फिर मनुष्य समझते हैं सबके दिलों को जानने वाला है। भगवान देखते हैं तब तो कर्मों का फल देते हैं। बाप कहते हैं यह ड्रामा में नूँध है। ड्रामा में जो विकर्म करते हैं तो उनकी सज़ा होती जाती है। अच्छे वा बुरे कर्मों का फल मिलता है। उसकी लिखत तो कोई है नहीं। मनुष्य समझ सकते हैं ज़रूर कर्मों का फल दूसरे जन्म में मिलता है। अन्त घड़ी विवेक फिर बहुत खाता है। हमने यह-यह पाप किये हैं। सब याद आता है। जैसा कर्म वैसा जन्म मिलेगा। अभी तुम विकर्माजीत बनते हो तो कोई भी ऐसा विकर्म नहीं करना चाहिए। बड़े ते बड़ा विकर्म है देह-अभिमानी बनना। बाबा बार-बार कहते हैं देही-अभिमानी बन बाप को याद करो, पवित्र तो रहना ही है। सबसे बड़ा पाप है काम कटारी चलाना। यही आदि-मध्य-अन्त दु:ख देने वाला है इसलिए संन्यासी भी कहते यह काग विष्टा समान सुख है। वहाँ दु:ख का नाम नहीं होता। यहाँ दु:ख ही दु:ख है, इसलिए संन्यासियों को वैराग्य आता है। परन्तु वह जंगल में चले जाते हैं। उन्हों का है हद का वैराग्य, तुम्हारा है बेहद का वैराग्य। यह दुनिया ही छी-छी है। सब कहते हैं बाबा आकर हमारे दु:ख हरकर सुख दो। बाप ही दु:ख हर्ता सुख कर्ता है। तुम बच्चे ही समझते हो कि नई दुनिया में इन देवताओं का राज्य था। वहाँ किसी भी प्रकार का दु:ख नहीं था। जब कोई शरीर छोड़ता है तो मनुष्य कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। परन्तु यह थोड़ेही समझते कि हम नर्क में हैं। हम जब मरें तब स्वर्ग में जायें। परन्तु वह भी स्वर्ग में गया वा यहाँ नर्क में आया? कुछ भी समझते नहीं। तुम बच्चे 3 बाप का राज़ भी सबको समझा सकते हो। दो बाप तो सब समझते हैं लौकिक और पारलौकिक और यह अलौकिक प्रजापिता ब्रह्मा फिर है यहाँ संगमयुग पर। ब्राह्मण भी चाहिए ना। वह ब्राह्मण कोई ब्रह्मा के मुख वंशावली थोड़ेही हैं। जानते हैं ब्रह्मा था इसलिए ब्राह्मण देवी-देवता नम: कहते हैं। यह नहीं जानते कि किसको कहते हैं, कौन से ब्राह्मण? तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुगी ब्राह्मण। वह हैं कलियुगी। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग, जब तुम मनुष्य से देवता बनते हो। देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही है। तो बच्चों को सब प्वाइंट्स धारण करनी है और फिर सर्विस करनी है। पूजा करने वा श्राद्ध खाने पर ब्राह्मण लोग आते हैं। उनसे भी तुम चिटचैट कर सकते हो। तुमको सच्चा ब्राह्मण बना सकते हैं। अभी भादों का मास आता है, सभी पित्रों को खिलाते हैं। वह भी युक्ति से करना चाहिए, नहीं तो कहेंगे कि ब्रह्माकुमारियों के पास जाकर सब कुछ छोड़ दिया है। ऐसा कुछ नहीं करना है, जिसमें नाराज हों। युक्ति से तुम ज्ञान दे सकते हो। ज़रूर ब्राह्मण लोग आयेंगे, तब तो ज्ञान देंगे ना। इस मास में तुम ब्राह्मणों की बहुत सर्विस कर सकते हो। तुम ब्राह्मण तो प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद हो। बताओ ब्राह्मण धर्म किसने स्थापन किया? तुम उन्हों का भी कल्याण कर सकते हो घर बैठे। जैसे अमरनाथ की यात्रा पर जाते हैं तो वे सिर्फ लिखत से इतना नहीं समझेंगे। वहाँ बैठ समझाना चाहिए। हम

तुमको सच्ची अमरनाथ की कथा सुनायें। अमरनाथ तो एक को ही कहा जाता है। अमरनाथ अर्थात् जो अमरपुरी स्थापन करे। वह है सतयुग। ऐसे सर्विस करनी पड़े। वहाँ पैदल जाना पड़ता है। जो अच्छे-अच्छे बड़े-बड़े आदमी हों उनको जाकर समझाना चाहिए। संन्यासियों को भी तुम ज्ञान दे सकते हो। तुम सारी सृष्टि के कल्याणकारी हो। श्रीमत पर हम विश्व का कल्याण कर रहे हैं – बुद्धि में यह नशा रहना चाहिए। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) जब एकान्त वा फुर्सत मिलती है तो ज्ञान की अच्छी-अच्छी प्वाइंट्स पर विचार सागर मंथन कर लिखना है। सबको सन्देश पहुँचाने वा सबका कल्याण करने की युक्ति रचनी है।

2) विकर्मो से बचने के लिए देही-अभिमानी बन बाप को याद करना है। अभी कोई भी विकर्म नहीं करना है, इस जन्म के किये हुए विकर्म बापदादा को सच-सच सुनाने हैं।

वरदान:- अटल भावी को जानते हुए भी श्रेष्ठ कार्य को प्रत्यक्ष रूप देने वाले सदा समर्थ भव

नया श्रेष्ठ विश्व बनने की भावी अटल होते हुए भी समर्थ भव के वरदानी बच्चे सिर्फ कर्म और फल के, पुरूषार्थ और प्रालब्ध के, निमित्त और निर्माण के कर्म फिलॉसाफी अनुसार निमित्त बन कार्य करते हैं। दुनिया वालों को उम्मींद नहीं दिखाई देती। और आप कहते हो यह कार्य अनेक बार हुआ है, अभी भी हुआ ही पड़ा है क्योंकि स्व परिवर्तन के प्रत्यक्ष प्रमाण के आगे और कोई प्रमाण की आवश्यकता ही नहीं। साथ-साथ परमात्म कार्य सदा सफल है ही।

स्लोगन:- कहना कम, करना ज्यादा–यह श्रेष्ठ लक्ष्य महान बना देगा।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

सेवा में वा स्वंय की चढ़ती कला में सफलता का मुख्य आधार है – एक बाप से अटूट प्यार। बाप के सिवाए और कुछ दिखाई न दे। संकल्प में भी बाबा, बोल में भी बाबा, कर्म में भी बाप का साथ, ऐसी लवलीन स्थिति में रह एक शब्द भी बोलेंगे तो वह स्नेह के बोल दूसरी आत्मा को भी स्नेह में बाँध देंगे। ऐसी लवलीन आत्मा का एक बाबा शब्द ही जादू मंत्र का काम करेगा।

''मीठे बच्चे – यह पुरूषोत्तम संगमयुग कल्याणकारी युग है, इसमें ही पढ़ाई से तुम्हें श्रीकृष्णपुरी का मालिक बनना है''

प्रश्नः- बाप माताओं पर ज्ञान का कलष क्यों रखते हैं? कौन सी एक रिवाज़ भारत में ही चलती है?

उत्तरः- पवित्रता की राखी बांध सबको पतित से पावन बनाने के लिए बाप माताओं पर ज्ञान का कलष रखते हैं। रक्षाबन्धन का भी भारत में ही रिवाज़ है। बहन भाई को राखी बांधती है। यह पवित्रता की निशानी है। बाप कहते हैं बच्चे तुम मामेकम् याद करो तो पावन बन पावन दुनिया के मालिक बन जायेंगे।

गीतः- भोलेनाथ से निराला.....

ओम् शान्ति। यह है भोलेनाथ की महिमा, जिसके लिए कहते हैं देने वाला है। तुम बच्चे जानते हो श्री लक्ष्मी-नारायण को यह राज्य-भाग्य किसने दिया। जरूर भगवान ने दिया होगा क्योंकि स्वर्ग की स्थापना तो वही करते हैं। स्वर्ग की बादशाही भोलेनाथ ने जैसे लक्ष्मी-नारायण को दी वैसे ही श्रीकृष्ण को दी। राधे-कृष्ण अथवा लक्ष्मी-नारायण की बात तो एक ही है। परन्तु राजधानी है नहीं। उन्हों को सिवाए परमपिता परमात्मा के कोई राज्य दे नहीं सकते। उन्हों का जन्म स्वर्ग में ही कहेंगे। यह तुम बच्चे ही जानते हो। तुम बच्चे ही जन्माष्टमी पर समझायेंगे। श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी है तो राधे की भी होनी चाहिए क्योंकि दोनों स्वर्ग के वासी थे। राधे-कृष्ण ही स्वयंवर के बाद लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। मुख्य बात कि उन्हों को यह राज्य किसने दिया। यह राजयोग कब और किसने सिखाया? स्वर्ग में तो नहीं सिखाया होगा। सतयुग में तो वह है ही उत्तम पुरूष। कलियुग के बाद होता है सतयुग। तो जरूर कलियुग अन्त में राजयोग सीखे होंगे। जो फिर नये जन्म में राजाई प्राप्त की। पुरानी दुनिया से नई पावन दुनिया बनती है। जरूर पतित-पावन ही आया होगा। अब संगमयुग पर कौन-सा धर्म होता है, यह किसको पता नहीं। पुरानी दुनिया और नई दुनिया का यह है पुरूषोत्तम संगमयुग, जो गाया हुआ है। यह लक्ष्मी-नारायण हैं नई दुनिया के मालिक। इन्हों की आत्मा को आगे जन्म में परमपिता परमात्मा ने राजयोग सिखाया। जिस पुरूषार्थ की प्रालब्ध फिर से नये जन्म में मिलती है, इनका नाम ही है कल्याणकारी पुरूषोत्तम संगमयुग। जरूर बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में ही इन्हों को कोई ने राजयोग सिखाया होगा। कलियुग में हैं अनेक धर्म, सतयुग में था एक देवी-देवता धर्म। संगम पर कौन-सा धर्म है, जिससे यह पुरूषार्थ कर राजयोग सीखे और सतयुग में प्रालब्ध भोगी। समझा जाता है संगमयुग पर ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण ही पैदा हुए। चित्र में भी है ब्रह्मा द्वारा स्थापना, कृष्णपुरी की। विष्णु अथवा नारायणपुरी कहो, बात तो एक ही है। अभी तुम जानते हो हम कृष्णपुरी के मालिक बनते हैं, इस पढ़ाई से और पावन बनने से। शिव भगवानुवाच है ना। श्रीकृष्ण की आत्मा ही बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में फिर यह बनती है। 84 जन्म लेते हैं ना। यह है 84 वां जन्म, इनका ही फिर ब्रह्मा नाम रखते हैं। नहीं तो फिर ब्रह्मा कहाँ से आया। ईश्वर ने रचना रची तो ब्रह्मा-विष्णु-शंकर कहाँ से आये। कैसे रचा? क्या छू मंत्र किया जो पैदा हो गये। बाप ही उन्हों की हिस्ट्री बताते हैं। एडाप्ट किया जाता है तो नाम बदलते हैं। ब्रह्मा नाम तो नहीं था ना। कहते हैं बहुत जन्मों के अन्त में..... तो जरूर पतित मनुष्य हुआ। ब्रह्मा कहाँ से आया, किसको भी पता नहीं है। बहुत जन्मों के अन्त का जन्म किसका हुआ? वो तो लक्ष्मी-नारायण ने ही बहुत जन्म लिए हैं। नाम, रूप, देश, काल बदलता जाता है। श्रीकृष्ण के चित्र में 84 जन्मों की कहानी क्लीयर लिखी हुई है। जन्माष्टमी पर श्रीकृष्ण के चित्र भी बहुत बिकते होंगे क्योंकि श्रीकृष्ण के मन्दिर में तो सब जायेंगे ना। राधे-कृष्ण के मन्दिर में ही जाते हैं। श्रीकृष्ण के साथ राधे जरूर होगी। राधे-कृष्ण, प्रिन्स-प्रिन्सेज ही लक्ष्मी-नारायण महाराजा-महारानी बनते हैं। उन्हों ने ही 84 जन्म लिए फिर अन्त के जन्म में ब्रह्मा-सरस्वती बने। बहुत जन्मों के अन्त में बाप ने प्रवेश किया। और इनको ही कहते हैं तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। तुम पहले जन्म में लक्ष्मी-नारायण थे। फिर यह जन्म लिया उन्होंने अर्जुन का नाम कह दिया है। अर्जुन को राजयोग सिखाया। अर्जुन को अलग कर दिया है। परन्तु उनका नाम अर्जुन है नहीं। ब्रह्मा का जीवन चरित्र चाहिए ना। परन्तु ब्रह्मा और ब्राह्मणों का वर्णन कहाँ भी है नहीं। यह बातें बाप ही बैठ समझाते हैं। सब बच्चे सुनेंगे फिर बच्चे औरों को समझायेंगे। कथा सुनकर फिर औरों को बैठ सुनाते हैं। तुम भी सुनते हो फिर सुनाते हो। यह है पुरूषोत्तम संगमयुग, लीप युग। एक्स्ट्रा युग। पुरूषोत्तम मास पड़ता है तो 13 मास हो जाते हैं। इस संगमयुग के त्योहार ही हर वर्ष मनाते हैं। इस पुरूषोत्तम संगमयुग का किसको पता नहीं है। इस संगमयुग पर ही बाप

आकर पवित्र बनाने की प्रतिज्ञा कराते हैं। पतित दुनिया से पावन दुनिया की स्थापना करते हैं। रक्षाबन्धन का भी भारत में ही रिवाज है। बहन भाई को राखी बांधती है। परन्तु वह कुमारी भी फिर अपवित्र बन जाती है। अभी बाप ने तुम माताओं पर ज्ञान का कलष रखा है। जो ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियाँ बैठ पवित्रता की प्रतिज्ञा कराने राखी बांधती हैं। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम पावन बन पावन दुनिया के मालिक बन जायेंगे। बाकी कोई राखी आदि बांधने की दरकार नहीं है। यह समझाया जाता है। जैसे साधू-संन्यासी लोग दान माँगते हैं। कोई कहते हैं क्रोध का दान दो, कोई कहते हैं प्याज मत खाओ। जो खुद नहीं खाते होंगे वह दान लेते होंगे। इन सबसे भारी प्रतिज्ञा तो बेहद का बाप कराते हैं। तुम पावन बनना चाहते हो तो पतित-पावन बाप को याद करो। द्वापर से लेकर तुम पतित बनते आये हो, अब सारी दुनिया पावन चाहिए, वह तो बाप ही बना सकते हैं। सर्व का गति-सद्गति दाता कोई मनुष्य हो नहीं सकता। बाप ही पावन बनने की प्रतिज्ञा लेते हैं। भारत पावन स्वर्ग था ना। पतित-पावन वह परमपिता परमात्मा ही है। श्रीकृष्ण को पतित-पावन नहीं कहेंगे। उनका तो जन्म होता है। उनके तो माँ-बाप भी दिखाते हैं। एक शिव का ही अलौकिक जन्म है। वह खुद ही अपना परिचय देते हैं कि मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। शरीर का आधार जरूर लेना पड़े। मैं ज्ञान का सागर पतित-पावन, राजयोग सिखलाने वाला हूँ। बाप ही स्वर्ग का रचयिता है और नर्क का विनाश कराते हैं। जब स्वर्ग है तो नर्क नहीं। अभी पूरा रौरव नर्क है, जब बिल्कुल तमोप्रधान नर्क बनता है तब ही बाप आकर सतोप्रधान स्वर्ग बनाते हैं। 100 प्रतिशत पतित से 100 प्रतिशत पावन बनाते हैं। पहला जन्म जरूर सतोप्रधान ही मिलेगा। बच्चों को विचार सागर मंथन कर भाषण करना है। समझाना फिर हर एक का अलग-अलग होगा। बाप भी आज एक बात, कल फिर दूसरी बात समझायेंगे। एक जैसी समझानी तो हो न सके। समझो टेप से कोई एक्यूरेट सुने भी परन्तु फिर एक्यूरेट सुना नहीं सकेंगे, फ़र्क जरूर पड़ता है। बाप जो सुनाते हैं, तुम जानते हो ड्रामा में सारी नूंध है। अक्षर बाई अक्षर जो कल्प पहले सुनाया था वह फिर आज सुनाते हैं। यह रिकॉर्ड भरा हुआ है। भगवान खुद कहते हैं मैंने जो 5 हज़ार वर्ष पहले हूबहू अक्षर बाई अक्षर सुनाया है वही सुनाता हूँ। यह शूट किया हुआ ड्रामा है। इसमें फ़र्क ज़रा भी नहीं पड़ सकता। इतनी छोटी आत्मा में रिकार्ड भरा हुआ है। अब श्रीकृष्ण जन्माष्टमी कब हुई थी, यह भी बच्चे समझते हैं। आज से 5 हज़ार वर्ष से कुछ दिन कम कहेंगे क्योंकि अभी पढ़ रहे हैं। नई दुनिया की स्थापना हो रही है। बच्चों के दिल में कितनी खुशी है। तुम जानते हो श्रीकृष्ण की आत्मा ने 84 का चक्र लगाया है। अब फिर श्रीकृष्ण के नाम-रूप में आ रही है। चित्र में दिखाया है – पुरानी दुनिया को लात मार रहे हैं। नई दुनिया हाथ में है। अभी पढ़ रहे हैं इसलिए कहा जाता है – श्रीकृष्ण आ रहे हैं। जरूर बाप बहुत जन्मों के अन्त में ही पढ़ायेंगे। यह पढ़ाई पूरी होगी तो श्रीकृष्ण जन्म लेंगे। बाकी थोड़ा टाइम है पढ़ाई का। जरूर अनेक धर्मों का विनाश होने बाद श्रीकृष्ण का जन्म हुआ होगा। सो भी एक श्रीकृष्ण तो नहीं, सारी श्रीकृष्णपुरी होगी। यह ब्राह्मण ही हैं जो फिर यह राजयोग सीख देवता पद पायेंगे। देवतायें बनते ही हैं नॉलेज से। बाप आकर मनुष्य से देवता बनाते हैं – पढ़ाई से। यह पाठशाला है, इसमें सबसे जास्ती टाइम लगता है। पढ़ाई तो सहज है। बाकी योग में है मेहनत। तुम बता सकते हो श्रीकृष्ण की आत्मा अब राजयोग सीख रही है – परमपिता परमात्मा द्वारा। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा हम आत्माओं को पढ़ा रहे हैं, विष्णुपुरी का राज्य देने। हम प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ हैं। यह है संगमयुग। यह बहुत छोटा-सा युग है। चोटी सबसे छोटी होती है ना। फिर उनसे बड़ा मुख, उनसे बड़ी बांहें, उनसे बड़ा पेट, उनसे बड़ी टाँगे। विराट रूप दिखाते हैं, परन्तु उसकी समझानी कोई नहीं देते। तुम बच्चों को यह 84 जन्मों के चक्र का राज़ समझाना है, शिवजयन्ती के बाद है श्रीकृष्ण जयन्ती।

तुम बच्चों के लिए यह है संगमयुग। तुम्हारे लिए कलियुग पूरा हो गया। बाप कहते हैं – मीठे बच्चों, अब मैं आया हूँ तुमको सुखधाम, शान्तिधाम ले जाने लिए। तुम सुखधाम के रहवासी थे फिर दु:खधाम में आये। पुकारते हो बाबा आओ, इस पुरानी दुनिया में। तुम्हारी दुनिया तो नहीं है। अभी तुम क्या कर रहे हो? योगबल से अपनी दुनिया स्थापन कर रहे हो। कहा भी जाता है अहिंसा परमो देवी-देवता धर्म। तुमको अहिंसक बनना है। न काम कटारी चलानी है, न लड़ना-झगड़ना है। बाप कहते हैं मैं हर 5 हज़ार वर्ष बाद आता हूँ। लाखों वर्ष की बात ही नहीं। बाप कहते हैं यज्ञ, तप, दान, पुण्य आदि करते तुम नीचे गिरते आये हो। ज्ञान से ही सद्गति होती है। मनुष्य तो कुम्भकरण की नींद में सोये हुए हैं, जो जगते ही नहीं इसलिए बाप कहते हैं मैं कल्प-कल्प आता हूँ, मेरा भी ड्रामा में पार्ट है। पार्ट बिगर मैं भी कुछ नहीं कर सकता हूँ। मैं भी

ड्रामा के बन्धन में हूँ। पूरे टाइम पर आता हूँ। ड्रामा के प्लैन अनुसार मैं तुम बच्चों को वापिस ले जाता हूँ। अब कहता हूँ मनमनाभव। परन्तु इनका भी अर्थ कोई नहीं जानते हैं। बाप कहते हैं देह के सर्व सम्बन्ध छोड़ मामेकम याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। बच्चे मेहनत करते रहते हैं बाप को याद करने की। यह है ईश्वरीय विश्व विद्यालय, सारे विश्व को सद्गति देने वाला दूसरा कोई ईश्वरीय विश्व विद्यालय हो न सके। ईश्वर बाप खुद आकर सारे विश्व को चेंज कर देते हैं। हेल से हेविन बनाते हैं। जिस पर फिर तुम राज्य करते हो। शिव को बबुलनाथ भी कहते हैं क्योंकि वह आकर तुमको काम कटारी से छुड़ाए पावन बनाते हैं। भक्ति मार्ग में तो बहुत शो है, यहाँ तो शान्त में याद करना है। वह अनेक प्रकार के हठयोग आदि करते हैं। उनका तो निवृत्ति मार्ग ही अलग है। वह ब्रह्म को मानते हैं। ब्रह्म योगी तत्व योगी हैं। वह तो हो गया आत्माओं के रहने का स्थान, जिसको ब्रह्माण्ड कहा जाता है। वह फिर ब्रह्म को भगवान समझ लेते हैं। उसमें लीन हो जायेंगे। गोया आत्मा को मार्टल बना देते हैं। बाप कहते हैं मैं ही आकर सर्व की सद्गति करता हूँ। शिवबाबा ही सर्व की सद्गति करते, तो वह है हीरे जैसा। फिर तुमको गोल्डन एज में ले जाते हैं। तुम्हारा भी यह हीरे जैसा जन्म है फिर गोल्डन एज में आते हो। यह नॉलेज तुमको बाप ही आकर पढ़ाते हैं जिससे तुम देवता बनते हो। फिर यह नॉलेज प्राय: लोप हो जाती है। इन लक्ष्मी-नारायण में भी रचता और रचना की नॉलेज नहीं है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) इस पुरानी दुनिया मे रहते डबल अहिंसक बन योगबल से अपनी नई दुनिया स्थापन करनी है। अपना जीवन हीरे जैसा बनाना है।

2) बाप जो सुनाते हैं उस पर विचार सागर मंथन कर दूसरों को सुनाना है। सदा नशा रहे कि यह पढ़ाई पूरी होगी तो हम कृष्णपुरी में जायेंगे।

वरदान:- अपवित्रता के नाम निशान को भी समाप्त कर हिज़ होलीनेस का टाइटल प्राप्त करने वाले होलीहंस भव

जैसे हंस कभी भी कंकड़ नहीं चुगते, रत्न धारण करते हैं। ऐसे होलीहंस किसी के अवगुण अर्थात् कंकड को धारण नहीं करते। वे व्यर्थ और समर्थ को अलग कर व्यर्थ को छोड़ देते हैं, समर्थ को अपना लेते हैं। ऐसे होलीहंस ही पवित्र शुद्ध आत्मायें हैं, उनका आहार, व्यवहार सब शुद्ध होता है। जब अशुद्धि अर्थात् अपवित्रता का नाम निशान भी समाप्त हो जाए तब भविष्य में हिज़ होलीनेस का टाइटल प्राप्त हो इसलिए कभी गलती से भी किसी के अवगुण धारण नहीं करना।

स्लोगन:- सर्वंश त्यागी वह है जो पुराने स्वभाव संस्कार के वंश का भी त्याग करता है।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

कोई भी कार्य करते बाप की याद में लवलीन रहो। किसी भी बात के विस्तार में न जाकर, विस्तार को बिन्दी लगाए बिन्दी में समा दो, बिन्दी बन जाओ, बिन्दी लगा दो, तो सारा विस्तार, सारी जाल सेकण्ड में समा जायेगी और समय बच जायेगा, मेहनत से छूट जायेंगे। बिन्दी बन बिन्दी में लवलीन हो जायेंगे।

''मीठे बच्चे – तुम्हें पढ़ाई से अपनी कर्मातीत अवस्था बनानी है, साथ-साथ पतित से पावन बनाने का रास्ता भी बताना है, रूहानी सर्विस करनी है''

प्रश्नः- कौन-सा मन्त्र याद रखो तो पाप कर्मों से बच जायेंगे?

उत्तरः- बाप ने मन्त्र दिया है–हियर नो ईविल, सी नो ईविल..... यही मन्त्र याद रखो। तुम्हें अपनी कर्मेन्द्रियों से कोई पाप नहीं करना है। कलियुग में सबसे पाप कर्म ही होते हैं इसलिए बाबा यह युक्ति बताते हैं, पवित्रता का गुण धारण करो - यही नम्बरवन गुण है।

ओम् शान्ति। बच्चे किसके सामने बैठे हैं। बुद्धि में जरूर चलता होगा कि हम पतित-पावन सर्व के सद्गति दाता, अपने बेहद के बाप के सामने बैठे हैं। भल ब्रह्मा के तन में हैं तो भी याद उनको करना है। मनुष्य कोई सर्व की सद्गति नहीं कर सकते। मनुष्य को पतित-पावन नहीं कहा जाता। बच्चों को अपने को आत्मा समझना पड़े। हम सब आत्माओं का बाप वह है। वह बाप हमको स्वर्ग का मालिक बना रहे हैं। यह बच्चों को जानना चाहिए और फिर खुशी भी होनी चाहिए। यह भी बच्चे जानते हैं हम नर्कवासी से स्वर्गवासी बन रहे हैं। बहुत सहज रास्ता मिल रहा है। सिर्फ याद करना है और अपने में दैवीगुण धारण करने हैं। अपनी जांच रखनी है। नारद का मिसाल भी है। यह सब दृष्टान्त, ज्ञान के सागर बाप ने ही दिये हैं। जो भी संन्यासी आदि दृष्टान्त देते हैं, वह सब बाप के दिये हुए हैं। भक्ति मार्ग में सिर्फ गाते रहते हैं। कछुए का, सर्प का, भ्रमरी का दृष्टान्त देंगे। परन्तु खुद कुछ भी नहीं कर सकते। बाप के दिये हुए दृष्टान्त भक्तिमार्ग में फिर रिपीट करते हैं। भक्ति मार्ग है ही पास्ट का। इस समय जो प्रैक्टिकल होता है उसका फिर गायन होता है। भल देवताओं का जन्म दिन अथवा भगवान का जन्म दिन मनाते हैं परन्तु जानते कुछ भी नहीं हैं। अभी तुम समझते जाते हो। बाप से शिक्षा लेकर पतित से पावन भी बनते हो और पतितों को पावन बनने का रास्ता भी बताते हो। यह है तुम्हारी मुख्य रूहानी सर्विस। पहले-पहले कोई को भी आत्मा का ज्ञान देना है। तुम आत्मा हो। आत्मा का भी किसको पता नहीं। आत्मा तो अविनाशी है। जब समय होता है आत्मा शरीर में आकर प्रवेश करती है तो अपने को घड़ी-घड़ी आत्मा समझना है। हम आत्माओं का बाप परमपिता परमात्मा है। परम टीचर भी है। यह भी हरदम बच्चों को याद रहना चाहिए। यह भूलना नहीं चाहिए। तुम जानते हो अब वापिस जाना है। विनाश सामने खड़ा है। सतयुग में दैवी परिवार बहुत छोटा होता है। कलियुग में तो कितने ढेर मनुष्य हैं। अनेक धर्म, अनेक मतें हैं। सतयुग में यह कुछ भी होता नहीं। बच्चों को सारा दिन बुद्धि में यह बातें लानी हैं। यह पढ़ाई है ना। उस पढ़ाई में तो कितने किताब आदि होते हैं। हर एक क्लास में नये-नये किताब खरीद करने पड़ते हैं। यहाँ तो कोई भी किताब वा शास्त्रों आदि की बात नहीं। इसमें तो एक ही बात, एक ही पढ़ाई है। यहाँ जब ब्रिटिश गवर्मेन्ट थी, राजाओं का राज्य था, तो स्टेम्प में भी राजा-रानी के सिवाए और कोई का फोटो नहीं डालते थे। आजकल तो देखो भक्त आदि जो भी होकर गये हैं उनकी भी स्टेम्प बनाते रहते हैं। इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा तो चित्र भी एक ही महाराजा-महारानी का होगा। ऐसे नहीं जो पास्ट देवतायें होकर गये हैं उनके चित्र मिट गये हैं। नहीं, पुराने ते पुराने देवताओं का चित्र बहुत दिल से लेते हैं क्योंकि शिवबाबा के बाद नेक्स्ट हैं देवतायें। यह सब बातें तुम बच्चे धारण कर रहे हो औरों को रास्ता बताने। यह है बिल्कुल नई पढ़ाई। तुमने ही यह सुनी थी और पद पाया था और कोई नहीं जानते। तुमको राजयोग परमपिता परमात्मा सिखला रहे हैं। महाभारत लड़ाई भी मशहूर है। क्या होता है सो तो आगे चल देखेंगे। कोई क्या कहते, कोई क्या कहते। दिन-प्रतिदिन मनुष्यों को टच होता जाता है। कहते भी हैं वर्ल्ड वार लग जायेगी। उससे पहले तुम बच्चों को अपनी पढ़ाई से कर्मातीत अवस्था प्राप्त करनी है। बाकी असुरों और देवताओं की कोई लड़ाई नहीं होती है। इस समय तुम ब्राह्मण सम्प्रदाय हो जो फिर जाकर दैवी सम्प्रदाय बनते हो इसलिए इस जन्म में दैवीगुण धारण कर रहे हो। नम्बरवन दैवीगुण है पवित्रता का। तुम इस शरीर द्वारा कितने पाप करते आये हो। आत्मा को ही कहा जाता है पाप आत्मा, आत्मा इन कर्मेन्द्रियों से कितने पाप करती रहती है। अब हियर नो ईविल..... किसको कहा जाता है? आत्मा को। आत्मा ही कानों से सुनती है। बाप ने तुम बच्चों को स्मृति दिलाई है कि तुम आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले थे, चक्र खाकर आये अब फिर तुमको वही बनना है। यह मीठी स्मृति आने से पवित्र बनने की हिम्मत आती है। तुम्हारी बुद्धि में है हमने कैसे 84 का पार्ट बजाया है। पहले-पहले हम यह थे। यह कहानी है ना। बुद्धि में आना चाहिए 5 हज़ार

वर्ष पहले हम सो देवता थे। हम आत्मा मूलवतन की रहने वाली हैं। आगे यह ज़रा भी ख्याल नहीं था – हम आत्माओं का वह घर है। वहाँ से हम आते हैं पार्ट बजाने। सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी..... बने। अभी तुम ब्रह्मा की सन्तान ब्राह्मण वंशी हो। तुम ईश्वरीय औलाद बने हो। ईश्वर बैठ तुमको शिक्षा देते हैं। यह सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम गुरू भी है। हम उनकी मत से सब मनुष्यों को श्रेष्ठ बनाते हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनों श्रेष्ठ हैं। हम अपने घर जायेंगे फिर पवित्र आत्मायें आकर राज्य करेंगी। यह चक्र है ना। इसको कहा जाता है स्वदर्शन चक्र। यह ज्ञान की बात है। बाप कहते हैं तुम्हारा यह स्वदर्शन चक्र रूकना नहीं चाहिए। फिरते रहने से विकर्म विनाश हो जायेंगे। तुम इस रावण पर जीत पा लेंगे। पाप मिट जायेंगे। अब स्मृति आई है, सिमरण करने के लिए। ऐसे नहीं, माला बैठ सिमरण करनी है। आत्मा में अन्दर ज्ञान है जो तुम बच्चों को और भाई-बहिनों को समझाना है। बच्चे भी मददगार तो बनेंगे ना। तुम बच्चों को ही स्वदर्शन चक्रधारी बनाता हूँ। यह ज्ञान मेरे में है इसलिए मुझे ज्ञान का सागर मनुष्य सृष्टि का बीजरूप कहते हैं। उनको बागवान कहा जाता है। देवी-देवता धर्म का बीज शिवबाबा ने ही लगाया है। अभी तुम देवी-देवता बन रहे हो। यह सारा दिन सिमरण करते रहो तो भी तुम्हारा बहुत कल्याण है। दैवीगुण भी धारण करने हैं। पवित्र भी बनना है। स्त्री-पुरुष दोनों इकट्ठे रहते पवित्र बनते हो। ऐसा धर्म तो होता नहीं। निवृत्ति मार्ग वाले तो वह सिर्फ पुरुष बनते हैं। कहते हैं ना–स्त्री-पुरुष दोनों इकट्ठे पवित्र रह नहीं सकते, मुश्किल है। सतयुग में थे ना। लक्ष्मी-नारायण की महिमा भी गाते हैं।

अभी तुम जानते हो बाबा हमको शूद्र से ब्राह्मण बनाए फिर देवता बनाते हैं। हम ही पूज्य से पुजारी बनेंगे। फिर जब वाममार्ग में जायेंगे तो शिव का मन्दिर बनाए पूजा करेंगे। तुम बच्चों को अपने 84 जन्म का ज्ञान है। बाप ही कहते हैं तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो, मैं बताता हूँ। ऐसे और कोई मनुष्य कह न सके। तुमको अब बाप स्वदर्शन चक्रधारी बनाते हैं। तुम आत्मा पवित्र बन रही हो। शरीर तो यहाँ पवित्र बन न सके। आत्मा पवित्र बन जाती है तो फिर अपवित्र शरीर को छोड़ना पड़ता है। सब आत्माओं को पवित्र होकर जाना है। पवित्र दुनिया अब स्थापन हो रही है। बाकी सब स्वीट होम में चले जायेंगे। यह याद रखना चाहिए।

बाप की याद के साथ-साथ घर की भी याद जरूर चाहिए क्योंकि अब वापिस घर जाना है। घर में ही बाप को याद करना है। भल तुम जानते हो बाबा इस तन में आकर हमको सुना रहे हैं परन्तु बुद्धि परमधाम स्वीट होम से टूटनी नहीं चाहिए। टीचर घर छोड़कर आते हैं, तुमको पढ़ाने। पढ़ाकर फिर बहुत दूर चले जाते हैं। सेकण्ड में कहाँ भी जा सकते हैं। आत्मा कितनी छोटी बिन्दी है। वन्डर खाना चाहिए। बाप ने आत्मा का भी ज्ञान दिया है। यह भी तुम जानते हो स्वर्ग में कोई गन्दी चीज़ होती नहीं, जिसमें हाथ-पांव अथवा कपड़े आदि मैले हों। देवताओं की कैसी सुन्दर पहरवाइस है। कितने फर्स्ट क्लास कपड़े होंगे। धोने की भी दरकार नहीं। इनको देखकर कितनी खुशी होनी चाहिए। आत्मा जानती है भविष्य 21 जन्म हम यह बनेंगे। बस देखते रहना चाहिए। यह चित्र सबके पास होना चाहिए। इसमें बड़ी खुशी चाहिए–हमको बाबा यह बनाते हैं। ऐसे बाबा के हम बच्चे फिर रोते क्यों हैं! हमको कोई फिक्र थोड़ेही होना चाहिए। देवताओं के मन्दिर में जाकर महिमा गाते हैं–सर्वगुण सम्पन्न..... अचतम् केशवम्..... कितने नाम बोलते जाते हैं। यह सब शास्त्रों में लिखा हुआ है जो याद करते हैं। शास्त्रों में किसने लिखा? व्यास ने। या कोई नये-नये भी बनाते रहते हैं। ग्रंथ आगे बहुत छोटा था हाथ से लिखा हुआ। अभी तो कितना बड़ा बना दिया है। जरूर एडीशन किया होगा। अब गुरूनानक तो आते ही हैं धर्म की स्थापना करने। ज्ञान देने वाला तो एक ही है। क्राइस्ट भी आते हैं सिर्फ धर्म की स्थापना करने के लिए। जब सब आ जाते हैं फिर तो वापिस जायेंगे। घर भेजने वाला कौन? क्या क्राइस्ट? नहीं। वह तो भिन्न नाम-रूप में तमोप्रधान अवस्था में है। सतो, रजो, तमो में आते हैं ना। इस समय सब तमोप्रधान हैं। सबकी जड़जड़ीभूत अवस्था है ना। पुनर्जन्म लेते-लेते इस समय सब धर्म वाले आकर तमोप्रधान बने हैं। अब सबको वापिस जाना है जरूर। फिर से चक्र फिरना चाहिए। पहले नया धर्म चाहिए जो सतयुग में था। बाप ही आकर आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। फिर विनाश भी होना है। स्थापना, विनाश फिर पालना। सतयुग में एक ही धर्म होगा। यह स्मृति आती है ना। सारा चक्र स्मृति में लाना है। अभी हम 84 का चक्र पूरा कर वापिस घर जायेंगे। तुम बोलते चलते स्वदर्शन चक्रधारी हो। वह फिर कहते कृष्ण को स्वदर्शन चक्र था, उनसे सबको मारा। अकासुर बकासुर आदि के चित्र दिखाये हैं। परन्तु ऐसी कोई बात है नहीं।

तुम बच्चों को अभी स्वदर्शन चक्रधारी बनकर रहना है क्योंकि स्वदर्शन चक्र से तुम्हारे पाप कटते हैं। आसुरीपना खत्म होता है। देवताओं और असुरों की लड़ाई तो हो न सके। असुर हैं कलियुग में, देवतायें हैं सतयुग में। बीच में है संगमयुग। शास्त्र हैं ही भक्ति मार्ग के। ज्ञान का नाम निशान नहीं। ज्ञान सागर एक ही बाप है सबके लिए। सिवाए बाप के कोई भी आत्मा पवित्र बन वापिस जा नहीं सकती। पार्ट जरूर बजाना है, तो अब अपने 84 के चक्र को भी याद करना है। हम अभी सतयुगी नये जन्म में जाते हैं। ऐसा जन्म फिर कभी नहीं मिलता। शिवबाबा फिर ब्रह्मा बाबा। लौकिक, पारलौकिक और यह है अलौकिक बाबा। इस समय की ही बात है, इनको अलौकिक कहा जाता है। तुम बच्चे उस शिवबाबा को सिमरण करते हो। ब्रह्मा को नहीं। भल ब्रह्मा के मन्दिर में जाकर पूजा करते हैं, वह भी तब पूजते हैं जब सूक्ष्मवतन में सम्पूर्ण अव्यक्त मूर्त है। यह शरीरधारी पूजा के लायक नहीं है। यह तो मनुष्य है ना। मनुष्य की पूजा नहीं होती। ब्रह्मा को दाढ़ी दिखाते हैं तो मालूम पड़े यह यहाँ का है। देवताओं को दाढ़ी होती नहीं। यह सब बातें बच्चों को समझा दी हैं। तुम्हारा नाम बाला है इसलिए तुम्हारा मन्दिर भी बना हुआ है। सोमनाथ का मन्दिर कितना ऊंच ते ऊंच है। सोमरस पिलाया फिर क्या हुआ? फिर यहाँ भी देलवाड़ा मन्दिर देखो। मन्दिर हूबहू यादगार बना हुआ है। नीचे तुम तपस्या कर रहे हो, ऊपर में है स्वर्ग। मनुष्य समझते हैं स्वर्ग कहाँ ऊपर में हैं। मन्दिर में भी नीचे स्वर्ग कैसे बनायें! तो ऊपर छत में बना दिया है। बनाने वाले कोई समझते नहीं हैं। बड़े-बड़े करोड़पति हैं उन्हों को यह समझाना है। तुमको अभी ज्ञान मिला है तो तुम बहुतों को दे सकते हो। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) अन्दर से आसुरीपने को समाप्त करने के लिए चलते-फिरते स्वदर्शन चक्रधारी होकर रहना है। सारा चक्र स्मृति में लाना है।

2) बाप की याद के साथ-साथ बुद्धि परमधाम घर में भी लगी रहे। बाप ने जो स्मृतियां दिलाई हैं उनका सिमरण कर अपना कल्याण करना है।

वरदान:- सर्वगुण सम्पन्न बनने के साथ-साथ किसी एक विशेषता में विशेष प्रभावशाली भव

जैसे डाक्टर्स जनरल बीमारियों की नॉलेज तो रखते ही हैं लेकिन साथ-साथ किसी बात की विशेष नॉलेज में नामीग्रामी हो जाते हैं ऐसे आप बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न तो बनना ही है फिर भी एक विशेषता को विशेष रूप से अनुभव में लाते, सेवा में लाते आगे बढ़ते चलो। जैसे सरस्वती को विद्या की देवी, लक्ष्मी को धन की देवी कहकर पूजते हैं। ऐसे अपने में सर्वगुण, सर्वशक्तियां होते भी एक विशेषता में विशेष रिसर्च कर स्वयं को प्रभावशाली बनाओ।

स्लोगन:- विकारों रूपी सांपों को सहजयोग की शैया बना दो तो सदा निश्चिंत रहेंगे।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

जब मन ही बाप का है तो फिर मन कैसे लगायें! प्यार कैसे करें! यह प्रश्न ही नहीं उठ सकता क्योंकि सदा लवलीन रहते हैं, प्यार स्वरूप, मास्टर प्यार के सागर बन गये, तो प्यार करना नहीं पड़ता, प्यार का स्वरुप हो गये। जितना-जितना ज्ञान सूर्य की किरणें वा प्रकाश बढ़ता है, उतना ही ज्यादा प्यार की लहरें उछलती हैं।

''मीठे बच्चे – तुम्हें सर्विस की बहुत उछल आनी चाहिए, ज्ञान और योग है तो दूसरों को भी सिखाओ, सर्विस की वृद्धि करो''

प्रश्नः- सर्विस में उछल न आने का कारण क्या है? किस विघ्न के कारण उछल नहीं आती?

उत्तरः- सबसे बड़ा विघ्न है क्रिमिनल आई। यह बीमारी सर्विस में उछलने नहीं देती। यह बहुत कड़ी बीमारी है। अगर क्रिमिनल आई ठण्डी नहीं हुई है, गृहस्थ व्यवहार में दोनों पहिये ठीक नहीं चलते तो गृहस्थी का बोझ हो जाता, फिर हल्के हो सर्विस में उछल नहीं सकते।

गीतः- जाग सजनियाँ जाग .....

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे बच्चों ने यह गीत सुना। ऐसे-ऐसे दो-चार अच्छे गीत हैं वह सभी के पास होने चाहिए या टेप में भरने चाहिए। अब यह तो गीत मनुष्यों का बनाया हुआ कहेंगे। ड्रामा अनुसार टच किया हुआ है जो फिर बच्चों को काम आ जाता है। ऐसे-ऐसे गीत बच्चों को सुनने से नशा चढ़ता है। बच्चों को तो नशा चढ़ा रहना चाहिए कि अभी हम नई राजाई स्थापन कर रहे हैं। रावण से ले रहे हैं। जैसे कोई लड़ते हैं तो ख्याल रहता है ना–इनकी राजाई हप कर लेवें। इनका गांव हम अपने हाथ करें। अब वह सब हद के लिए लड़ते हैं। तुम बच्चों की लड़ाई है माया से, जिसका सिवाए तुम ब्राह्मणों के और कोई को पता नहीं। तुम जानते हो हमको इस विश्व पर गुप्त रीति राज्य स्थापन करना है अथवा बाप से वर्सा लेना है। इसको वास्तव में लड़ाई भी नहीं कहेंगे। ड्रामा अनुसार तुम जो सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हो सो फिर सतोप्रधान बनना है। तुम अपने जन्मों को नहीं जानते थे। अभी बाप ने समझाया है। और जो भी धर्म हैं उनको यह नॉलेज मिलने की है नहीं। बाप तुम बच्चों को ही बैठ समझाते हैं। गाया भी जाता है धर्म में ही ताकत है। भारतवासियों को यह पता नहीं है कि हमारा धर्म क्या है। तुमको बाप द्वारा पता पड़ा है कि हमारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म है। बाप आकर फिर तुमको उस धर्म में ट्रांसफर करते हैं। तुम जानते हो हमारा धर्म कितना सुख देने वाला है। तुमको कोई से लड़ाई आदि नहीं करनी है। तुमको तो अपने स्वधर्म में टिकना है और बाप को याद करना है, इसमें भी टाइम लगता है। ऐसे नहीं कि सिर्फ कहने से टिक जाते हैं। अन्दर में यह स्मृति रहनी चाहिए–मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ। हम आत्मा अभी तमोप्रधान पतित बनी हैं। हम आत्मा जब शान्तिधाम में थी तो पवित्र थी, फिर पार्ट बजाते-बजाते तमोप्रधान बनी हैं। अभी फिर पवित्र बन हमको वापिस घर जाना है। बाप से वर्सा लेने लिए अपने को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करना है। तुमको नशा चढ़ेगा हम ईश्वर की सन्तान हैं। बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होते हैं। कितना सहज है - याद से हम पवित्र बन फिर शान्तिधाम में चले जायेंगे। दुनिया इस शान्तिधाम, सुखधाम को भी नहीं जानती। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। ज्ञान सागर की है ही एक गीता, जिसमें सिर्फ नाम बदल लिया है। सर्व का सद्गति दाता, ज्ञान का सागर उस परमपिता परमात्मा को कहा जाता है। और कोई को ज्ञानवान कह नहीं सकते। जब वह ज्ञान दे तब तुम ज्ञानवान बनो। अभी सब हैं भक्तिवान। तुम भी थे। अभी फिर ज्ञानवान बनते जा रहे हो। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार ज्ञान कोई में है, कोई में नहीं है। तो क्या कहेंगे? उस हिसाब से ऊंच पद पा न सकें। बाप सर्विस के लिए कितना उछलते हैं। बच्चों में अभी वह ताकत आई नहीं है जो किसको अच्छी रीति समझायें। ऐसी-ऐसी युक्तियां रचें। भल बच्चे मेहनत कर कान्फ्रेन्स आदि कर रहे हैं, गोपों में कुछ ताकत है, उनको ख्याल रहता है कि संगठन हो जिसमें युक्तियां निकालें। सर्विस वृद्धि को कैसे पाये? माथा मार रहे हैं। नाम भल शक्ति सेना है परन्तु पढ़ी लिखी नहीं हैं। कोई फिर अनपढ़ भी पढ़े लिखे को अच्छा पढ़ाती हैं। बाबा ने समझाया है क्रिमिनल आई बड़ा नुकसान करती है। यह बीमारी बड़ी कड़ी है इसलिए उछलते नहीं हैं। तो बाबा पूछते हैं तुम युगल दोनों पहिये ठीक चल रहे हो? उस तरफ कितनी बड़ी-बड़ी सेनायें हैं, स्त्रियों का भी झुण्ड है, पढ़े लिखे हैं। उन्हों को मदद भी मिलती है। तुम तो हो गुप्त। कोई भी नहीं जानते कि यह ब्रह्माकुमार कुमारियां क्या करते हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। गृहस्थ व्यवहार का बोझा सिर पर रहने से झुके हुए हैं। ब्रह्माकुमार कुमारी कहलाते हैं परन्तु वह क्रिमिनल आई ठण्डी नहीं होती। दोनों पहिये एक जैसे हों बड़ा मुश्किल है। बाबा बच्चों को सर्विस उठाने के लिए समझाते रहते हैं। कोई धनवान हैं - तो भी उछलते नहीं हैं। धन के भूखे हैं, बच्चा नहीं होगा तो भी गोद में लेते हैं। उछल नहीं आती, बाबा हम बैठे हैं। हम बड़ा मकान लेकर देते हैं।

बाबा की नज़र देहली पर विशेष है क्योंकि देहली है कैपीटल, हेड आफिस। बाबा कहते हैं देहली में विशेष सेवा का घेराव डालो। कोई को समझाने के लिए अन्दर घुसना चाहिए। गाया भी हुआ है कि पाण्डवों को कौरवों से 3 पैर पृथ्वी के भी नहीं मिलते थे। यह कौरव अक्षर तो गीता का है। भगवान ने आकर राजयोग सिखाया, उसका नाम गीता रखा है। परन्तु गीता के भगवान को भूल गये हैं इसलिए बाबा घड़ी-घड़ी कहते रहते हैं मुख्य इस प्वाइंट को ही उठाना है। आगे बाबा कहते थे बनारस के विदुत मण्डली वालों को समझाओ। बाबा युक्तियां तो बतलाते रहते हैं। फिर अच्छी रीति कोशिश करनी है। बाप बार-बार समझाते रहते हैं। नम्बरवन देहली में युक्ति रचो। संगठन में भी यह विचार करो। मूल बात कि बड़ा मेला आदि देहली में कैसे करें। वो लोग तो देहली में बहुत ही भूख हडताल आदि करते हैं। तुम तो ऐसा कोई काम नहीं करते हो। लड़ना झगड़ना कुछ नहीं। तुम तो सिर्फ सोये हुए को जगाते हो। देहली वालों को ही मेहनत करनी है। तुम तो जानते हो हम ब्रह्माण्ड के भी मालिक फिर कल्प पहले मुआफ़िक सृष्टि के भी मालिक बनेंगे। यह पक्का है जरूर। विश्व का मालिक बनना ही है। अभी तुमको 3 पैर पृथ्वी के भी कैपीटल में ही चाहिए, जो वहाँ ज्ञान के गोले छोड़ें। नशा चाहिए ना! बड़ों का आवाज चाहिए ना। इस समय भारत सारा गरीब है। गरीबों की सेवा करने के लिए ही बाप आते हैं। देहली में तो बहुत अच्छी सर्विस होनी चाहिए। बाबा इशारा देते रहते हैं। देहली वाले समझते हैं बाबा हमारा अटेन्शन खिंचवाते हैं। आपस में क्षीरखण्ड होना चाहिए। अपना पाण्डवों का किला तो बनायें। देहली में ही बनाना पड़ेगा। इसमें दिमाग बड़ा अच्छा चाहिए। बहुत कुछ कर सकते हैं। वो लोग गाते तो बहुत हैं भारत हमारा देश है, हम ऐसे करेंगे। परन्तु खुद में कुछ भी दम नहीं। सिवाए फारेन की मदद से उठ नहीं सकते। तुमको तो बहुत मदद मिल रही है बेहद के बाप से। इतनी मदद कोई दे न सके। अब जल्दी किला बनाना है। तुम बच्चों को बाप विश्व की बादशाही देते हैं तो हौंसला बहुत चाहिए। झरमुई झगमुई में बहुतों की बुद्धि अटकी रहती है। बन्धनों की आफत है माताओं पर। मेल्स पर कोई बन्धन नहीं। माताओं को अबला कहा जाता है। पुरूष बलवान होते हैं। पुरूष शादी करते हैं तो उनको बल दिया जाता है - तुम ही गुरू ईश्वर सब कुछ हो। स्त्री तो जैसे पूँछ है। पिछाड़ी में लटकने वाली तो सचमुच पूँछ होकर ही लटक पड़ती है। पति में मोह, बच्चों में मोह, पुरूषों को इतना मोह नहीं रहता है। उनकी तो एक जुत्ती गई तो दूसरी तीसरी ले लेते। आदत पड़ गई है। बाबा तो समझाते रहते हैं - यह-यह अखबार में डालो। बच्चों को बाप का शो करना है। यह समझाना तुम्हारा काम है। बाबा के साथ तो दादा भी है। तो यह जा नहीं सकते। कहेंगे शिवबाबा यह बताओ, यह हमारे ऊपर आफतें आई हैं, इसमें आप राय दो। ऐसी-ऐसी बातें पूछते हैं। बाप तो आये हैं पतितों को पावन बनाने। बाप कहते हैं तुम बच्चों को सब नॉलेज मिलती है। कोशिश कर आपस में मिलकर राय करो। तुम बच्चों को अभी विहंग मार्ग की सेवा का तमाशा दिखाना चाहिए। चींटी मार्ग की सर्विस तो चलती आ रही है। लेकिन ऐसा तमाशा दिखाओ जो बहुतों का कल्याण हो जाए। बाबा ने यह कल्प पहले भी समझाया था, अब भी समझाते हैं। बहुतों की बुद्धि कहाँ न कहाँ फँसी हुई है। उमंग नहीं। झट देह-अभिमान आ जाता है। देह-अभिमान ने ही सत्यानाश की है। अब बाप सत्या ऊंच करने की कितनी सहज बात बताते हैं। बाप को याद करो तो शक्ति आये। नहीं तो शक्ति आती नहीं। भल सेन्टर सम्भालते हैं, परन्तु नशा नहीं क्योंकि देह-अभिमान है। देही-अभिमानी बनें तो नशा चढ़े। हम किस बाप के बच्चे हैं। बाप कहते हैं जितना तुम देही-अभिमानी होंगे उतना बल आयेगा। आधाकल्प का देह-अभिमान का नशा है तो देही-अभिमानी बनने में बड़ी मेहनत लगती है। ऐसे नहीं बाबा ज्ञान का सागर है, हमने भी ज्ञान उठाया है, बहुतों को समझाते हैं परन्तु याद का जौहर भी चाहिए। ज्ञान की तलवार है। याद की फिर यात्रा है। दोनों अलग चीज़ हैं। ज्ञान में याद की यात्रा का जौहर चाहिए। वह नहीं है तो काठ की तलवार हो जाती है। सिक्ख लोग तलवार का कितना मान रखते हैं। वह तो हिंसक थी, जिससे लड़ाई की। वास्तव में गुरू लोग लड़ाई थोड़ेही कर सकते हैं। गुरू तो अहिंसक चाहिए ना। लड़ाई से थोड़ेही सद्गति होती है। तुम्हारी तो है योग की बात। याद के बल बिगर ज्ञान तलवार काम नहीं करेगी। क्रिमिनल आई बड़ा नुकसान करने वाली है। आत्मा कानों से सुनती है, बाप कहते हैं तुम याद में मस्त रहो तो सर्विस बढ़ती जायेगी। कभी-कभी कहते हैं बाबा सम्बन्धी सुनते नहीं हैं। बाबा कहते हैं याद की यात्रा में कच्चे हो इसलिए ज्ञान तलवार काम नहीं करती है। याद की मेहनत करो। यह है गुप्त मेहनत। मुरली चलाना तो प्रत्यक्ष है। याद में ही गुप्त मेहनत है, जिससे शक्ति मिलती है। ज्ञान से शक्ति नहीं मिलती। तुम पतित से पावन याद के बल से बनते हो। कमाई का ही पुरूषार्थ करना है।

बच्चों को याद जब एकरस रहती है, अवस्था अच्छी है तो बहुत खुशी रहती है और जब याद ठीक नहीं, किसी बात में घुटका खाते हैं तो खुशी गायब हो जाती है। क्या स्टूडेन्ट को टीचर याद नहीं पड़ता होगा। यहाँ तो घर में रहते, सब कुछ करते टीचर को याद करना है। इस टीचर से तो बहुत-बहुत ऊंच पद मिलता है। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। टीचर की याद रहे तो भी बाप और गुरू याद जरूर आयेंगे। कितने प्रकार से समझाते रहते हैं। परन्तु घर में फिर धन-दौलत, बाल-बच्चे आदि देख भूल जाते हैं। समझाते तो बहुत हैं। तुमको रूहानी सर्विस करनी है। बाप की याद ही है ऊंच ते ऊंच सेवा। मन्सा-वाचा-कर्मणा बुद्धि में बाप की याद रहे। मुख से भी ज्ञान की बातें सुनाओ। किसको दु:ख नहीं देना है। कोई अकर्तव्य नहीं करना है। पहली बात अल्फ न समझने से और कुछ भी समझेंगे नहीं। पहले अल्फ पक्का कराओ तब तक आगे बढ़ना नहीं चाहिए। शिवबाबा राजयोग सिखलाकर विश्व का मालिक बनाते हैं। इस छी-छी दुनिया में माया का शो बहुत है। कितना फैशन हो गया है। छी-छी दुनिया से नफ़रत आनी चाहिए। एक बाप को याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। पवित्र बन जायेंगे। टाइम वेस्ट नहीं करो। अच्छी रीति धारणा करो। माया दुश्मन बहुतों का अक्ल चट कर देती है। कमान्डर गफ़लत करते हैं तो उनको डिसमिस भी करते हैं। खुद कमान्डर को भी लज्जा आती है फिर रिजाइन भी कर देते हैं। यहाँ भी ऐसे होता है। अच्छे-अच्छे कमान्डर्स कभी फाँ हो जाते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) याद की गुप्त मेहनत करनी है। याद की मस्ती में रहने से सर्विस स्वत: ही बढ़ती रहेगी। मन्सा-वाचा-कर्मणा याद में रहने का पुरूषार्थ करना है।

2) मुख से ज्ञान की ही बातें सुनानी है, किसको दु:ख नहीं देना है। कोई भी अकर्तव्य नहीं करना है। देही-अभिमानी बनने की मेहनत करनी है।

वरदान:- लोहे समान आत्मा को पारस बनाने वाले मास्टर पारसनाथ भव

आप सब पारसनाथ बाप के बच्चे मास्टर पारसनाथ हो–तो कैसी भी लोहे समान आत्मा हो लेकिन आप के संग से लोहा भी पारस बन जाए। यह लोहा है–ऐसा कभी नहीं सोचना। पारस का काम ही है लोहे को पारस बनाना। यही लक्ष्य और लक्षण सदा स्मृति में रख हर संकल्प, हर कर्म करना, तब अनुभव होगा कि मुझ आत्मा के लाइट की किरणें अनेक आत्माओं को गोल्डन बनाने की शक्ति दे रही हैं।

स्लोगन:- हर कार्य साहस से करो तो सर्व का सम्मान प्राप्त होगा।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

परमात्म प्यार इस श्रेष्ठ ब्राह्मण जन्म का आधार है। कहते भी हैं प्यार है तो जहान है, जान है। प्यार नहीं तो बेजान, बेजहान हैं। प्यार मिला अर्थात् जहान मिला। दुनिया एक बूँद की प्यासी है और आप बच्चों का यह प्रभु प्यार प्रापर्टी है। इसी प्रभु प्यार से पलते हो अर्थात् ब्राह्मण जीवन में आगे बढ़ते हो। तो सदा प्यार के सागर में लवलीन रहो।

''मीठे बच्चे – अकाल मूर्त बाप का बोलता-चलता तख्त यह (ब्रह्मा) है, जब वह ब्रह्मा में आते हैं तब तुम ब्राह्मणों को रचते हैं''

प्रश्नः- अक्लमंद बच्चे किस राज़ को समझकर ठीक रीति से समझा सकते हैं?

उत्तरः- ब्रह्मा कौन है और वह ब्रह्मा सो विष्णु कैसे बनते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा यहाँ है, वह कोई देवता नहीं। ब्रह्मा ने ही ब्राह्मणों द्वारा ज्ञान यज्ञ रचा है.... यह सब राज़ अक्लमंद बच्चे ही समझकर समझा सकते हैं। घोड़ेसवार और प्यादे तो इसमें मूँझ जायेंगे।

गीतः- ओम् नमो शिवाए.....

ओम् शान्ति। भक्ति में महिमा करते हैं एक की। महिमा तो गाते हैं ना। परन्तु न उनको जानते हैं, न उनके यथार्थ परिचय को जानते हैं। अगर यथार्थ महिमा जानते तो वर्णन जरूर करते। तुम बच्चे जानते हो ऊंच ते ऊंच है भगवान। चित्र मुख्य है उनका। ब्रह्मा की सन्तान भी होगी ना। तुम सब ब्राह्मण ठहरे। ब्रह्मा को भी ब्राह्मण जानेंगे और कोई नहीं जानते, इसलिए मूँझते हैं। यह ब्रह्मा कैसे हो सकता। ब्रह्मा को दिखाया है सूक्ष्मवतनवासी। अब प्रजापिता सूक्ष्मवतन में हो न सके। वहाँ रचना होती नहीं। इस पर तुम्हारे साथ बहुत वाद-विवाद भी करते हैं। समझाना चाहिए – ब्रह्मा और ब्राह्मण हैं तो सही ना। जैसे क्राइस्ट से क्रिश्चियन अक्षर निकला है। बुद्ध से बौद्धी, इब्राहम से इस्लामी। वैसे प्रजापिता ब्रह्मा से ब्राह्मण नामीग्रामी हैं। आदि देव ब्रह्मा। वास्तव में ब्रह्मा को देवता नहीं कह सकते। यह भी रांग है। ब्राह्मण जो अपने को कहलाते हैं उनसे पूछना चाहिए ब्रह्मा कहाँ से आया? यह किसकी रचना है। ब्रह्मा को किसने क्रियेट किया? कभी कोई बता न सके, जानते ही नहीं। यह भी तुम बच्चे जानते हो – शिवबाबा का जो रथ है, जिसमें प्रवेश करते हैं। यह है ही वह जो आत्मा श्रीकृष्ण प्रिन्स बना था। 84 जन्मों के बाद यह (ब्रह्मा) आकर बने हैं। जन्मपत्री का नाम तो इनका अपना अलग होगा ना क्योंकि है तो मनुष्य ना। फिर इनमें प्रवेश करने से इनका नाम ब्रह्मा रख देते हैं। यह भी बच्चे जानते हैं – वही ब्रह्मा, विष्णु का रूप है। नारायण बनते हैं ना। 84 जन्मों के अन्त में भी साधारण रथ है ना। यह (शरीर) सब आत्माओं के रथ हैं। अकालमूर्त का बोलता चलता तख्त है। सिक्ख लोगों ने फिर वह तख्त बना दिया है। उसको अकालतख्त कहते हैं। यह तो अकाल तख्त सब हैं। आत्मायें सब अकालमूर्त हैं। ऊंच ते ऊंच भगवान को यह रथ तो चाहिए ना। रथ में प्रवेश हो बैठ नॉलेज देते हैं। उनको ही नॉलेजफुल कहा जाता है। रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज देते हैं। नॉलेजफुल का अर्थ कोई अन्तर्यामी वा जानी जाननहार नहीं है। सर्वव्यापी का अर्थ दूसरा है, जानी जाननहार का अर्थ दूसरा है। मनुष्य तो सबको मिलाकर जो आता है सो कहते जाते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो हम सब ब्राह्मण ब्रह्मा की औलाद हैं। हमारा कुल सबसे ऊंच है। वो लोग देवताओं को ऊंच रखते हैं क्योंकि सतयुग आदि में देवता हुए हैं। प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद ब्राह्मण होते हैं – यह कोई जानते नहीं सिवाए तुम बच्चों के। उनको पता भी कैसे पड़े। जबकि ब्रह्मा को सूक्ष्मवतन में समझ लेते हैं। वह जिस्मानी ब्राह्मण अलग हैं जो पूजा करते हैं, धामा खाते हैं। तुम तो धामा आदि नहीं खाते हो। ब्रह्मा का राज़ अभी अच्छी रीति समझाना पड़ता है। बोलो और बातों को छोड़ बाप जिससे पतित से पावन बनना है, पहले उनको तो याद करो। फिर यह बातें भी समझ जायेंगे। थोड़ी बात में संशय पड़ने से बाप को ही छोड़ देते हैं। पहली मुख्य बात है अल्फ और बे। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। मैं जरूर किसमें तो आऊंगा ना। उनका नाम भी होना चाहिए। उनको आकर रचता हूँ। ब्रह्मा के लिए तुमको समझाने का बहुत अक्ल चाहिए। प्यादे, घोड़ेसवार मूँझ पड़ते हैं। अवस्था अनुसार समझाते हैं ना। प्रजापिता ब्रह्मा तो यहाँ है। ब्राह्मणों द्वारा ज्ञान यज्ञ रचते हैं तो जरूर ब्राह्मण ही चाहिए ना। प्रजापिता ब्रह्मा भी यहाँ चाहिए, जिससे ब्राह्मण हों। ब्राह्मण लोग कहते भी हैं हम ब्रह्मा की सन्तान हैं। समझते हैं परम्परा से हमारा कुल चला आता है। परन्तु ब्रह्मा कब था वह पता नहीं है। अभी तुम ब्राह्मण हो। ब्राह्मण वह जो ब्रह्मा की सन्तान हों। वह तो बाप के आक्यूपेशन को जानते ही नहीं। भारत में पहले ब्राह्मण ही होते हैं। ब्राह्मणों का है ऊंच ते ऊंच कुल। वह ब्राह्मण भी समझते हैं हमारा कुल जरूर ब्रह्मा से ही निकला होगा। परन्तु कैसे, कब... वह वर्णन नहीं कर सकते। तुम समझते हो – प्रजापिता ब्रह्मा ही ब्राह्मणों को रचते हैं। जिन ब्राह्मणों को ही फिर देवता बनना है। ब्राह्मणों को आकर बाप पढ़ाते हैं। ब्राह्मणों की भी डिनायस्टी नहीं है। ब्राह्मणों का कुल है, डिनायस्टी तब कहा जाए जब राजा-रानी बनें। जैसे सूर्यवंशी डिनायस्टी। तुम

ब्राह्मणों में राजा तो बनते नहीं। वह जो कहते हैं कौरवों और पाण्डवों का राज्य था, दोनों रांग हैं। राजाई तो दोनों को नहीं है। प्रजा का प्रजा पर राज्य है, उनको राजधानी नहीं कहेंगे। ताज है नहीं। बाबा ने समझाया था – पहले डबल सिरताज भारत में थे, फिर सिंगल ताज। इस समय तो नो ताज। यह भी अच्छी रीति सिद्धकर बताना है, जो बिल्कुल अच्छी धारणा वाला होगा वह अच्छी रीति समझा सकेंगे। ब्रह्मा पर ही जास्ती बात समझाने की होती है। विष्णु को भी नहीं जानते। यह भी समझाना होता है। वैकुण्ठ को विष्णुपुरी कहा जाता है अर्थात् लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। श्रीकृष्ण प्रिन्स होगा तो कहेंगे ना – हमारा बाबा राजा है। ऐसे नहीं कि श्रीकृष्ण का बाप राजा नहीं हो सकता। श्रीकृष्ण प्रिन्स कहलाया जाता है तो जरूर राजा के पास जन्म हुआ है। साहूकार पास जन्म ले तो प्रिन्स थोड़ेही कहलायेंगे। राजा के पद और साहूकार के पद में रात-दिन का फ़र्क हो जाता है। श्रीकृष्ण के बाप राजा का नाम ही नहीं है। श्रीकृष्ण का कितना नाम बाला है। बाप का ऊंच पद नहीं कहेंगे। वह सेकण्ड क्लास का पद है जो सिर्फ निमित्त बनते हैं श्रीकृष्ण को जन्म देने। ऐसे नहीं कि श्रीकृष्ण की आत्मा से वह ऊंच पढ़ा हुआ है। नहीं। श्रीकृष्ण ही सो फिर नारायण बनते हैं। बाकी बाप का नाम ही गुम हो जाता है। है जरूर ब्राह्मण। परन्तु पढ़ाई में श्रीकृष्ण से कम है। श्रीकृष्ण की आत्मा की पढ़ाई अपने बाप से ऊंच थी, तब तो इतना नाम होता है। श्रीकृष्ण का बाप कौन था – यह जैसे किसको पता नहीं। आगे चल मालूम पड़ेगा। बनना तो यहाँ से ही है। राधे के भी माँ-बाप तो होंगे ना। परन्तु उनसे राधे का नाम जास्ती है क्योंकि माँ-बाप कम पढ़े हुए हैं। राधे का नाम उनसे ऊंच हो जाता है। यह हैं डीटेल की बातें – बच्चों को समझाने के लिए। सारा मदार पढ़ाई पर है। ब्रह्मा पर भी समझाने का अक्ल चाहिए। वही श्रीकृष्ण जो है उनकी आत्मा ही 84 जन्म भोगती है। तुम भी 84 जन्म लेते हो। सब इकट्ठे तो नहीं आयेंगे। जो पढ़ाई में पहले-पहले होते हैं, वहाँ भी वह पहले आयेंगे। नम्बरवार तो आते हैं ना। यह बड़ी महीन बातें हैं। कम बुद्धि वाले तो धारणा कर न सकें। नम्बरवार जाते हैं। तुम ट्रांसफर होते हो नम्बरवार। कितनी बड़ी क्यू है, जो पिछाड़ी में जायेगी। नम्बरवार अपने-अपने स्थान पर जाकर निवास करेंगे। सबका स्थान बना हुआ है। यह बड़ा वन्डरफुल खेल है। परन्तु कोई समझते नहीं हैं। इनको कहा जाता है कांटों का जंगल। यहाँ सब एक-दो को दु:ख देते रहते हैं। वहाँ तो नैचुरल सुख है। यहाँ है आर्टीफिशियल सुख। रीयल सुख एक बाप ही देने वाला है। यहाँ है काग विष्टा के समान सुख। दिन-प्रतिदिन तमोप्रधान बनते जाते हैं। कितना दु:ख है। कहते हैं – बाबा माया के तूफान बहुत आते हैं। माया उलझा देती है, दु:ख की फीलिंग बहुत आती है। सुखदाता बाप के बच्चे बनकर भी अगर दु:ख की फीलिंग आती है तो बाप कहते – बच्चे, यह तुम्हारा बड़ा कर्मभोग है। जब बाप मिला तो दु:ख की फीलिंग नहीं आनी चाहिए। जो पुराने कर्मभोग हैं उसे योगबल से चुक्तू करो। अगर योगबल नहीं होगा तो मोचरा खाकर चुक्तू करना पड़ेगा। मोचरा और मानी तो अच्छा नहीं। (सज़ा खाकर पद पाना अच्छा नहीं) पुरूषार्थ करना चाहिए नहीं तो फिर ट्रिब्युनल बैठती है। प्रजा तो ढेर है। यह तो ड्रामा अनुसार सब गर्भजेल में बहुत सज़ायें खाते हैं। आत्मायें भटकती भी बहुत हैं। कोई-कोई आत्मा बहुत नुकसान करती है – जब कोई में अशुद्ध आत्मा का प्रवेश होता है तो कितना हैरान होते हैं। नई दुनिया में यह बातें होती नहीं। अभी तुम पुरूषार्थ करते हो – हम नई दुनिया में जायें। वहाँ जाकर नये-नये महल बनाने पड़ेंगे। राजाओं के पास जन्म लेते हो, जैसे श्रीकृष्ण जन्म लेते हैं। परन्तु इतने महल आदि सब पहले से थोड़ेही होते हैं। वह तो फिर बनाने पड़े। कौन रचते हैं, जिनके पास जन्म लेते हैं। गाया हुआ भी हैं – राजाओं के पास जन्म होता है। क्या होता है सो तो आगे चल देखना है। अभी थोड़ेही बाबा बतायेंगे। वह फिर आर्टीफिशियल नाटक हो जाए, इसलिए बताते कुछ भी नहीं हैं। ड्रामा में बताने की नूँध नहीं। बाप कहते हैं मैं भी पार्टधारी हूँ। आगे की बातें पहले से ही जानता होता तो बहुत कुछ बतलाता। बाबा अन्तर्यामी होता तो पहले से बताता। बाप कहते हैं – नहीं, ड्रामा में जो होता है, उनको साक्षी हो देखते चलो और साथ-साथ याद की यात्रा में मस्त रहो। इसमें ही फेल होते हैं। ज्ञान कभी कम-जास्ती नहीं होता। याद की यात्रा ही कभी कम, कभी जास्ती होती है। ज्ञान तो जो मिला है सो है ही। याद की यात्रा में कभी उमंग रहता है, कभी ढीला। नीचे-ऊपर यात्रा होती है। ज्ञान में तुम सीढ़ी नहीं चढ़ते। ज्ञान को यात्रा नहीं कहा जाता। यात्रा है याद की। बाप कहते हैं याद में रहने से तुम सेफ्टी में रहेंगे। देह-अभिमान में आने से तुम बहुत धोखा खाते हो। विकर्म कर देते हो। काम महाशत्रु है, उनमें फेल हो पड़ते हैं। क्रोध आदि की बाबा इतनी बात नहीं करते।

ज्ञान से या तो है सेकण्ड में जीवनमुक्ति या तो फिर कहते सागर को स्याही बनाओ तो भी पूरा नहीं हो। या तो सिर्फ कहते

हैं अल्फ को याद करो। याद करना किसको कहा जाता, यह थोड़ेही जानते हैं। कहते हैं कलियुग से हमको सतयुग में ले चलो। पुरानी दुनिया में है दु:ख। देखते हो बरसात में कितने मकान गिरते रहते हैं, कितने डूब जाते हैं। बरसात आदि यह नैचुरल कैलेमिटीज भी होंगी। यह सब अचानक होता रहेगा। कुम्भकरण की नींद में सोये हुए हैं। विनाश के समय जागेंगे फिर क्या कर सकेंगे! मर जायेंगे। धरती भी जोर से हिलती है। तूफान बरसात आदि सब होता है। बॉम्ब्स भी फेंकते हैं। परन्तु यहाँ एडीशन है सिविलवार..... रक्त की नदियां गाई हुई हैं। यहाँ मारामारी होती है। एक-दो पर केस करते रहते हैं। सो लड़ेंगे भी जरूर। सब हैं निधनके, तुम हो धनी के। कोई लड़ाई आदि तुमको नहीं करनी है। ब्राह्मण बनने से तुम धनी के बन गये। धनी बाप को या पति को कहते हैं। शिवबाबा तो पतियों का पति है। सगाई हो जाती है तो फिर कहते हैं हम ऐसे पति के साथ कब मिलेंगी। आत्मायें कहती हैं – शिवबाबा, हमारी तो आपसे सगाई हो गई। अब आपसे हम मिलें कैसे? कोई तो सच लिखते हैं, कोई तो बहुत छिपाते हैं। सच्चाई से लिखते नहीं कि बाबा हमसे यह भूल हो गई। क्षमा करो। अगर कोई विकार में गिरा तो बुद्धि में धारणा हो नहीं सकती। बाबा कहते हैं तुम ऐसी कड़ी भूल करेंगे तो चकनाचूर हो जायेंगे। तुमको हम गोरा बनाने के लिए आये हैं, फिर तुम काला मुँह कैसे करते हो। भल स्वर्ग में आयेंगे, पाई पैसे का पद पायेंगे। राजधानी स्थापन हो रही है ना। कोई तो हार खाकर जन्म-जन्मान्तर पद भ्रष्ट हो जाते हैं। कहेंगे बाप से तुम यह पद पाने आये हो, बाप इतना ऊंच बनें, हम बच्चे फिर प्रजा थोड़ेही बनेंगे। बाप गद्दी पर हो और बच्चा दास-दासी बने, कितनी लज्जा की बात है। पिछाड़ी में तुमको सब साक्षात्कार होंगे। फिर बहुत पछतायेंगे। नाहेक ऐसा किया। संन्यासी भी ब्रह्मचर्य में रहते हैं, तो विकारी सब उनको माथा टेकते हैं। पवित्रता का मान है। किसकी तकदीर में नहीं है तो बाप आकर पढ़ाते फिर भी गफ़लत करते रहते हैं। याद ही नहीं करते। बहुत विकर्म बन जाते हैं।

तुम बच्चों पर अब है ब्रहस्पति की दशा। इससे ऊंच दशा और कोई होती नहीं। दशायें चक्र लगाती रहती हैं तुम बच्चों पर। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) इस ड्रामा की हर सीन को साक्षी होकर देखना है, एक बाप की याद में मस्त रहना है। याद की यात्रा में कभी उमंग कम न हो।

2) पढ़ाई में कभी गफ़लत नहीं करना, अपनी ऊंच तकदीर बनाने के लिए पवित्र जरूर बनना है। हार खाकर जन्म-जन्मान्तर के लिए पद भ्रष्ट नहीं करना है।

वरदान:- सच्ची सेवा द्वारा अविनाशी, अलौकिक खुशी के सागर में लहराने वाली खुशनसीब आत्मा भव

जो बच्चे सेवाओं में बापदादा और निमित्त बड़ों के स्नेह की दुआयें प्राप्त करते हैं उन्हें अन्दर से अलौकिक, आत्मिक खुशी का अनुभव होता है। वे सेवाओं द्वारा आन्तरिक खुशी, रूहानी मौज, बेहद की प्राप्ति का अनुभव करते हुए सदा खुशी के सागर में लहराते रहते हैं। सच्ची सेवा सर्व का स्नेह, सर्व द्वारा अविनाशी सम्मान और खुशी की दुआयें प्राप्त होने की खुशनसीबी के श्रेष्ठ भाग्य का अनुभव कराती है। जो सदा खुश हैं वही खुशनसीब हैं।

स्लोगन:- सदा हर्षित व आकर्षण मूर्त बनने के लिए सन्तुष्टमणी बनो।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

कर्म में, वाणी में, सम्पर्क व सम्बन्ध में लव और स्मृति व स्थिति में लवलीन रहना है, जो जितना लवली होगा, वह उतना ही लवलीन रह सकता है। इस लवलीन स्थिति को मनुष्यात्माओं ने लीन की अवस्था कह दिया है। बाप में लव खत्म करके सिर्फ लीन शब्द को पकड़ लिया है। आप बच्चे बाप के लव में लवलीन रहेंगे तो औरों को भी सहज आप-समान व बाप-समान बना सकेंगे।

''मीठे बच्चे – बाप से ऑनेस्ट रहो, अपना सच्चा-सच्चा चार्ट रखो, किसी को भी दु:ख न दो, एक बाप की श्रेष्ठ मत पर चलते रहो''

प्रश्नः- जो पूरे 84 जन्म लेने वाले है, उनका पुरुषार्थ क्या होगा?

उत्तरः- उनका विशेष पुरुषार्थ नर से नारायण बनने का होगा। अपनी कर्मेन्द्रियों पर उनका पूरा कन्ट्रोल होगा। उनकी आंखें क्रिमिनल नहीं होगी। अगर अब तक भी किसी को देखने से विकारी ख्यालात आते हैं, क्रिमिनल आई होती है तो समझो पूरे 84 जन्म लेने वाली आत्मा नहीं है।

गीतः- इस पाप की दुनिया से.....

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चे जानते हैं कि यह पाप की दुनिया है। पुण्य की दुनिया को भी मनुष्य जानते हैं। मुक्ति और जीवनमुक्ति पुण्य की दुनिया को कहा जाता है। वहाँ पाप होता नहीं। पाप होता है दु:खधाम रावण राज्य में। दु:ख देने वाले रावण को भी देखा है, रावण कोई चीज़ नहीं है फिर भी एफीजी जलाते हैं। बच्चे जानते हैं हम इस समय रावण राज्य में हैं, परन्तु किनारा किया हुआ है। हम अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं। बच्चे जब यहाँ आते हैं तो बुद्धि में यह है – हम उस बाप के पास जाते हैं जो हमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। सुखधाम का मालिक बनाते हैं। सुखधाम का मालिक बनाने वाला कोई ब्रह्मा नहीं है, कोई भी देहधारी नहीं है। वह है ही शिवबाबा, जिसको देह नहीं है। देह तुमको भी नहीं थी, परन्तु तुम फिर देह लेकर जन्म-मरण में आते हो तो तुम समझते हो हम बेहद के बाप पास जाते हैं। वह हमको श्रेष्ठ मत देते हैं। तुम ऐसा पुरुषार्थ करने से स्वर्ग का मालिक बन सकेंगे। स्वर्ग को तो सब याद करते हैं। समझते हैं नई दुनिया जरूर है। वह भी जरूर कोई स्थापन करने वाला है। नर्क भी कोई स्थापन करते हैं। तुम्हारा सुखधाम का पार्ट कब पूरा होता है, वह भी तुम जानते हो। फिर रावण राज्य में तुम दु:खी होने लगते हो। इस समय यह है दु:खधाम। भल कितने भी करोड़पति, पदमपति हो परन्तु पतित दुनिया तो जरूर कहेंगे ना। यह कंगाल दुनिया, दु:खी दुनिया है। भल कितने भी बड़े-बड़े मकान हैं, सुख के सब साधन हैं तो भी कहेंगे पतित पुरानी दुनिया है। विषय वैतरणी नदी में गोता खाते रहते हैं। यह भी नहीं समझते कि विकार में जाना पाप है। कहते हैं इसके बिगर सृष्टि वृद्धि को कैसे पायेगी। बुलाते भी हैं – हे भगवान, हे पतित-पावन आकर इस पतित दुनिया को पावन बनाओ। आत्मा कहती है शरीर द्वारा। आत्मा ही पतित बनी है तब तो पुकारती है। स्वर्ग में एक भी पतित होता नहीं।

तुम बच्चे जानते हो कि संगमयुग पर जो अच्छे पुरुषार्थी हैं वही समझते हैं कि हमने 84 जन्म लिए हैं फिर इन लक्ष्मी-नारायण के साथ ही हम सतयुग में राज्य करेंगे। एक ने तो 84 जन्म नहीं लिया है ना। राजा के साथ प्रजा भी चाहिए। तुम ब्राह्मणों में भी नम्बरवार हैं। कोई राजा-रानी बनते हैं, कोई प्रजा। बाप कहते हैं बच्चे अभी ही तुम्हें दैवीगुण धारण करने हैं। यह आंखें क्रिमिनल हैं, कोई को देखने से विकार की दृष्टि जाती है तो उनके 84 जन्म नहीं होंगे। वह नर से नारायण बन नहीं सकेंगे। जब इन आंखों पर जीत पा लेंगे तब कर्मातीत अवस्था होगी। सारा मदार आंखों पर है, आंखें ही धोखा देती हैं। आत्मा इन खिड़कियों से देखती है, इसमें तो डबल आत्मा है। बाप भी इन खिड़कियों से देख रहे हैं। हमारी भी दृष्टि आत्मा पर जाती है। बाप आत्मा को ही समझाते हैं। कहते हैं मैंने भी शरीर लिया है, तब बोल सकते हैं। तुम जानते हो बाबा हमको सुख की दुनिया में ले जाते हैं। यह है रावण राज्य। तुमने इस पतित दुनिया से किनारा कर लिया है। कोई बहुत आगे बढ़ गये, कोई पिछाड़ी में हट गये। हर एक कहते भी हैं पार लगाओ। अब पार तो जायेंगे सतयुग में। परन्तु वहाँ पद ऊंच पाना है तो पवित्र बनना है। मेहनत करनी है। मुख्य बात है बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों। यह है पहली सब्जेक्ट।

तुम अभी जानते हो हम आत्मा एक्टर हैं। पहले-पहले हम सुखधाम में आये फिर अब दु:खधाम में आये हैं। अब बाप फिर सुखधाम में ले जाने आये हैं। कहते हैं मुझे याद करो और पवित्र बनो। कोई को भी दु:ख न दो। एक-दो को बहुत दु:ख देते रहते हैं। कोई में काम का भूत आया, कोई में क्रोध आया, हाथ चलाया। बाप कहेंगे यह तो दु:ख देने वाली पाप आत्मा है। पुण्य आत्मा कैसे बनेंगे। अब तक पाप करते रहते हैं। यह तो नाम बदनाम करते हैं। सब क्या कहेंगे! कहते हैं

हमको भगवान पढ़ाते हैं! हम मनुष्य से देवता विश्व के मालिक बनते हैं! वह फिर ऐसे काम करते हैं क्या! इसलिए बाबा कहते हैं रोज़ रात में अपने को देखो। अगर सपूत बच्चे हैं तो चार्ट भेजें। भल कोई चार्ट लिखते हैं, परन्तु साथ में यह लिखते नहीं कि हमने किसको दु:ख दिया वा यह भूल की। याद करते रहे और कर्म उल्टे करते रहे, यह भी ठीक नहीं। उल्टे कर्म करते तब हैं जब देह-अभिमानी बन पड़ते हैं।

यह चक्र कैसे फिरता है – यह तो बहुत सहज है। एक दिन में भी टीचर बन सकते हैं। बाप तुमको 84 का राज़ समझाते हैं, टीच करते हैं। फिर जाकर उस पर मनन करना है। हमने 84 जन्म कैसे लिये? उस सिखलाने वाले टीचर से दैवीगुण भी जास्ती धारण कर लेते हैं। बाबा सिद्ध कर बतला सकते हैं। दिखाते हैं बाबा हमारा चार्ट देखो। हमने ज़रा भी किसको दु:ख नहीं दिया है। बाबा कहेंगे यह बच्चा तो बड़ा मीठा है। अच्छी खुशबू निकाल रहे हैं। टीचर बनना तो सेकण्ड का काम है। टीचर से भी स्टूडेन्ट याद की यात्रा में तीखे निकल जाते हैं। तो टीचर से भी ऊंच पद पायेंगे। बाबा तो पूछते हैं, किसको टीच करते हो? रोज़ शिव के मन्दिर में जाकर टीच करो। शिवबाबा कैसे आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं? स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। समझाना बहुत ही सहज है। बाबा को चार्ट भेज देते हैं – बाबा हमारी अवस्था ऐसी है। बाबा पूछते हैं बच्चे कोई विकर्म तो नहीं करते हो? क्रिमिनल आई उल्टा-सुल्टा काम तो नहीं कराती है? अपने मैनर्स, कैरेक्टर्स देखने हैं। चाल-चलन का सारा मदार आंखों पर है। आंखें अनेक प्रकार से धोखा देती हैं। ज़रा भी बिगर पूछे चीज़ उठाकर खाया तो वह भी पाप बन जाता है क्योंकि बिगर छुट्टी के उठाई ना। यहाँ कायदे बहुत हैं। शिवबाबा का यज्ञ है ना। चार्ज वाली के बिगर पूछे चीज़ खा नहीं सकते। एक खायेंगे तो और भी ऐसे करने लग पड़ेंगे। वास्तव में यहाँ कोई चीज़ ताले के अन्दर रखने की दरकार नहीं है। लॉ कहता है इस घर के अन्दर, किचन के सामने कोई भी अपवित्र आने नहीं चाहिए। बाहर में तो अपवित्र-पवित्र का सवाल ही नहीं। परन्तु पतित तो अपने को कहते हैं ना। सब पतित हैं। कोई वल्लभाचारी को अथवा शंकराचार्य को हाथ लगा न सकें क्योंकि वह समझते हैं हम पावन, यह पतित हैं। भल यहाँ सबके शरीर पतित हैं तो भी पुरुषार्थ अनुसार विकारों का संन्यास करते हैं। तो निर्विकारी के आगे विकारी मनुष्य माथा टेकते हैं। कहते हैं यह बड़ा स्वच्छ धर्मात्मा मनुष्य है। सतयुग में तो मलेच्छ होते नहीं। है ही पवित्र दुनिया। एक ही कैटेगरी है। तुम इस सारे राज़ को जानते हो। शुरू से लेकर सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ बुद्धि में रहना चाहिए। हम सब कुछ जानते हैं। बाकी कुछ भी जानने का रहता ही नहीं। रचता बाप को जाना, सूक्ष्मवतन को जाना, भविष्य मर्तबे को जाना, जिसके लिए ही पुरूषार्थ करते हो फिर अगर चलन ऐसी हो जाती है तो ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। किसको दु:ख देते, विकार में जाते हैं या बुरी दृष्टि रखते हैं, तो यह भी पाप है। दृष्टि बदल जाए बड़ी मेहनत है। दृष्टि बहुत अच्छी चाहिए। आंखे देखती हैं – यह क्रोध करते हैं तो खुद भी लड़ पड़ते हैं। शिवबाबा में ज़रा भी लव नहीं, याद ही नहीं करते। बलिहारी शिवबाबा की है। बलिहारी गुरू आपकी..... बलिहारी उस सतगुरू की जिसने गोविन्द श्रीकृष्ण का साक्षात्कार कराया। गुरू द्वारा तुम गोविन्द बनते हो। साक्षात्कार से सिर्फ मुख मीठा नहीं होता। मीरा का मुख मीठा हुआ क्या? सचमुच स्वर्ग में तो गई नहीं। वह है भक्ति मार्ग, उनको स्वर्ग का सुख नहीं कहेंगे। गोविन्द को सिर्फ देखना नहीं है, ऐसा बनना है। तुम यहाँ आये ही हो ऐसा बनने। यह नशा रहना चाहिए हम उनके पास जाते हैं जो हमको ऐसा बनाते हैं। तो बाबा सबको यह राय देते हैं चार्ट में यह भी लिखो – आंखों ने धोखा तो नहीं दिया? पाप तो नहीं किया? आंखें कोई न कोई बात में धोखा जरूर देती हैं। आंखें बिल्कुल शीतल हो जानी चाहिए। अपने को अशरीरी समझो। यह कर्मातीत अवस्था पिछाड़ी में होगी सो भी जब बाबा को अपना चार्ट भेज देंगे। भल धर्मराज के रजिस्टर में सब जमा हो जाता है ऑटोमेटिकली। परन्तु जबकि बाप साकार में आये हैं तो कहते हैं साकार को मालूम पड़ना चाहिए। तो खबरदार करेंगे। क्रिमिनल आई अथवा देह-अभिमान वाला होगा तो वायुमण्डल को अशुद्ध कर देंगे। यहाँ बैठे भी बुद्धियोग बाहर चला जाता है। माया बहुत धोखा देती है। मन बहुत तूफानी है। कितनी मेहनत करनी पड़ती है - यह बनने के लिए। बाबा के पास आते हैं, बाबा ज्ञान का श्रृंगार कराते हैं आत्मा को। समझते हो हम आत्मा ज्ञान से पवित्र होंगी। फिर शरीर भी पवित्र मिलेगा। आत्मा और शरीर दोनों पवित्र सतयुग में होते हैं फिर आधाकल्प बाद रावण राज्य होता है। मनुष्य कहेंगे भगवान ने ऐसे क्यों किया? यह अनादि ड्रामा बना हुआ है। भगवान ने थोड़ेही कुछ किया। सतयुग में होता ही है - एक देवी-देवता धर्म। कोई-कोई

कहते हैं ऐसे भगवान को हम याद ही क्यों करें। लेकिन तुम्हारा दूसरे धर्म से कोई मतलब नहीं। जो कांटे बने हैं वही आकर फूल बनेंगे। मनुष्य कहते हैं क्या भगवान सिर्फ भारतवासियों को ही स्वर्ग में ले जायेंगे, हम मानेंगे नहीं, भगवान को भी दो आंखे हैं क्या! परन्तु यह तो ड्रामा बना हुआ है। सब स्वर्ग में आयें तो फिर अनेक धर्मों का पार्ट कैसे चले? स्वर्ग में इतने करोड़ होते नहीं। पहली-पहली मुख्य बात भगवान कौन है, उनको तो समझो। यह नहीं समझा है तो अनेक प्रश्न करते रहेंगे। अपने को आत्मा समझेंगे तो कहेंगे यह तो बात ठीक है। हमको पतित से पावन जरूर बनना है। याद करना है उस एक को। सब धर्मों में भगवान को याद करते हैं।

तुम बच्चों को अभी यह ज्ञान मिल रहा है। तुम समझते हो यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है। तुम कितना प्रदर्शनी में भी समझाते हो। निकलते बिल्कुल थोड़े हैं। परन्तु ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि इसलिए करनी नहीं चाहिए। ड्रामा में था, किया, कहाँ निकलते भी हैं प्रदर्शनी से। कहाँ नहीं निकलते हैं। आगे चल आयेंगे, ऊंच पद पाने का पुरूषार्थ करेंगे। कोई को कम पद पाना होगा तो इतना पुरूषार्थ नहीं करेंगे। बाप बच्चों को फिर भी समझाते हैं, विकर्म कोई नहीं करो। यह भी नोट करो कि हमने किसी को दु:ख तो नहीं दिया? कोई से लड़ा-झगड़ा तो नहीं? उल्टा-सुल्टा तो नहीं बोला? कोई अकर्तव्य कार्य तो नहीं किया? बाबा कहते हैं विकर्म जो किये हैं सो लिखो। यह तो जानते हो द्वापर से लेकर विकर्म करते अभी बहुत विकर्मी बन गये। बाबा को लिखकर देने से बोझा हल्का हो जायेगा। लिखते हैं हम किसको दु:ख नहीं देते हैं। बाबा कहेंगे अच्छा, चार्ट लेकर आना तो देखेंगे। बाबा बुलायेंगे भी ऐसे अच्छे बच्चे को हम देखें तो सही। सपूत बच्चों को बाप बहुत प्यार करते हैं। बाबा जानते हैं अभी कोई सम्पूर्ण बना नहीं है। बाबा हर एक को देखते हैं, कैसे पुरूषार्थ करते हैं। बच्चे चार्ट नहीं लिखते हैं तो जरूर कुछ खामियां हैं, जो बाबा से छिपाते हैं। सच्चा ऑनेस्ट बच्चा उनको ही समझता हूँ जो चार्ट लिखते हैं। चार्ट के साथ फिर मैनर्स भी चाहिए। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) स्वयं का बोझ हल्का करने के लिए जो भी विकर्म हुए हैं, वह बाप को लिखकर देना है। अब किसी को भी दु:ख नहीं देना है। सपूत बनकर रहना है।

2) अपनी दृष्टि बहुत अच्छी बनानी है। आंखें धोखा न दें – इसकी सम्भाल करनी है। अपने मैनर्स बहुत-बहुत अच्छे रखने हैं। काम-क्रोध के वश हो कोई पाप नहीं करने हैं।

वरदान:- लक्ष्य और मंजिल को सदा स्मृति में रख तीव्र पुरूषार्थ करने वाले सदा होली और हैपी भव

ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है बिना कोई हद के आधार के सदा आन्तरिक खुशी में रहना। जब यह लक्ष्य बदल हद की प्राप्तियों की छोटी-छोटी गलियों में फंस जाते हो तब मंजिल से दूर हो जाते हो। इसलिए कुछ भी हो जाए, हद की प्राप्तियों का त्याग भी करना पड़े तो उन्हें छोड़ दो लेकिन अविनाशी खुशी को कभी नहीं छोड़ो। होली और हैपी भव के वरदान को स्मृति में रख तीव्र पुरुषार्थ द्वारा अविनाशी प्राप्तियां करो।

स्लोगन:- गुण मूर्त बनकर गुणों का दान देते चलो–यही सबसे बड़ी सेवा है।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज पर स्थित रह भिन्न-भिन्न प्रर्कार की क्यू से निकल, बाप के साथ सदा मिलन मनाने की लगन में अपने समय को लगाओ और लवलीन स्थिति में रहो तो और सब बातें सहज समाप्त हो जायेंगी, फिर आपके सामने आपकी प्रजा और भक्तों की क्यू लगेगी।

''मीठे बच्चे – सवेरे-सवेरे उठ यही चिंतन करो कि मैं इतनी छोटी-सी आत्मा कितने बड़े शरीर को चला रही हूँ, मुझ आत्मा में अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है''

प्रश्नः- शिवबाबा को कौन-सी प्रैक्टिस है, कौन-सी नहीं?

उत्तरः- आत्मा का ज्ञान रत्नों से श्रृंगार करने की प्रैक्टिस शिवबाबा को है, बाकी शरीर का श्रृंगार करने की प्रैक्टिस उन्हें नहीं क्योंकि बाबा कहते मुझे तो अपना शरीर है नहीं। मैं इनका शरीर भल किराये पर लेता हूँ लेकिन इस शरीर का श्रृंगार यह आत्मा स्वयं करती, मैं नहीं करता। मैं तो सदा अशरीरी हूँ।

गीतः- बदल जाए दुनिया न बदलेंगे हम .....

ओम् शान्ति। बच्चों ने यह गीत सुना। किसने सुना? आत्मा ने इन शरीर के कानों द्वारा सुना। बच्चों को भी यह मालूम पड़ा कि आत्मा कितनी छोटी है। वह आत्मा इस शरीर में नहीं है तो शरीर कोई काम का नहीं रहता। कितनी छोटी आत्मा के आधार पर यह कितना बड़ा शरीर चलता है। दुनिया में किसको भी पता नहीं है कि आत्मा क्या चीज़ है जो इस रथ पर विराजमान होती है। अकालमूर्त आत्मा का यह तख्त है। बच्चों को भी यह ज्ञान मिलता है। कितना रमणीक, रहस्य युक्त है। जब कोई ऐसी रहस्ययुक्त बात सुनी जाती है तो चिन्तन चलता है। तुम बच्चों का भी यही चिन्तन चलता है – इतनी छोटी सी आत्मा है इतने बड़े शरीर में। आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है। शरीर तो विनाश हो जाता है। बाकी आत्मा रहती है। यह बड़ी विचार की बाते हैं। सवेरे उठकर यह ख्याल करना चाहिए। बच्चों को स्मृति आई है आत्मा कितनी छोटी है, उनको अविनाशी पार्ट मिला हुआ है। मैं आत्मा कितनी वन्डरफुल हूँ। यह नया ज्ञान है। जो दुनिया में किसको भी नहीं है। बाप ही आकर बतलाते हैं, जो सिमरण करना होता है। हम कितनी छोटी सी आत्मा कैसे पार्ट बजाती है। शरीर 5 तत्वों का बनता है। बाबा को थोड़ेही मालूम पड़ता है। शिवबाबा की आत्मा कैसे आती-जाती है। ऐसे भी नहीं, सदैव इसमें रहती है। तो यही चिंतन करना है। तुम बच्चों को बाप ऐसा ज्ञान देते हैं जो कभी कोई को मिल न सके। तुम जानते हो बरोबर यह ज्ञान इनकी आत्मा में नहीं था। और सतसंगों में ऐसी-ऐसी बातों पर कोई का ख्याल नहीं रहता है। आत्मा और परमात्मा का रिंचक भी ज्ञान नहीं है। कोई भी साधू-संन्यासी आदि यह थोड़ेही समझते कि हम आत्मा शरीर द्वारा इनको मन्त्र देती है। आत्मा शरीर द्वारा शास्त्र पढ़ती है। एक भी मनुष्य मात्र आत्म-अभिमानी नहीं है। आत्मा का ज्ञान कोई को है नहीं, तो फिर बाप का ज्ञान कैसे होगा।

तुम बच्चे जानते हो हम आत्माओं को बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों! तुम कितना समझदार बन रहे हो। ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो समझे कि इस शरीर में जो आत्मा है, उनको परमपिता परमात्मा बैठ पढ़ाते हैं। कितनी समझने की बातें हैं। परन्तु फिर भी धन्धे आदि में जाने से भूल जाते हैं। पहले तो बाप आत्मा का ज्ञान देते हैं जो कोई भी मनुष्य मात्र को नहीं है। गायन भी है ना – आत्मायें-परमात्मा अलग रहे बहुकाल... हिसाब है ना। तुम बच्चे जानते हो आत्मा ही बोलती है शरीर द्वारा। आत्मा ही शरीर द्वारा अच्छे वा बुरे काम करती है। बाप आकर आत्माओं को कितना गुल-गुल बनाते हैं। पहले-पहले तो बाप कहते हैं सवेरे-सवेरे उठकर यही प्रैक्टिस वा ख्याल करो कि आत्मा क्या है? जो इस शरीर द्वारा सुनती है। आत्मा का बाप परमपिता परमात्मा है, जिसको पतित-पावन, ज्ञान का सागर कहते हैं। फिर कोई मनुष्य को सुख का सागर, शान्ति का सागर कैसे कह सकते। क्या लक्ष्मी-नारायण को कहेंगे सदैव पवित्रता का सागर? नहीं। एक बाप ही सदैव पवित्रता का सागर है। मनुष्य तो सिर्फ भक्ति मार्ग के शास्त्रों का बैठ वर्णन करते हैं। प्रैक्टिकल अनुभव नहीं है। ऐसे नहीं समझेंगे हम आत्मा इस शरीर से बाप की महिमा करते हैं। वह हमारा बहुत मीठा बाबा है। वही सुख देने वाला है। बाप कहते हैं – हे आत्मायें, अब मेरी मत पर चलो। यह अविनाशी आत्मा को अविनाशी बाप द्वारा अविनाशी मत मिलती है। वह विनाशी शरीरधारियों को विनाशी शरीरधारियों की ही मत मिलती है। सतयुग में तो तुम यहाँ की प्रालब्ध पाते हो। वहाँ कभी उल्टी मत मिलती ही नहीं। अभी की श्रीमत ही अविनाशी बन जाती है, जो आधाकल्प चलती है। यह नया ज्ञान है, कितनी बुद्धि चाहिए इसको ग्रहण करने की। और एक्ट में आना चाहिए। जिन्हों ने शुरू से बहुत भक्ति की होगी वही अच्छी रीति धारण कर सकेंगे। यह समझना चाहिए – अगर हमारी बुद्धि में ठीक रीति धारणा नहीं होती है, तो जरूर शुरू

से हमने भक्ति नहीं की है। बाप कहते हैं कुछ भी नहीं समझते हो तो बाप से पूछो क्योंकि बाप है अविनाशी सर्जन। उनको सुप्रीम सोल भी कहा जाता है। आत्मा पवित्र बनती है तो उनकी महिमा होती है। आत्मा की महिमा है तो शरीर की भी महिमा होती है। आत्मा तमोप्रधान है तो शरीर की भी महिमा नहीं। इस समय तुम बच्चों को बहुत गुह्य बुद्धि मिलती है। आत्मा को ही मिलती है। आत्मा को कितना मीठा बनना चाहिए। सबको सुख देना चाहिए। बाबा कितना मीठा है। आत्माओं को भी बहुत मीठा बनाते हैं। आत्मा कोई भी अकर्तव्य कार्य न करे – यह प्रैक्टिस करनी है। चेक करना है कि मेरे से कोई अकर्तव्य तो नहीं होता है? शिवबाबा कभी अकर्तव्य कार्य करेंगे? नहीं। वह आते ही हैं उत्तम से उत्तम कल्याणकारी कार्य करने। सबको सद्गति देते हैं। तो जो बाप कर्तव्य करते हैं, बच्चों को भी ऐसा कर्तव्य करना चाहिए। यह भी समझाया है, जिसने शुरू से लेकर बहुत भक्ति की है, उनकी बुद्धि में ही यह ज्ञान ठहरेगा। अभी भी देवताओं के ढेर भक्त हैं। अपना सिर देने के लिए भी तैयार रहते हैं। बहुत भक्ति करने वालों के पिछाड़ी, कम भक्ति करने वाले लटकते रहते। उनकी महिमा गाते हैं। उनका तो स्थूल में सब देखने में आता है। यहाँ तुम हो गुप्त। तुम्हारी बुद्धि में सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान है। यह भी बच्चों को मालूम है – बाबा हमको पढ़ाने आये हैं। अब फिर हम घर जायेंगे। जहाँ सब आत्मायें आती हैं, वह हमारा घर है। वहाँ शरीर ही नहीं तो आवाज़ कैसे हो। आत्मा के बिना शरीर जड़ बन जाता है। मनुष्यों का शरीर में कितना मोह रहता है! आत्मा शरीर से निकल गई तो बाकी 5 तत्व, उन पर भी कितना लव रहता है। स्त्री पति की चिता पर चढ़ने लिए तैयार हो जाती है। कितना मोह रहता है शरीर में। अभी तुम समझते हो नष्टोमोहा होना है, सारी दुनिया से। यह शरीर तो खत्म होना है। तो उनसे मोह निकल जाना चाहिए ना। परन्तु बहुत मोह रहता है। ब्राह्मणों को खिलाते हैं। याद करते हैं ना – फलाने का श्राद्ध है। अब वह थोड़ेही खा सकते हैं। तुम बच्चों को तो अब इन बातों से अलग हो जाना चाहिए। ड्रामा में हर एक अपना पार्ट बजाते हैं। इस समय तुमको ज्ञान है, हमको नष्टोमोहा बनना है। मोहजीत राजा की भी कहानी है ना और कोई मोह जीत राजा होता नहीं। यह तो कथायें बहुत बनाई हैं ना। वहाँ अकाले मृत्यु होती नहीं। तो पूछने की भी बात नहीं रहती। इस समय तुमको मोहजीत बनाते हैं। स्वर्ग में मोह जीत राजायें थे, यथा राजा रानी तथा प्रजा ऐसे हैं। वह है ही नष्टोमोहा की राजधानी। रावण राज्य में मोह होता है। वहाँ तो विकार होता नहीं, रावण राज्य ही नहीं। रावण की राजाई चली जाती है। राम राज्य में क्या होता है, कुछ भी पता नहीं। सिवाए बाप के और कोई यह बातें बता न सके। बाप इस शरीर में होते भी देही-अभिमानी है। लोन अथवा किराये पर मकान लेते हैं तो उसमें भी मोह रहता है। मकान को अच्छी रीति फर्निश करते हैं, इनको तो फर्निश करना नहीं है क्योंकि बाप तो अशरीरी है ना। इनको कोई भी श्रृंगार आदि करने की प्रैक्टिस ही नहीं है। इनको तो अविनाशी ज्ञान रत्नों से बच्चों को श्रृंगारने की ही प्रैक्टिस है। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं। शरीर तो अपवित्र ही है, इनको जब दूसरा नया शरीर मिलेगा तो पवित्र होंगे। इस समय तो यह पुरानी दुनिया है, यह खत्म हो जानी है। यह भी दुनिया में किसको पता ही नहीं है। धीरे-धीरे मालूम पड़ेगा। नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश – यह तो बाप का ही काम है। बाप ही आकर ब्रह्मा द्वारा प्रजा रच नई दुनिया की स्थापना कर रहे हैं। तुम नई दुनिया में हो? नहीं, नई दुनिया स्थापन होती है। तो ब्राह्मणों की चोटी भी ऊंच है। बाबा ने समझाया है, बाबा के सम्मुख आते हो तो पहले यह याद करना है कि हम ईश्वर बाप के सम्मुख जाते हैं। शिवबाबा तो निराकार है। उनके सम्मुख हम कैसे जायें। तो उस बाप को याद कर फिर बाप के सम्मुख आना है। तुम जानते हो वह इसमें बैठा हुआ है। यह शरीर तो पतित है। शिवबाबा की याद में न रह कोई काम करते हो तो पाप लग जाता है। हम शिवबाबा के पास जाते हैं। फिर दूसरे जन्म में दूसरे सम्बन्धी होंगे। वहाँ देवताओं की गोद में जायेंगे। यह ईश्वरीय गोद एक ही बार मिलती है। मुख से कहते हैं बाबा हम आपका हो चुका। बहुत हैं जिन्होंने कभी देखा भी नहीं है। बाहर में रहते हैं, लिखते हैं शिवबाबा हम आपकी गोद के बच्चे हो चुके हैं। बुद्धि में ज्ञान है। आत्मा कहती है – हम शिवबाबा के बन चुके। इनके पहले हम पतित की गोद के थे। भविष्य में पवित्र देवता की गोद में जायेंगे। यह जन्म दुर्लभ है। हीरे जैसा तुम यहाँ संगमयुग पर बनते हो। संगमयुग कोई उस पानी के सागर और नदियों को नहीं कहा जाता। रात दिन का फ़र्क है। ब्रह्मपुत्रा बड़े ते बड़ी नदी है, जो सागर में मिलती है। नदियां जाकर सागर में पड़ती हैं। तुम भी सागर से निकली हुई ज्ञान नदी हो। ज्ञान सागर शिवबाबा है। बड़े ते बड़े नदी है ब्रह्मपुत्रा। इनका नाम ब्रह्मा है। सागर से इनका कितना मेल है। तुमको मालूम है नदियां कहाँ से निकलती हैं। सागर से ही निकलती हैं, फिर सागर में पड़ती हैं।

सागर से मीठा पानी खींचते हैं। सागर के बच्चे फिर सागर में जाकर मिलते हैं। तुम भी ज्ञान सागर से निकली हो फिर सब वहाँ चली जायेंगी, जहाँ वह रहते हैं, वहाँ तुम आत्मायें भी रहती हो। ज्ञान सागर आकर तुमको पवित्र मीठा बनाते हैं। आत्मा जो खारी बन गई है उनको मीठा बनाते हैं। 5 विकारों रूपी छी-छी नमकीन तुमसे निकल जाती है, तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाते हो। बाप पुरूषार्थ बहुत कराते हैं। तुम कितने सतोप्रधान थे, स्वर्ग में रहते थे। तुम बिल्कुल छी-छी बन गये हो। रावण ने तुमको क्या बनाया है। भारत में ही गाया जाता है हीरे जैसा जन्म अमोलक।

बाबा कहते रहते हैं तुम कौड़ियों पिछाड़ी क्यों हैरान होते हो। कौड़ियां भी जास्ती थोड़ेही चाहिए। गरीब झट समझ जाते हैं। साहूकार तो कहते हैं अभी हमारे लिए यहाँ ही स्वर्ग है। तुम बच्चे जानते हो – जो भी मनुष्यमात्र हैं सबका इस समय कौड़ी जैसा जन्म है। हम भी ऐसे थे। अभी बाबा हमको क्या बनाते हैं। एम-ऑब्जेक्ट तो है ना। हम नर से नारायण बनते हैं। भारत अब कौड़ी जैसा कंगाल है ना। भारतवासी खुद थोड़ेही जानते। यहाँ तुम कितने साधारण अबलायें हो। कोई बड़ा आदमी होगा तो उनको यहाँ बैठने की दिल नहीं होगी। जहाँ बड़े-बड़े आदमी संन्यासी गुरू आदि लोग होंगे वहाँ की बड़ी-बड़ी सभाओं में जायेंगे। बाप भी कहते हैं मैं गरीब निवाज हूँ। कहते हैं भगवान गरीबों की रक्षा करते हैं। अभी तुम जानते हो – हम कितने साहूकार थे। अभी फिर बनते हैं। बाबा लिखते भी हैं तुम पदमापदमपति बनते हो। वहाँ पर मारामारी नहीं होती है। यहाँ तो देखो पैसे के पीछे कितनी मारामारी है। रिश्वत कितनी मिलती है। पैसे तो मनुष्यों को चाहिए ना। तुम बच्चे जानते हो बाबा हमारा खजाना भरपूर कर देते हैं। आधाकल्प के लिए जितना चाहिए उतना धन लो, परन्तु पुरूषार्थ पूरा करो। गफलत नहीं करो। कहा जाता है ना फालो फादर। फादर को फालो करो तो यह जाकर बनेंगे। नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी, बड़ा भारी इम्तहान है। इसमें जरा भी गफ़लत नहीं करनी चाहिए। बाप श्रीमत देते हैं तो फिर उस पर चलना है। कायदे कानून का उल्लंघन नहीं करना है। श्रीमत से ही तुम श्री बनते हो। मंजिल बहुत बड़ी है। अपना रोज़ का खाता रखो। कमाई की या नुकसान किया? बाप को कितना याद किया? कितने को रास्ता बताया? अन्धों की लाठी तुम हो ना। तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) जैसे बाप मीठा है, ऐसे मीठा बन सबको सुख देना है। कोई भी अकर्तव्य कार्य नहीं करना है। उत्तम से उत्तम कल्याण का ही कार्य करना है।

2) कौड़ियों के पिछाड़ी हैरान नहीं होना है। पुरूषार्थ कर अपनी जीवन हीरे जैसी बनानी है। गफलत नहीं करनी है।

वरदान:- निश्चय रूपी पांव को अचल रखने वाले सदा निश्चयबुद्धि निश्चिंत भव

सबसे बड़ी बीमारी है चिंता, इसकी दवाई डाक्टर्स के पास भी नहीं है। चिंता वाले जितना ही प्राप्ति के पीछे दौड़ते हैं उतना प्राप्ति आगे दौड़ लगाती है इसलिए निश्चय के पांव सदा अचल रहें। सदा एक बल एक भरोसा–यह पांव अचल है तो विजय निश्चित है। निश्चित विजयी सदा ही निश्चिंत हैं। माया निश्चय रूपी पांव को हिलाने के लिए ही भिन्न-भिन्न रूप से आती है लेकिन माया हिल जाए–आपका निश्चय रूपी पांव न हिले तो निश्चिंत रहने का वरदान मिल जायेगा।

स्लोगन:- हर एक की विशेषता को देखते जाओ तो विशेष आत्मा बन जायेंगे।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

आप गोप-गोपियों के चरित्र गाये हुए हैं - बाप से सर्व-सम्बन्धों का सुख लेना और मग्न रहना अथवा सर्व-सम्बन्धों के लव में लवलीन रहना। जब कोई अति स्नेह से मिलते हैं तो उस समय स्नेह के मिलन के यही शब्द होते कि एक दूसरे में समा गये या दोनों मिलकर एक हो गये। तो बाप के स्नेह में समा गये अर्थात् बाप का स्वरूप हो गये।

''मीठे बच्चे – तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट है वण्डरफुल रंग-बिरंगी दुनिया (स्वर्ग) का मालिक बनना, तो सदा इसी खुशी में हर्षित रहो, मुरझाया हुआ नहीं''

प्रश्नः- तकदीरवान बच्चों को कौन-सा उमंग सदा बना रहेगा?

उत्तरः- हमें बेहद का बाप नई दुनिया का प्रिंस-प्रिंसेज बनाने के लिए पढ़ा रहे हैं। तुम इसी उमंग से सबको समझा सकते हो कि इस लड़ाई में स्वर्ग समाया हुआ है। इस लड़ाई के बाद स्वर्ग के द्वार खुलने हैं – इसी खुशी में रहना है और खुशी-खुशी से दूसरों को भी समझाना है।

गीतः- दुनिया रंग रंगीली बाबा.....

ओम् शान्ति। यह किन्होंने कहा बाबा को, कि दुनिया रंग-बिरंगी है? अब इनका अर्थ दूसरा कोई समझ न सके। बाप ने समझाया है यह खेल रंग-रंगीला है। कोई भी बाइसकोप आदि होता है तो बहुत रंग-बिरंगी सीन-सीनरियाँ आदि होती हैं ना। अब इस बेहद की दुनिया को कोई जानते ही नहीं। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सारे विश्व के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है। तुम समझते हो स्वर्ग कितना रंग-बिरंगा है, खूबसूरत है। जिसको कोई भी जानते नहीं। कोई की बुद्धि में नहीं है, वह है वण्डरफुल रंग-बिरंगी दुनिया। गाया जाता है वण्डर ऑफ दी वर्ल्ड – इसको सिर्फ तुम जानते हो। तुम ही वण्डर ऑफ वर्ल्ड के लिए अपनी-अपनी तकदीर अनुसार पुरुषार्थ कर रहे हो। एम आब्जेक्ट तो है। वह है वण्डर ऑफ वर्ल्ड, बड़ी रंग-बिरंगी दुनिया है, जहाँ हीरे-जवाहरातों के महल होते हैं। तुम एक सेकण्ड में वण्डरफुल वैकुण्ठ में चले जाते हो। खेलते हो, रास-विलास आदि करते हो। बरोबर वण्डरफुल दुनिया है ना। यहाँ है माया का राज्य। यह भी कितना वण्डरफुल है। मनुष्य क्या-क्या करते रहते हैं। दुनिया में यह कोई भी नहीं समझते कि हम नाटक में खेल कर रहे हैं। नाटक अगर समझें तो नाटक के आदि-मध्य-अन्त का भी ज्ञान हो। तुम बच्चे जानते हो बाप भी कितना साधारण है। माया बिल्कुल ही भुला देती है। नाक से पकड़ा, यह भुलाया। अभी-अभी याद में हैं, बहुत हर्षित रहते हैं। ओहो! हम वण्डर ऑफ वर्ल्ड स्वर्ग के मालिक बन रहे हैं, फिर भूल जाते हैं तो मुरझा पड़ते हैं। ऐसा मुरझा जाते हैं जो भील भी ऐसा मुरझाया हुआ न हो। ज़रा भी जैसेकि समझते ही नहीं कि हम स्वर्ग में जाने वाले हैं। हमको बेहद का बाप पढ़ा रहे हैं। जैसे एकदम मुर्दे बन जाते हैं। वह खुशी, नशा नहीं रहता। अभी वण्डर ऑफ वर्ल्ड की स्थापना हो रही है। वण्डर ऑफ वर्ल्ड का श्रीकृष्ण है प्रिन्स। यह भी तुम जानते हो। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर भी जो ज्ञान में होशियार हैं वह समझाते होंगे। श्रीकृष्ण वण्डर ऑफ वर्ल्ड का प्रिन्स था। वह सतयुग फिर कहाँ गया! सतयुग से लेकर सीढ़ी कैसे उतरे। सतयुग से कलियुग कैसे हुआ? उतरती कला कैसे हुई? तुम बच्चों की बुद्धि में ही आयेगा। उस खुशी से समझाना चाहिए। श्रीकृष्ण आ रहे हैं। श्रीकृष्ण का राज्य फिर स्थापन हो रहा है। यह सुनकर भारतवासियों को भी खुशी होनी चाहिए। परन्तु यह उमंग उन्हों को आयेगा जो तकदीरवान होंगे। दुनिया के मनुष्य तो रत्नों को भी पत्थर समझकर फेंक देंगे। यह अविनाशी ज्ञान रत्न हैं ना। इन ज्ञान रत्नों का सागर है बाप। इन रत्नों की बहुत वैल्यु है। यह ज्ञान रत्न धारण करने हैं। अभी तुम ज्ञान सागर से डायरेक्ट सुनते हो तो फिर और कुछ भी सुनने की दरकार ही नहीं। सतयुग में यह होते नहीं। न वहाँ एल.एल.बी., न सर्जन आदि बनना होता है। वहाँ यह नॉलेज ही नहीं। वहाँ तो तुम प्रालब्ध भोगते हो। तो जन्माष्टमी पर बच्चों को अच्छी रीति समझाना है। अनेक बार मुरली भी चली हुई है। बच्चों को विचार सागर मंथन करना है, तब ही प्वाइंट्स निकलेंगी। भाषण करना है तो सवेरे उठकर लिखना चाहिए, फिर पढ़ना चाहिए। भूली हुई प्वाइंट्स फिर एड करनी चाहिए। इससे धारणा अच्छी होगी फिर भी लिखत मुआफ़िक सब नहीं बोल सकेंगे। कुछ न कुछ प्वाइंट्स भूल जायेंगे। तो समझाना होता है, श्रीकृष्ण कौन है, यह तो वण्डर ऑफ वर्ल्ड का मालिक था। भारत ही पैराडाइज था। उस पैराडाइज का मालिक श्रीकृष्ण था। हम आपको सन्देश सुनाते हैं कि श्रीकृष्ण आ रहे हैं। राजयोग भगवान ने ही सिखाया है। अब भी सिखला रहे हैं। पवित्रता के लिए भी पुरुषार्थ करा रहे हैं, डबल सिरताज देवता बनाने के लिए। यह सब बच्चों को स्मृति में आना चाहिए। जिनकी प्रैक्टिस होगी वह अच्छी रीति समझा सकेंगे। श्रीकृष्ण के चित्र में भी लिखत बड़ी फर्स्टक्लास है। इस लड़ाई के बाद स्वर्ग के द्वार खुलने हैं। इस लड़ाई में जैसे स्वर्ग समाया हुआ है। बच्चों को भी बहुत खुशी में रहना चाहिए, जन्माष्टमी पर मनुष्य कपड़े आदि नये पहनते हैं। लेकिन तुम जानते हो कि अभी हम यह पुराना शरीर छोड़ नया कंचन

शरीर लेंगे। कंचन काया कहते हैं ना अर्थात् सोने की काया। आत्मा भी पवित्र, शरीर भी पवित्र। अभी कंचन नहीं है। नम्बरवार बन रही है। कंचन बनेंगी ही याद की यात्रा से। बाबा जानते हैं बहुत हैं जिनको याद करने का भी अक्ल नहीं है। याद की जब मेहनत करेंगे तब ही वाणी जौहरदार होगी। अभी वह ताकत कहाँ है। योग है नहीं। लक्ष्मी-नारायण बनने की शक्ल भी चाहिए ना। पढ़ाई चाहिए। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर समझाना बहुत सहज है। श्रीकृष्ण के लिए कहते हैं श्याम-सुन्दर। श्रीकृष्ण को भी काला, नारायण को भी काला, राम को भी काला बनाया है। बाप खुद कहते हैं, मेरे बच्चे जो पहले ज्ञान चिता पर बैठ स्वर्ग के मालिक बनें फिर कहाँ चले गये। काम चिता पर बैठ नम्बरवार गिरते चले आये। सृष्टि भी सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो बनती है। तो मनुष्यों की अवस्था भी ऐसी होती है। काम चिता पर बैठ सब श्याम अर्थात् काले बन गये हैं। अब मैं आया हूँ सुन्दर बनाने। आत्मा को सुन्दर बनाया जाता है। बाबा हर एक की चलन से समझ जाते हैं – मन्सा, वाचा, कर्मणा कैसे चलते हैं। कर्म कैसे करते हैं, उससे पता पड़ जाता है। बच्चों की चलन तो बड़ी फर्स्टक्लास होनी चाहिए। मुख से सदैव रत्न निकलने चाहिए। श्रीकृष्ण जयन्ती पर समझाने का बहुत अच्छा है। श्याम और सुन्दर की टॉपिक हो। श्रीकृष्ण को भी काला तो नारायण को फिर राधे को भी काला क्यों बनाते हैं? शिवलिंग भी काला पत्थर रखते हैं। अब वह कोई काला थोड़ेही है। शिव है क्या, और चीज़ क्या बनाते हैं। इन बातों को तुम बच्चे जानते हो। काला क्यों बनाते हैं – तुम इस पर समझा सकेंगे। अब देखेंगे बच्चे क्या सर्विस करते हैं। बाप तो कहते हैं – यह ज्ञान सब धर्म वालों के लिए है। उन्हों को भी कहना है बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे। पवित्र बनना है। किसको भी तुम राखी बांध सकते हो। यूरोपियन को भी बांध सकते हो। कोई भी हो उनको कहना है – भगवानुवाच, जरूर कोई तन से कहेंगे ना। कहते हैं मामेकम् याद करो। देह के सब धर्म छोड़ अपने को आत्मा समझो। बाबा कितना समझाते हैं, फिर भी नहीं समझते हैं तो बाप समझ जाते हैं इनकी तकदीर में नहीं है। यह तो समझते होंगे शिवबाबा पढ़ाते हैं। रथ बिगर तो पढ़ा न सकें, इशारा देना ही बस है। कोई-कोई बच्चों को समझाने की प्रैक्टिस अच्छी है। बाबा-मम्मा के लिए तो समझते हो यह ऊंच पद पाने वाले हैं। मम्मा भी सर्विस करती थी ना। इन बातों को भी समझाना होता है। माया के भी अनेक प्रकार के रूप होते हैं। बहुत कहते हैं हमारे में मम्मा आती है, शिवबाबा आते हैं परन्तु नई-नई प्वाइंट्स तो मुकरर तन द्वारा ही सुनायेंगे कि दूसरे किसी द्वारा सुनायेंगे। यह हो नहीं सकता। ऐसे तो बच्चियाँ भी बहुत प्रकार की प्वाइंट्स अपनी भी सुनाती हैं। मैगजीन में कितनी बातें आती हैं। ऐसे नहीं कि मम्मा-बाबा उनमें आते, वह लिखवाते हैं। नहीं, बाप तो यहाँ डायरेक्ट आते हैं, तब तो यहाँ सुनने के लिए आते हो। अगर मम्मा-बाबा कोई में आते हैं तो फिर वहाँ ही बैठ उनसे पढ़ें। नहीं, यहाँ आने की सबको कशिश होती है। दूर रहने वालों को और ही जास्ती कशिश होती है। तो बच्चे जन्माष्टमी पर भी बहुत सर्विस कर सकते हैं। श्रीकृष्ण का जन्म कब हुआ, यह भी किसको पता नहीं है। तुम्हारी अब झोली भर रही है तो खुशी रहनी चाहिए। परन्तु बाबा देखते हैं खुशी कोई-कोई में बिल्कुल है नहीं। श्रीमत पर न चलने का तो जैसे कसम उठा लेते हैं। सर्विसएबुल बच्चों को तो जैसे सर्विस ही सर्विस सूझती रहेगी। समझते हैं बाबा की सर्विस नहीं की, किसको रास्ता नहीं बताया तो गोया हम अन्धे रहे। यह समझने की बात है ना। बैज में भी श्रीकृष्ण का चित्र है, इस पर भी तुम समझा सकते हो। कोई से भी पूछो इन्हों को काला क्यों दिखाया है, बता नहीं सकेंगे। शास्त्रों में लिख दिया है राम की स्त्री चुराई गई। परन्तु ऐसी कोई बात वहाँ होती नहीं।

तुम भारतवासी ही परिस्तानी थे, अब कब्रिस्तानी बने हैं फिर ज्ञान चिता पर बैठ दैवी गुण धारण कर परिस्तानी बनते हैं। सर्विस तो बच्चों को करनी है। सबको पैगाम देना है। इसमें बड़ी समझ चाहिए। इतना नशा चाहिए – हमको भगवान पढ़ाते हैं। भगवान के साथ रहते हैं। भगवान के बच्चे भी हैं तो फिर हम पढ़ते भी हैं। बोर्डिंग में रहते हैं तो फिर बाहर का संग नहीं लगेगा। यहाँ भी स्कूल है ना। क्रिश्चियन में फिर भी मैनर्स होते हैं अभी तो बिल्कुल नो मैनर्स, तमोप्रधान पतित हैं। देवताओं के आगे जाकर माथा टेकते हैं। कितनी उनकी महिमा है। सतयुग में सभी के दैवी कैरेक्टर थे, अभी आसुरी कैरेक्टर हैं। ऐसे-ऐसे तुम भाषण करो तो सुनकर बहुत खुश हो जाएं। मुख छोटा बात बड़ी – यह श्रीकृष्ण के लिए कहते हैं। अभी तुम कितनी बड़ी बातें सुनते हो, इतना बड़ा बनने के लिए। तुम राखी कोई को भी बांध सकते हो। यह बाप का पैगाम तो सबको देना है। यह लड़ाई स्वर्ग का द्वार खोलती है। अब पतित से पावन बनना है। बाप को याद करना है। देहधारी को नहीं याद

करना है। एक ही बाप सर्व की सद्गति करते हैं। यह है ही आइरन एजेड वर्ल्ड। तुम बच्चों की बुद्धि में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार धारणा होती है, स्कूल में भी स्कालरशिप लेने के लिए बहुत मेहनत करते हैं। यहाँ भी कितनी बड़ी स्कालरशिप है। सर्विस बहुत है। मातायें भी बहुत सर्विस कर सकती हैं, चित्र भी सब उठाओ। श्रीकृष्ण का काला, नारायण का काला, रामचन्द्र का भी काला चित्र उठाओ, शिव का भी काला.... फिर बैठ समझाओ। देवताओं को काला क्यों किया है? श्याम-सुन्दर। श्रीनाथ द्वारे जाओ तो बिल्कुल काला चित्र है। तो ऐसे-ऐसे चित्र इकट्ठे करने चाहिए। अपना भी दिखाना चाहिए। श्याम-सुन्दर का अर्थ समझाकर कहो कि तुम भी अब राखी बांध, काम चिता से उतर ज्ञान चिता पर बैठेंगे तो गोरा बन जायेंगे। यहाँ भी तुम सर्विस कर सकते हो। भाषण बहुत अच्छी रीति कर सकते हो कि इन्हों को काला क्यों किया है! शिवलिंग को भी काला क्यों किया है! सुन्दर और श्याम क्यों कहते हैं, हम समझायें। इसमें कोई नाराज़ नहीं होगा। सर्विस तो बहुत सहज है। बाप तो समझाते रहते हैं – बच्चे, अच्छे गुण धारण करो, कुल का नाम बाला करो। तुम जानते हो अभी हम ऊंच ते ऊंच ब्राह्मण कुल के हैं। फिर राखी बंधन का अर्थ तुम कोई को भी समझा सकते हो। वेश्याओं को भी समझाकर राखी बांध सकते हो। चित्र भी साथ में हों। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो – यह फरमान मानने से तुम गोरे बन जायेंगे। बहुत युक्तियाँ हैं। कोई भी नाराज़ नहीं होगा। कोई भी मनुष्य मात्र किसकी सद्गति कर नहीं सकते सिवाए एक के। भल राखी बंधन का दिन न हो, कभी भी राखी बांध सकते हो। यह तो अर्थ समझना है। राखी जब चाहे तब बांधी जा सकती है। तुम्हारा धन्धा ही यह है। बोलो, बाप के साथ प्रतिज्ञा करो। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो पवित्र बन जायेंगे। मस्जिद में भी जाकर तुम उनको समझा सकते हो। हम राखी बांधने के लिए आये हैं। यह बात तुमको भी समझने का हक है। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो पाप कट जायेंगे, पावन बन पावन दुनिया का मालिक बन जायेंगे। अभी तो पतित दुनिया है ना। गोल्डन एज थी जरूर, अब आइरन एज है। तुमको गोल्डन एज में खुदा के पास नहीं जाना है? ऐसे सुनाओ तो झट आकर चरणों पर पड़ेंगे। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) ज्ञान रत्नों के सागर से जो अविनाशी ज्ञान रत्न प्राप्त हो रहे हैं, उनकी वैल्यु रखनी है। विचार सागर मंथन कर स्वयं में ज्ञान रत्न धारण करने हैं। मुख से सदैव रत्न निकालने हैं।

2) याद की यात्रा में रहकर वाणी को जौहरदार बनाना है। याद से ही आत्मा कंचन बनेंगी इसलिए याद करने का अक्ल सीखना है।

वरदान:- मेरेपन के सूक्ष्म स्वरूप का भी त्याग करने वाले सदा निर्भय, बेफिकर बादशाह भव

आज की दुनिया में धन भी है और भय भी है। जितना धन उतना ही भय में ही खाते, भय में ही सोते हैं। जहाँ मेरापन है वहाँ भय जरूर होगा। कोई सोना हिरण भी अगर मेरा है तो भय है। लेकिन यदि मेरा एक शिवबाबा है तो निर्भय बन जायेंगे। तो सूक्ष्म रूप से भी मेरे-मेरे को चेक करके उसका त्याग करो तो निर्भय, बेफिकर बादशाह रहने का वरदान मिल जायेगा।

स्लोगन:- दूसरों के विचारों को सम्मान दो–तो आपको सम्मान स्वत:प्राप्त होगा।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

एक तरफ बेहद का वैराग्य हो, दूसरी तरफ बाप के समान बाप के लव में लवलीन रहो, एक सेकेण्ड और एक संकल्प भी इस लवलीन अवस्था से नीचे नहीं आओ। ऐसे लवलीन बच्चों का संगठन ही बाप को प्रत्यक्ष करेगा। आप निमित्त आत्मायें पवित्र प्रेम और अपनी प्राप्तियों द्वारा सभी को श्रेष्ठ पालना दो, योग्य बनाओ अर्थात् योगी बनाओ।

''मीठे बच्चे – जैसे बाप गाइड है, ऐसे गाइड बन सबको घर का रास्ता बताना है, अंधों की लाठी बनना है''

प्रश्नः- इस बने-बनाये अनादि ड्रामा का राज़ कौन सा है, जो तुम बच्चे ही जानते हो?

उत्तरः- यह बना बनाया अनादि ड्रामा है इसमें न तो कोई एक्टर एड हो सकता है, न कोई कम हो सकता है। मोक्ष किसी को भी मिलता नहीं। कोई कहे कि हम इस आवागमन के चक्र में आयें ही नहीं। बाबा कहते हाँ कुछ समय के लिए। लेकिन पार्ट से कोई बिल्कुल छूट नहीं सकते। यह ड्रामा का राज़ तुम बच्चे ही जानते हो।

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे बच्चे यह जानते हैं कि भोलानाथ किसको कहा जाता है। तुम संगमयुगी बच्चे ही जान सकते हो, कलियुगी मनुष्य रिंचक भी नहीं जानते। ज्ञान का सागर एक बाप है, वही सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान समझाते हैं। अपनी पहचान देते हैं। तुम बच्चे अभी समझते हो, आगे कुछ नहीं जानते थे। बाप कहते हैं मैं ही आकर भारत को स्वर्ग बनाता हूँ, बेहद का वर्सा देता हूँ। जो तुम अभी ले रहे हो। जानते हैं हम बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा ले रहे हैं। यह बना बनाया ड्रामा है, एक भी एक्टर न एड हो सकता, न कम हो सकता है। सभी को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है। मोक्ष को पा नहीं सकते। जो-जो जिस धर्म का है फिर उस धर्म में जाने वाले हैं। बौद्धी वा क्रिश्चियन आदि इच्छा करें हम स्वर्ग में जायें, परन्तु जा नहीं सकते। जब उनका धर्म स्थापक आता है तब ही उनका पार्ट है। यह तुम बच्चों की बुद्धि में है। सारी दुनिया के मनुष्य मात्र इस समय नास्तिक हैं अर्थात् बेहद के बाप को न जानने वाले हैं। मनुष्य ही जानेंगे ना। यह नाटकशाला मनुष्यों की है। हर एक आत्मा निर्वाणधाम से आती है पार्ट बजाने। फिर पुरूषार्थ करती है निर्वाणधाम में जाने के लिए। कहते हैं बुद्ध निर्वाण गया। अब बुद्ध का शरीर तो नहीं गया, आत्मा गई। परन्तु बाप समझाते हैं, जाता कोई भी नहीं है। नाटक से निकल ही नहीं सकते। मोक्ष पा नहीं सकते। बना-बनाया ड्रामा है ना। कोई मनुष्य समझते हैं मोक्ष मिलता है, इसलिए पुरूषार्थ करते रहते हैं। जैसे जैनी लोग पुरूषार्थ करते रहते हैं, उनकी अपनी रस्म-रिवाज है, उनका अपना गुरू है, जिसको मानते हैं। बाकी मोक्ष किसको भी मिलता नहीं है। तुम तो जानते हो हम पार्टधारी हैं, इस ड्रामा में। हम कब आये, फिर कैसे जायेंगे, यह किसको भी पता नहीं है। जानवर तो नहीं जानेंगे ना। मनुष्य ही कहते हैं हम एक्टर्स पार्टधारी हैं। यह कर्मक्षेत्र है, जहाँ आत्मायें रहती हैं। उनको कर्मक्षेत्र नहीं कहा जाता। वह तो निराकारी दुनिया है। उसमें कोई खेलपाल नहीं है, एक्ट नहीं। निराकारी दुनिया से साकारी दुनिया में आते हैं पार्ट बजाने, जो फिर रिपीट होता रहता है। प्रलय कभी होती ही नहीं। शास्त्रों में दिखाते हैं – महाभारत लड़ाई में यादव और कौरव मर गये, बाकी 5 पाण्डव बचे, वह भी पहाड़ों पर गल मरे। बाकी कुछ रहा नहीं। इससे समझते हैं प्रलय हो गई। यह सब बातें बैठ बनाई हैं, फिर दिखाते हैं समुद्र में पीपल के पत्ते पर एक बच्चा अंगूठा चूसता आया। अब इनसे फिर दुनिया कैसे पैदा होगी। मनुष्य जो कुछ सुनते हैं वह सत-सत करते रहते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो कि शास्त्रों में भी क्या-क्या लिख दिया है। यह सब हैं भक्ति मार्ग के शास्त्र। भक्तों को फल देने वाला एक भगवान बाप ही है। कोई मुक्ति में, कोई जीवनमुक्ति में चले जायेंगे। हर एक पार्टधारी आत्मा का जब पार्ट आयेगा तब फिर आयेगी। यह ड्रामा का राज़ सिवाए तुम बच्चों के और कोई नहीं जानते। कहते हैं हम रचता और रचना को नहीं जानते। ड्रामा के एक्टर्स होकर और ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त, ड्युरेशन आदि को न जानें तो बेसमझ कहेंगे ना। समझाने से भी समझते नहीं। 84 लाख समझने कारण ड्युरेशन भी लाखों वर्ष दे देते हैं।

अभी तुम समझते हो बाबा हम आपसे कल्प-कल्प आकर स्वर्ग की बादशाही लेते हैं। 5 हज़ार वर्ष पहले भी आपसे मिले थे, बेहद का वर्सा लेने। यथा राजा-रानी तथा प्रजा सब विश्व के मालिक बनते हैं। प्रजा भी कहेगी हम विश्व के मालिक हैं। तुम जब विश्व के मालिक बनते हो, उस समय चन्द्रवंशी राज्य नहीं होता है। तुम बच्चे ड्रामा के सारे आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। मनुष्य भक्ति मार्ग में जिसकी पूजा करते हैं उनको भी जानते नहीं। जिसकी भक्ति करनी होती है तो उनकी बायोग्राफी को भी जानना चाहिए। तुम बच्चे अभी सबकी बायोग्राफी जानते हो बाप के द्वारा। तुम बाप के बने हो। बाप की बायोग्राफी का पता है। वह बाप है पतित-पावन, लिबरेटर, गाइड। तुमको कहते हैं पाण्डव। तुम सबके गाइड बनते हो, अन्धों की लाठी बनते हो सबको रास्ता बताने के लिए। यथा बाप गाइड तथा तुम बच्चों को भी बनना है। सबको रास्ता

बताना है। तुम आत्मा, वह परमात्मा है, उनसे बेहद का वर्सा मिलता है। भारत में बेहद का राज्य था, अब नहीं है। तुम बच्चे जानते हो हम बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा लेते हैं अर्थात् मनुष्य से देवता बनते हैं। हम ही देवतायें थे फिर 84 जन्म लेकर शूद्र बने हैं। बाप आकर शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं। यज्ञ में ब्राह्मण जरूर चाहिए। यह है ज्ञान यज्ञ, भारत में यज्ञ बहुत रचते हैं। इसमें खास आर्य समाजी बहुत यज्ञ करते हैं। अब यह तो है रूद्र ज्ञान यज्ञ, जिसमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा होनी है। अब बुद्धि से काम लेना पड़ता है। कलियुग में तो बहुत मनुष्य हैं, इतनी सारी पुरानी दुनिया खलास हो जायेगी। कोई भी चीज काम में नहीं आनी है। सतयुग में तो फिर सब कुछ नया होगा। यहाँ तो कितना गन्द है। मनुष्य कैसे गन्दे रहते हैं। धनवान बड़े अच्छे महलों में रहते हैं। गरीब तो बिचारे गन्द में, झोपड़ियों में पड़े हैं। अब इन झोपड़ियों को डिस्ट्राय करते रहते हैं। उनको दूसरी जगह दे वह जमीन फिर बेचते रहते हैं। नहीं उठते तो जबरदस्ती उठाते हैं। गरीब दु:खी बहुत हैं, जो सुखी हैं वह भी स्थाई सुखी नहीं। अगर सुख होता तो क्यों कहते कि यह काग विष्टा समान सुख है।

शिव भगवानुवाच, हम इन माताओं के द्वारा स्वर्ग के द्वार खोल रहे हैं। माताओं पर कलष रखा है। वह फिर सबको ज्ञान अमृत पिलाती हैं। परन्तु तुम्हारा है प्रवृत्ति मार्ग। तुम हो सच्चे-सच्चे ब्राह्मण, तो सबको ज्ञान चिता पर बिठाते हो। अभी तुम बनते हो दैवी सम्प्रदाय। आसुरी सम्प्रदाय अर्थात् रावण राज्य। गांधी भी कहते थे राम राज्य हो। बुलाते हैं हे पतित-पावन आओ परन्तु अपने को पतित समझते थोड़ेही हैं। बाप बच्चों को सुजाग करते हैं, तुम घोर अन्धियारे से सोझरे में आये हो। मनुष्य तो समझते हैं गंगा स्नान करने से पावन बन जायेंगे। ऐसे ही गंगा में हरिद्वार का सारा किचड़ा पड़ता है। कहाँ फिर वह किचड़ा सारा खेती में ले जाते हैं। सतयुग में ऐसे काम होते नहीं। वहाँ तो अनाज ढेर के ढेर होता है। पैसा थोड़ेही खर्च करना पड़ता है। बाबा अनुभवी है ना। पहले कितना अनाज सस्ता था। सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य हैं हर चीज़ सस्ती रहती है। तो बाप कहते हैं – मीठे बच्चे, अभी तुमको पतित से पावन बनना है। युक्ति बहुत सहज बताते हैं, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। आत्मा में ही खाद पड़ने से मुलम्मे की बन गई है। जो पारसबुद्धि थे वही अब पत्थरबुद्धि बने हैं। तुम बच्चे अभी बाप के पास पत्थरनाथ से पारसनाथ बनने आये हो। बेहद का बाप तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं, सो भी गोल्डन एजेड विश्व का। यह है आइरन एजेड विश्व। बाप बैठ बच्चों को पारसपुरी का मालिक बनाते हैं। तुम जानते हो यहाँ के इतने महल माड़ियाँ आदि कोई काम में नहीं आयेंगे। सब खत्म हो जायेंगे। यहाँ क्या रखा है! अमेरिका के पास कितना सोना है! यहाँ तो थोड़ा बहुत सोना जो माताओं के पास है, वह भी लेते रहते हैं क्योंकि उनको तो कर्ज में सोना देना है। तुम्हारे पास वहाँ सोना ही सोना होता है। यहाँ कौड़ियाँ, वहाँ हीरे होंगे। इनको कहा जाता है आइरन एज। भारत ही अविनाशी खण्ड है, कभी विनाश नहीं होता। भारत है सबसे ऊंच ते ऊंच। तुम मातायें सारे विश्व का उद्धार करती हो। तुम्हारे लिए जरूर नई दुनिया चाहिए। पुरानी दुनिया का विनाश चाहिए। कितनी समझने की बातें हैं। शरीर निर्वाह अर्थ धन्धा आदि भी करना है। छोड़ना कुछ भी नहीं है। बाबा कहते हैं सब कुछ करते हुए मुझे याद करते रहो। भक्ति मार्ग में भी तुम मुझ माशूक को याद करते आये हो कि हमको आकर सांवरे से गोरा बनाओ। उनको मुसाफिर कहा जाता है। तुम सब मुसाफिर हो ना। तुम्हारा घर वह है, जहाँ सब आत्मायें रहती हैं।

तुम सबको ज्ञान चिता पर बिठाते हो। सब हिसाब-किताब चुक्तू कर जाने वाले हैं। फिर नयेसिर तुम आयेंगे, जितना याद में रहेंगे उतना पवित्र बनेंगे और ऊंच पद पायेंगे। माताओं को तो फुर्सत रहती है। मेल्स की बुद्धि धन्धे आदि तरफ चक्र लगाती रहती है, इसलिए बाप ने कलष भी माताओं पर रखा है। यहाँ तो स्त्री को कहते हैं कि पति ही तुम्हारा ईश्वर गुरू सब कुछ है। तुम उनकी दासी हो। अभी फिर बाप तुम माताओं को कितना ऊंच बनाते हैं। तुम नारियाँ ही भारत का उद्धार करती हो। कोई-कोई बाबा से पूछते हैं – आवागमन से छूट सकते हैं? बाबा कहते हैं – हाँ, कुछ समय के लिए। तुम बच्चे तो आलराउन्ड आदि से अन्त तक पार्ट बजाते हो। दूसरे जो हैं वह मुक्तिधाम में रहते हैं। उनका पार्ट ही थोड़ा है। वह स्वर्ग में तो जाने वाले हैं नहीं। आवागमन से मोक्ष उसको कहेंगे जो पिछाड़ी को आये और यह गये। ज्ञान आदि तो सुन न सकें। सुनते वही हैं जो शुरू से अन्त तक पार्ट बजाते हैं। कोई कहते हैं – हमको तो यही पसन्द है। हम वहाँ ही बैठे रहें। ऐसे थोड़ेही हो सकता है। ड्रामा में नूँधा हुआ है, जाकर पिछाड़ी में आयेंगे जरूर। बाकी सारा समय शान्तिधाम में रहते हैं। यह बेहद का ड्रामा है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) सच्चा-सच्चा ब्राह्मण बन सबको ज्ञान अमृत पिलाना है। ज्ञान चिता पर बिठाना है।

2) शरीर निर्वाह अर्थ धन्धा आदि सब कुछ करते पतित से पावन बनने के लिए बाप की याद में रहना है और सबको बाप की याद दिलाना है।

वरदान:- विशेषताओं के दान द्वारा महान बनने वाले महादानी भव

ज्ञान दान तो सब करते हैं लेकिन आप विशेष आत्माओं को अपनी विशेषताओं का दान करना है। जो भी आपके सामने आये उसे आप से बाप के स्नेह का अनुभव हो, आपके चेहरे से बाप का चित्र और चलन से बाप के चरित्र दिखाई दें। आपकी विशेषतायें देखकर वह विशेष आत्मा बनने की प्रेरणा प्राप्त करे, ऐसे महादानी बनो तो आदि से अन्त तक, पूज्य पन में भी और पुजारी पन में भी महान रहेंगे।

स्लोगन:- सदा आत्म अभिमानी रहने वाला ही सबसे बड़ा ज्ञानी है।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

जो सदा बाप की याद में लवलीन रह मैं-पन की त्याग-वृत्ति में रहते हैं, उन्हों से ही बाप दिखाई देता है। आप बच्चे नॉलेज के आधार से बाप की याद में समा जाते हो तो यह समाना ही लवलीन स्थिति है, जब लव में लीन हो जाते हो अर्थात् लगन में मग्न हो जाते हो तब बाप के समान बन जाते हो।

''मीठे बच्चे – अपने स्वधर्म को भूलना ही सबसे बड़ी भूल है, अभी तुम्हें अभुल बनना है, अपने घर और राज्य को याद करना है''

प्रश्नः- आप बच्चों की कौन-सी अवस्था ही समय के समीपता की निशानी है?

उत्तरः- आप बच्चे जब याद की यात्रा में सदा मस्त रहेंगे, बुद्धि का भटकना बन्द हो जायेगा, वाणी में याद का जौहर आ जायेगा, अपार खुशी में रहेंगे, घड़ी-घड़ी अपनी सतयुगी दुनिया के नज़ारे सामने आते रहेंगे तब समझो समय समीप है। विनाश में टाइम नहीं लगता, इसके लिए याद का चार्ट बढ़ाना है।

गीतः- तुम्हें पाके हमने जहान पा लिया है.....

ओम् शान्ति। रूहानी बच्चे इस गीत का अर्थ तो समझते होंगे। अब बेहद के बाप को तो पा लिया है। बेहद के बाप से स्वर्ग का वर्सा मिलता है, जिस वर्से को कोई भी छीन नहीं सकता। वर्से का नशा तब चला जाता है, जब रावण राज्य शुरू होता है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। बच्चों को सृष्टि ड्रामा का भी ज्ञान है। यह चक्र कैसे फिरता है। इनको नाटक भी कहें, ड्रामा भी कहें। बच्चे समझते हैं बरोबर बाप आकर सृष्टि का चक्र भी समझाते हैं। जो ब्राह्मण कुल के हैं, उन्हों को ही समझाते हैं। बच्चे तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो, मैं तुमको समझाता हूँ। पहले तुम सुनते थे 84 लाख जन्म लेने बाद फिर एक जन्म मनुष्य का मिलता है। ऐसे नहीं है। अभी तुम सब आत्मायें नम्बरवार आती जाती हो। बुद्धि में आया है – पहले-पहले हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म के पूज्य थे, फिर हम ही पुजारी बने हैं। आपेही पूज्य आपेही पुजारी – यह भी गायन है। मनुष्य फिर भगवान के लिए समझते हैं कि आपेही पूज्य आपेही पुजारी बनते हैं। आपके ही यह सब रूप हैं। अनेक मत-मतान्तर हैं ना। तुम अभी श्रीमत पर चलते हो। तुम समझते हो हम स्टूडेण्ट पहले तो कुछ नहीं जानते थे फिर पढ़कर ऊंच इम्तहान पास करते जाते हैं। वह स्टूडेण्ट भी शुरू में तो कुछ भी नहीं जानते हैं, फिर इम्तहान पास करते-करते समझते हैं कि अभी हमने बैरिस्टरी पास कर ली है। तुम भी अब जानते हो – हम पढ़कर मनुष्य से देवता बन रहे हैं सो भी विश्व के मालिक। वहाँ तो है ही एक धर्म, एक राज्य। तुम्हारा राज्य कोई छीन न सके। वहाँ तुमको पवित्रता-शान्ति-सुख-सम्पत्ति सब कुछ है। गीत में भी सुना ना। अब यह गीत तुमने तो नहीं बनाये हैं। अनायास ही ड्रामा अनुसार इस समय के लिए यह बने हुए हैं। मनुष्यों के बनाये हुए गीतों का अर्थ बाप बैठ समझाते हैं। अभी तुम यहाँ शान्ति में बैठ बाप से वर्सा ले रहे हो, जो कोई छीन न सके। आधाकल्प सुख का वर्सा रहता है। बाप समझाते हैं मीठे-मीठे बच्चों आधाकल्प से भी जास्ती तुम सुख भोगते हो। फिर रावण राज्य शुरू होता है। मन्दिर भी ऐसे हैं जहाँ चित्र दिखाते हैं – देवतायें वाम मार्ग में कैसे जाते हैं। ड्रेस तो वही है। ड्रेस बाद में बदलती है। हर एक राजा की अपनी-अपनी ड्रेस, ताज आदि सब अलग-अलग होते हैं।

अब बच्चे जानते हैं हम शिवबाबा से ब्रह्मा द्वारा वर्सा ले रहे हैं। बाप तो बच्चे-बच्चे ही कहते हैं। बच्चों तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। सुनती तो आत्मा है ना। हम आत्मा हैं, न कि शरीर। और जो भी मनुष्य मात्र हैं उन्हों को अपने शरीर के नाम का नशा है क्योंकि देह-अभिमानी हैं। हम आत्मा हैं यह जानते ही नहीं। वह तो आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा कह देते हैं। अभी तुमको बाप ने समझाया है तुम आत्मा सो विश्व के मालिक देवी-देवता बन रहे हो। यह ज्ञान अभी है, हम सो देवता फिर क्षत्रिय घराने में आयेंगे। 84 जन्मों का हिसाब भी चाहिए ना। सब तो 84 जन्म नहीं लेंगे। सब इकट्ठे थोड़ेही आ जाते हैं। तुम जानते हो कौन से धर्म कैसे आते रहते हैं। हिस्ट्री पुरानी फिर नई होती है। अभी यह है ही पतित दुनिया। वह है पावन दुनिया। फिर दूसरे-दूसरे धर्म आते हैं, यहाँ कर्मक्षेत्र पर यह एक ही नाटक चलता है। मुख्य हैं 4 धर्म। इस संगम पर बाप आकर ब्राह्मण सम्प्रदाय स्थापन करते हैं। विराट रूप का चित्र बनाते हैं, परन्तु उसमें यह भूल है। बाप आकर सब बातें समझाए अभुल बनाते हैं। बाप तो न कभी शरीर में आते हैं, न भूल करते हैं। वह तो थोड़े समय के लिए तुम बच्चों को सुखधाम का और अपने घर का रास्ता बताने के लिए इनके रथ में आते हैं। न सिर्फ रास्ता बताते हैं परन्तु लाइफ भी बनाते हैं। कल्प-कल्प तुम घर जाते हो फिर सुख का पार्ट भी बजाते हो। बच्चों को भूल गया है – हम आत्माओं का स्वधर्म है ही शान्त। इस दु:ख की दुनिया में शान्ति कैसे होगी – इन सब बातों को तुम समझ गये हो। तुम सबको समझाते भी हो। आहिस्ते-आहिस्ते सब आते जायेंगे, विलायत वालों को भी मालूम पड़ेगा – यह सृष्टि चक्र कैसे

फिरता है, इनकी आयु कितनी है। फारेनर्स भी तुम्हारे पास आयेंगे वा बच्चे वहाँ जाकर सृष्टि चक्र का राज़ समझायेंगे। वह समझते हैं कि क्राइस्ट गॉड के पास जाए पहुँचा। क्राइस्ट को गॉड का बच्चा समझते हैं। कई फिर यह समझते हैं कि क्राइस्ट भी पुनर्जन्म लेते-लेते अभी बेगर है। जैसे तुम भी बेगर हो ना। बेगर अर्थात् तमोप्रधान। समझते हैं क्राइस्ट भी यहाँ है, फिर कब आयेंगे, यह नहीं जानते। तुम समझा सकते हो – तुम्हारा धर्म स्थापक फिर अपने समय पर धर्म स्थापन करने आयेगा। उनको गुरू नहीं कह सकते। वह धर्म स्थापन करने आते हैं। सद्गति दाता सिर्फ एक है, वह जो भी धर्म स्थापन करने आते हैं वह सब पुनर्जन्म लेते-लेते अभी आकर तमोप्रधान बने हैं। अन्त में सारा झाड़ जड़जड़ीभूत अवस्था को पा लिया है। अभी तुम जानते हो – सारा झाड़ खड़ा है, बाकी देवी-देवता धर्म का फाउन्डेशन है नहीं। (बड़ का मिसाल) यह बातें बाप ही बच्चों को बैठ समझाते हैं। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए। तुमको मालमू पड़ा है हम सो देवी-देवता थे फिर अब बनते हैं। यहाँ तुम आते ही हो सत्य नारायण की कथा सुनने, जिससे नर से नारायण बनेंगे। नारायण बनेंगे तो जरूर लक्ष्मी भी होगी। लक्ष्मी-नारायण होंगे तो जरूर उन्हों की राजधानी भी होगी ना। अकेले लक्ष्मी-नारायण तो नहीं बनेंगे। लक्ष्मी बनने की अलग कथा थोड़ेही है। नारायण के साथ लक्ष्मी भी बनती है। लक्ष्मी भी कभी नारायण बनती है। नारायण फिर कभी लक्ष्मी बनते हैं। कोई-कोई गीत बहुत अच्छे हैं। माया के घुटके आने पर गीत सुनने से हर्षितपना आ जायेगा। जैसे तैरना सीखना होता है तो पहले घुटके आते हैं फिर उनको पकड़ लेते हैं। यहाँ भी माया के घुटके बहुत खाते हैं। तैरने वाले तो बहुत होते हैं। उन्हों की भी रेस होती है तो तुम्हारी भी रेस होती है – उस पार जाने की। मामेकम् याद करना है। याद नहीं करते तो घुटका खाते हैं। बाप कहते हैं – याद की यात्रा से ही बेड़ा पार होगा। तुम उस पार चले जायेंगे। तारू (तैराक) कोई बहुत तीखे होते हैं, कोई कम। यहाँ भी ऐसे हैं। बाबा के पास चार्ट भेज देते हैं। बाबा जांच करते हैं। याद के चार्ट को यह राइट रीति समझते हैं या रांग समझते हैं। कोई-कोई दिखाते हैं – हम सारे दिन में 5 घण्टा याद में रहा। हम विश्वास नहीं करते, जरूर भूल हुई है। कोई समझते हैं हम जितना समय यहाँ पढ़ते हैं उतना समय तो चार्ट ठीक रहता है। परन्तु नहीं। बहुत हैं यहाँ बैठे हुए भी, सुनते हुए भी बुद्धि बाहर में कहाँ-कहाँ चली जाती है। पूरा सुनते भी नहीं हैं। भक्ति मार्ग में ऐसे-ऐसे होता है। संन्यासी लोग कथा सुनाते हैं फिर बीच-बीच में पूछते हैं, हमने क्या सुनाया? देखते हैं यह तवाई हो बैठा है तो पूछते हैं फिर बता नहीं सकते। बुद्धि कहाँ न कहाँ चली जाती है। एक अक्षर भी नहीं सुनते। यहाँ भी ऐसे हैं। बाबा देखते रहते हैं – समझा जाता है इनकी बुद्धि कहाँ बाहर भटकती रहती है। इधर-उधर देखते रहते हैं। ऐसे-ऐसे भी कोई-कोई नये आते हैं। बाबा समझ जाते हैं पूरा समझा नहीं है इसलिए बाबा कहते हैं नये-नये को जल्दी यहाँ क्लास में आने की छुट्टी न दो। नहीं तो वायुमण्डल को बिगाड़ते हैं। आगे चल तुम देखेंगे जो अच्छे-अच्छे बच्चे होंगे यहाँ बैठे-बैठे वैकुण्ठ में चले जायेंगे। बहुत खुशी होती रहेगी। घड़ी-घड़ी चले जायेंगे – अभी टाइम नजदीक है। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार तुम्हारी अवस्था ऐसी हो जायेगी। घड़ी-घड़ी स्वर्ग में अपने महल देखते रहेंगे। जो कुछ बताना करना होगा उनका साक्षात्कार होता रहेगा। समय तो देख रहे हो। कैसे-कैसे तैयारियां हो रही हैं। बाप कहते हैं – देखना कैसे एक सेकण्ड में सारी दुनिया के मनुष्य खाक में मिल जायेंगे। बाम लगाया और यह खलास हुए।

तुम बच्चे जानते हो अभी अपनी राजाई स्थापन हो रही है। अभी तो याद की यात्रा में मस्त रहना है। वह जौहर भरना है जो कोई को भी दृष्टि से तीर लग जाए। पिछाड़ी में भीष्म पितामह आदि जैसे को तुमने ही ज्ञान के बाण मारे हैं। झट समझ जायेंगे, यह तो सत्य कहते हैं। ज्ञान का सागर पतित-पावन तो निराकार भगवान है। श्रीकृष्ण हो न सके। उनका तो जन्म दिखाते हैं। श्रीकृष्ण के वही फीचर्स फिर कभी मिल न सकें। फिर सतयुग में वही फीचर्स मिलेंगे। हर एक जन्म में, हर एक के फीचर्स अलग-अलग होते हैं। यह ड्रामा का पार्ट ऐसा बना हुआ है। वहाँ तो नैचुरल ब्युटीफुल फीचर्स होते हैं। अब तो दिन-प्रतिदिन तन भी तमोप्रधान होते जाते हैं। पहले-पहले सतोप्रधान फिर सतो-रजो-तमो हो जाते हैं। यहाँ तो देखो कैसे-कैसे बच्चे जन्म लेते हैं। कोई की टांग नहीं चलती, कोई जामड़े होते हैं। क्या-क्या हो जाता है। सतयुग में ऐसे थोड़ेही होता है। वहाँ देवताओं को दाढ़ी आदि भी नहीं होती। क्लीनशेव होती है। नैन-चैन से मालूम पड़ता है यह मेल है, यह फीमेल है। आगे चल तुमको बहुत साक्षात्कार होते रहेंगे। तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। बाबा कल्प-कल्प आकर हमको राजयोग सिखलाए मनुष्य से देवता बनाते हैं। यह भी तुम बच्चे जानते हो कि और जो भी धर्म वाले हैं सब

अपने-अपने सेक्शन में चले जायेंगे। आत्माओं का झाड़ भी दिखाते हैं ना। चित्रों में बहुत करेक्शन करते, बदलते जायेंगे। जैसे बाबा सूक्ष्मवतन के लिए समझाते हैं, संशय बुद्धि तो कहेंगे यह क्या! आगे यह कहते थे, अभी यह कहते हैं! लक्ष्मी-नारायण के दो रूप को मिलाकर विष्णु कहते हैं। बाकी 4 भुजा वाला मनुष्य थोड़ेही होता है। रावण के 10 शीश दिखाते हैं। ऐसे कोई मनुष्य होते नहीं। हर वर्ष बैठ जलाते हैं। जैसे गुड़ियों का खेल।

मनुष्य कहते हैं – शास्त्रों बिगर हम जी नहीं सकते। शास्त्र तो हमारे प्राण हैं। गीता का देखो मान कितना है। यहाँ तो तुम्हारे पास मुरलियों का ढेर इकट्ठा हो जाता है। तुम रखकर क्या करेंगे! दिन-प्रतिदिन तुम नई-नई प्वाइंट्स सुनते रहते हो। हाँ प्वाइंट्स नोट करना अच्छा है। भाषण करते समय रिहर्सल करेंगे। यह-यह प्वाइंट्स समझायेंगे। टॉपिक की लिस्ट होनी चाहिए। आज इस टॉपिक पर समझायेंगे। रावण कौन है, राम कौन है? सच क्या है, वह हम आपको बताते हैं। इस समय रावण राज्य सारी दुनिया में है। 5 विकार तो सबमें हैं। बाप आकर फिर रामराज्य की स्थापना करते हैं। यह हार और जीत का खेल है। हार कैसे होती है! 5 विकारों रूपी रावण से। आगे पवित्र गृहस्थ आश्रम था सो अब पतित बन गये हैं। लक्ष्मी-नारायण सो फिर ब्रह्मा-सरस्वती। बाप भी कहते हैं मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त में प्रवेश करता हूँ। तुम कहेंगे हम भी बहुत जन्मों के अन्त में बाप से ज्ञान ले रहे हैं। यह सब समझने की बातें हैं। कोई की डलहेड बुद्धि है तो समझते नहीं हैं। यह तो राजधानी स्थापन हो रही है। बहुत आये फिर चले गये, वह फिर आ जायेंगे। प्रजा में पाई पैसे का पद पा लेंगे। वह भी तो चाहिए ना। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) सदा इसी नशे में रहना है कि हम अभी यह पढ़ाई पूरी कर मनुष्य से देवता सो विश्व के मालिक बनेंगे। हमारे राज्य में पवित्रता-सुख-शान्ति सब कुछ होगा। उसे कोई छीन नहीं सकता।

2) इस पार से उस पार जाने के लिए याद की यात्रा में अच्छा तैराक बनना है। माया के घुटके नहीं खाने हैं। अपनी जांच करनी है, याद के चार्ट को यथार्थ समझकर लिखना है।

वरदान:- पुरूषार्थ और प्रालब्ध के हिसाब को जानकर तीव्रगति से आगे बढ़ने वाले नॉलेजफुल भव

पुरूषार्थ द्वारा बहुतकाल की प्रालब्ध बनाने का यही समय है इसलिए नॉलेजफुल बन तीव्रगति से आगे बढ़ो। इसमें यह नहीं सोचो कि आज नहीं तो कल बदल जायेंगे। इसे ही अलबेलापन कहा जाता है। अभी तक बापदादा स्नेह के सागर बन सर्व सम्बन्ध के स्नेह में बच्चों का अलबेलापन, साधारण पुरूषार्थ देखते सुनते भी एकस्ट्रा मदद से, एकस्ट्रा मार्क्स देकर आगे बढ़ा रहे हैं। तो नॉलेजफुल बन हिम्मत और मदद के विशेष वरदान का लाभ लो।

स्लोगन:- प्रकृति का दास बनने वाले ही उदास होते हैं, इसलिए प्रकृतिजीत बनो।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

जैसे कोई सागर में समा जाए तो उस समय सिवाय सागर के और कुछ नज़र नहीं आयेगा। तो बाप अर्थात् सर्वगुणों के सागर में समा जाना, इसको कहा जाता है लवलीन स्थिति। तो बाप में नहीं समाना है, लेकिन बाप की याद में, स्नेह में समा जाना है।

''मीठे बच्चे – श्रीमत पर चल सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति पाने का रास्ता बताओ, सारा दिन यही धन्धा करते रहो''

प्रश्नः- बाप ने कौन-सी सूक्ष्म बातें सुनाई हैं जो बहुत समझने की हैं?

उत्तरः- सतयुग अमरलोक है, वहाँ आत्मा एक चोला बदल दूसरा लेती है लेकिन मृत्यु का नाम नहीं इसलिए उसे मृत्युलोक नहीं कहा जाता। 2. शिवबाबा की बेहद रचना है, ब्रह्मा की रचना इस समय सिर्फ तुम ब्राह्मण हो। त्रिमूर्ति शिव कहेंगे, त्रिमूर्ति ब्रह्मा नहीं। यह सब बहुत सूक्ष्म बातें बाप ने सुनाई हैं। ऐसी-ऐसी बातों पर विचार कर बुद्धि के लिए स्वयं ही भोजन तैयार करना है।

ओम् शान्ति। त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। अब वो लोग त्रिमूर्ति ब्रह्मा कहते हैं। बाप कहते हैं – त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। त्रिमूर्ति ब्रह्मा भगवानुवाच नहीं कहते। तुम त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच कह सकते हो। वो लोग तो शिव-शंकर कह मिला देते हैं। यह तो सीधा है। त्रिमूर्ति ब्रह्मा के बदले त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। मनुष्य तो कह देते – शंकर आंख खोलते हैं तो विनाश हो जाता है। यह सब बुद्धि से काम लिया जाता है। तीन का ही मुख्य पार्ट है। ब्रह्मा और विष्णु का तो बड़ा पार्ट है 84 जन्मों का। विष्णु का और प्रजापिता ब्रह्मा का अर्थ भी समझा है, पार्ट है इन तीन का। ब्रह्मा का तो नाम गाया हुआ है आदि देव, एडम। प्रजापिता का मन्दिर भी है। यह है विष्णु का अथवा कृष्ण का अन्तिम 84 वां जन्म, जिसका नाम ब्रह्मा रखा है। सिद्ध तो करना ही है – ब्रह्मा और विष्णु। अब ब्रह्मा को तो एडाप्टेड कहेंगे। यह दोनों बच्चे हैं शिव के। वास्तव में बच्चा एक है। हिसाब करेंगे तो ब्रह्मा है शिव का बच्चा। बाप और दादा। विष्णु का नाम ही नहीं आता। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा स्थापना कर रहे हैं। विष्णु द्वारा स्थापना नहीं कराते। शिव के भी बच्चे हैं, ब्रह्मा के भी बच्चे हैं। विष्णु के बच्चे नहीं कह सकते। न लक्ष्मी-नारायण को ही बहुत बच्चे हो सकते हैं। यह है बुद्धि के लिए भोजन। आपेही भोजन बनाना चाहिए। सबसे जास्ती पार्ट कहेंगे विष्णु का। 84 जन्मों का विराट रूप भी विष्णु का दिखाते हैं, न कि ब्रह्मा का। विराट रूप विष्णु का ही बनाते हैं क्योंकि पहले-पहले प्रजापिता ब्रह्मा का नाम धरते हैं। ब्रह्मा का तो बहुत थोड़ा पार्ट है इसलिए विराट रूप विष्णु का दिखाते हैं। चतुर्भुज भी विष्णु का बना देते। वास्तव में यह अलंकार तो तुम्हारे हैं। यह भी बड़ी समझने की बातें हैं। कोई मनुष्य समझा न सके। बाप नये-नये तरीके से समझाते रहते हैं। बाप कहते हैं त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच राइट है ना। विष्णु, ब्रह्मा और शिव। इसमें भी प्रजापिता ब्रह्मा ही बच्चा है। विष्णु को बच्चा नहीं कहेंगे। भल क्रियेशन कहते हैं परन्तु रचना तो ब्रह्मा की होगी ना। जो फिर भिन्न नाम रूप लेती है। मुख्य पार्ट तो उनका है। ब्रह्मा का पार्ट भी बहुत थोड़ा है इस समय का। विष्णु का कितना समय राज्य है! सारे झाड़ का बीज रूप है शिवबाबा। उनकी रचना को सालिग्राम कहेंगे। ब्रह्मा की रचना को ब्राह्मण-ब्राह्मणियां कहेंगे। अब जितनी शिव की रचना है उतनी ब्रह्मा की नहीं। शिव की रचना तो बहुत है। सभी आत्मायें उनकी औलाद हैं। ब्रह्मा की रचना तो सिर्फ तुम ब्राह्मण ही बनते हो। हद में आ गये ना। शिवबाबा की है बेहद की रचना – सभी आत्मायें। बेहद की आत्माओं का कल्याण करते हैं। ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना करते हैं। तुम ब्राह्मण ही जाकर स्वर्गवासी बनेंगे। और तो कोई को स्वर्गवासी नहीं कहेंगे, निर्वाणवासी अथवा शान्तिधाम वासी तो सब बनते हैं। सबसे ऊंच सर्विस शिवबाबा की होती है। सभी आत्माओं को ले जाते हैं। सभी का पार्ट अलग-अलग है। शिवबाबा भी कहते हैं मेरा पार्ट अलग है। सबका हिसाब-किताब चुक्तू कराए तुमको पतित से पावन बनाए ले जाता हूँ। तुम यहाँ मेहनत कर रहे हो पावन बनने के लिए। दूसरे सब कयामत के समय हिसाब-किताब चुक्तू कर जायेंगे। फिर मुक्तिधाम में बैठे रहेंगे। सृष्टि का चक्र तो फिरना है।

तुम बच्चे ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण बन फिर देवता बन जाते हो। तुम ब्राह्मण श्रीमत पर सेवा करते हो। सिर्फ मनुष्यों को रास्ता बताते हो – मुक्ति और जीवनमुक्ति को पाना है तो ऐसे पा सकते हो। दोनों चाबी हाथ में हैं। यह भी जानते हो कौन-कौन मुक्ति में, कौन-कौन जीवनमुक्ति में जायेंगे। तुम्हारा सारा दिन यही धंधा है। कोई अनाज आदि का धन्धा करते हैं तो बुद्धि में सारा दिन वही रहता है। तुम्हारा धन्धा है रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानना और किसको मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताना। जो इस धर्म के होंगे वह निकल आयेंगे। ऐसे बहुत धर्म के हैं जो बदल नहीं सकते। जैसे इंगलो क्रिश्चियन

काले होते हैं। रूप तो नहीं बदलता है। सिर्फ ऐसे बदल देंगे। ऐसे नहीं कि फीचर्स बदल जाते हैं। सिर्फ धर्म को मान लेते हैं। कई बौद्ध धर्म को मानते हैं क्योंकि देवी-देवता धर्म तो प्राय: लोप है ना। एक भी ऐसा नहीं जो कहे हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म के हैं। देवताओं के चित्र काम में आते हैं, आत्मा तो अविनाशी है, वह कभी मरती नहीं। एक शरीर छोड़ फिर दूसरा लेकर पार्ट बजाती है। उनको मृत्युलोक नहीं कहा जाता। वह है ही अमरलोक। चोला सिर्फ बदलती है। यह बातें बड़ी सूक्ष्म समझने की हैं। मुट्ठा (थोक) नहीं है। जैसे शादी होती है तो किनको रेज़गारी, किनको मुट्ठा देते हैं। कोई सब दिखाकर देते हैं, कोई बन्द पेटी ही देते हैं। किस्म-किस्म के होते हैं। तुमको तो वर्सा मिलता है मुट्ठा, क्योंकि तुम सब ब्राइड्स हो। बाप है ब्राइडग्रुम। तुम बच्चों को श्रृंगार कर विश्व की बादशाही मुट्ठे में देते हैं। विश्व का मालिक तुम बनते हो।

मुख्य बात है याद की। ज्ञान तो बहुत सहज है। भल है तो सिर्फ अल्फ को याद करना। परन्तु विचार किया जाता है याद ही झट खिसक जाती है। बहुत करके कहते हैं बाबा याद भूल जाती है। तुम किसको भी समझाओ तो हमेशा याद अक्षर बोलो। योग अक्षर रांग है। टीचर को स्टूडेन्ट की याद रहती है। फादर है सुप्रीम सोल। तुम आत्मा सुप्रीम नहीं हो। तुम हो पतित। अब बाप को याद करो। टीचर को, बाप को, गुरू को याद किया जाता है। गुरू लोग बैठ शास्त्र सुनायेंगे, मन्त्र देंगे। बाबा का मन्त्र एक ही है – मनमनाभव। फिर क्या होगा? मध्याजी भव। तुम विष्णुपुरी में चले जायेंगे। तुम सब तो राजा-रानी नहीं बनेंगे। राजा-रानी और प्रजा होती है। तो मुख्य है त्रिमूर्ति। शिवबाबा के बाद है ब्रह्मा जो फिर मनुष्य सृष्टि अर्थात् ब्राह्मण रचते हैं। ब्राह्मणों को बैठ फिर पढ़ाते हैं। यह नई बात है ना। तुम ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ बहन-भाई ठहरे। बुढ़े भी कहेंगे हम भाई-बहन हैं। यह अन्दर में समझना है। किसको फालतू ऐसे कहना नहीं है। भगवान ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सृष्टि रची तो भाई-बहन हुए ना। जबकि एक प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे हैं, यह समझने की बातें हैं। तुम बच्चों को तो बड़ी खुशी होनी चाहिए - हमको पढ़ाते कौन हैं? शिवबाबा। त्रिमूर्ति शिव। ब्रह्मा का भी बहुत थोड़ा समय पार्ट है। विष्णु का सतयुगी राजधानी में 8 जन्म पार्ट चलता है। (8गद्दियां चलती हैं) ब्रह्मा का तो एक ही जन्म का पार्ट है। विष्णु का पार्ट बड़ा कहेंगे। त्रिमूर्ति शिव है मुख्य। फिर आता है ब्रह्मा का पार्ट जो तुम बच्चों को विष्णुपुरी का मालिक बनाते हैं। ब्रह्मा से ब्राह्मण सो फिर देवता बनते हैं। तो यह हो गया अलौकिक फादर। थोड़ा समय यह फादर है जिसको अब मानते हैं। आदि देव, आदम और बीबी। इनके बिगर सृष्टि कैसे रचेंगे। आदि देव और आदि देवी है ना। ब्रह्मा का पार्ट भी सिर्फ संगम समय का है। देवताओं का पार्ट तो फिर भी बहुत चलता है। देवतायें भी सिर्फ सतयुग में कहेंगे। त्रेता में क्षत्रिय कहा जाता। यह बड़ी गुह्य-गुह्य प्वाइंट्स मिलती हैं। सब तो एक ही समय वर्णन नहीं कर सकते। वह त्रिमूर्ति ब्रह्मा कहते हैं। शिव को उड़ा दिया है। हम फिर त्रिमूर्ति शिव कहते हैं। यह चित्र आदि सब हैं भक्ति मार्ग के। प्रजा रचते हैं ब्रह्मा द्वारा फिर तुम देवता बनते हो। विनाश के समय नैचुरल कैलेमिटीज भी आती है। विनाश तो होना ही है, कलियुग के बाद फिर सतयुग होगा। इतने सब शरीरों का विनाश तो होना ही है। सब कुछ प्रैक्टिकल में चाहिए ना। सिर्फ आंख खोलने से थोड़ेही हो सकता। जब स्वर्ग गुम होता है तो उस समय भी अर्थक्वेक आदि होती हैं। तो क्या उस समय भी शंकर आंख ऐसे मीचते हैं। गाते हैं ना द्वारिका अथवा लंका पानी के नीचे चली गई।

अब बाप समझाते हैं – मैं आया हूँ पत्थरबुद्धियों को पारसबुद्धि बनाने। मनुष्य पुकारते हैं – हे पतित-पावन आओ, आकर पावन दुनिया बनाओ। परन्तु यह नहीं समझते हैं कि अभी कलियुग है इसके बाद सतयुग आयेगा। तुम बच्चों को खुशी में नाचना चाहिए। बैरिस्टर आदि इम्तहान पास करते हैं तो अन्दर में ख्याल करते हैं ना – हम पैसे कमायेंगे, फिर मकान बनायेंगे। यह करेंगे। तो तुम अभी सच्ची कमाई कर रहे हो। स्वर्ग में तुमको सब कुछ नया माल मिलेगा। ख्याल करो सोमनाथ का मन्दिर क्या था! एक मन्दिर तो नहीं होगा। उस मन्दिर को 2500 वर्ष हुआ। बनाने में टाइम तो लगा होगा। पूजा की होगी उसके बाद फिर वह लूटकर ले गये। फौरन तो नहीं आये होंगे। बहुत मन्दिर होंगे। पूजा के लिए बैठ मन्दिर बनाये हैं। अभी तुम जानते हो बाप को याद करते-करते हम गोल्डन एज में चले जायेंगे। आत्मा पवित्र बन जायेगी। मेहनत करनी पड़ती है। मेहनत बिगर काम नहीं चलेगा। गाया भी जाता है – सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। परन्तु ऐसे थोड़ेही मिल जाती है, यह समझा जाता है – बच्चे बनेंगे तो मिलेगी जरूर। तुम अभी मेहनत कर रहे हो मुक्तिधाम में जाने के लिए। बाप की याद में रहना पड़ता है। दिन-प्रतिदिन बाप तुम बच्चों को रिफाइन बुद्धि बनाते हैं। बाप कहते हैं तुमको बहुत-बहुत गुह्य

बातें सुनाता हूँ। आगे थोड़ेही यह सुनाया था कि आत्मा भी बिन्दी है, परमात्मा भी बिन्दी है। कहेंगे पहले क्यों नहीं यह बताया। ड्रामा में नहीं था। पहले ही तुमको यह सुनायें तो तुम समझ न सको। धीरे-धीरे समझाते रहते हैं। यह है रावण राज्य। रावण राज्य में सब देह-अभिमानी बन जाते हैं। सतयुग में होते हैं आत्म-अभिमानी। अपने को आत्मा जानते हैं। हमारा शरीर बड़ा हुआ है, अब यह छोड़कर फिर छोटा लेना है। आत्मा का शरीर पहले छोटा होता है फिर बड़ा होता है। यहाँ तो कोई की कितनी आयु, कोई की कितनी। कोई की अकाले मृत्यु हो जाती है। कोई-कोई की 125 वर्ष की भी आयु होती है। तो बाप समझाते हैं तुमको खुशी बहुत होनी चाहिए – बाप से वर्सा लेने की। गन्धर्वी विवाह किया यह कोई खुशी की बात नहीं, यह तो कमज़ोरी है। कुमारी अगर कहे हम पवित्र रहना चाहते हैं तो कोई मार थोड़ेही सकते हैं। ज्ञान कम है तो डरते हैं। छोटी कुमारी को भी अगर कोई मारे, खून आदि निकले तो पुलिस में रिपोर्ट करे तो उसकी भी सज़ा मिल सकती है। जानवर को भी अगर कोई मारते हैं तो उन पर केस होता है, दण्ड पड़ता है। तुम बच्चों को भी मार नहीं सकते। कुमार को भी मार नहीं सकते। वह तो अपना कमा सकते हैं। शरीर निर्वाह कर सकते हैं। पेट कोई जास्ती नहीं खाता है – एक मनुष्य का पेट 4-5 रूपया, एक मनुष्य का पेट 400-500 रूपया। पैसा बहुत है तो हबच हो जाती है। गरीबों को पैसे ही नहीं तो हबच भी नहीं। वह सूखी रोटी में ही खुश होते हैं। बच्चों को जास्ती खान-पान के हंगामें में भी नहीं जाना चाहिए। खाने का शौक नहीं रहना चाहिए।

तुम जानते हो वहाँ हमें क्या नहीं मिलेगा! बेहद की बादशाही, बेहद का सुख मिलता है। वहाँ कोई बीमारी आदि होती नहीं। हेल्थ वेल्थ हैप्पीनेस सब रहता है। बुढ़ापा भी वहाँ बहुत अच्छा रहता। खुशी रहती है। कोई प्रकार की तकलीफ नहीं रहती है। प्रजा भी ऐसी बनती है। परन्तु ऐसे भी नहीं – अच्छा, प्रजा तो प्रजा ही सही। फिर तो ऐसे होंगे जैसे यहाँ के भील। सूर्यवंशी लक्ष्मी-नारायण बनना है तो फिर इतना पुरूषार्थ करना चाहिए। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) हम ब्रह्मा की नई रचना आपस में भाई-बहन हैं, यह अन्दर समझना है किसी को कहने की दरकार नहीं। सदा इसी खुशी में रहना है कि हमें शिवबाबा पढ़ाते हैं।

2) खान-पान के हंगामें में जास्ती नहीं जाना है। हबच (लालच) छोड़ बेहद बादशाही के सुखों को याद करना है।

वरदान:- अनेक प्रकार की प्रवृत्ति से निवृत्त होने वाले नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप भव

स्व की प्रवृत्ति, दैवी परिवार की प्रवृत्ति, सेवा की प्रवृत्ति, हद के प्राप्तियों की प्रवृत्ति इन सभी से नष्टोमोहा अर्थात् न्यारा बनने के लिए बापदादा के स्नेह रूप को सामने रख स्मृति स्वरूप बनो। स्मृति स्वरूप बनने से नष्टोमोहा स्वत: बन जायेंगे। प्रवृत्ति से निवृत्त होना अर्थात् मैं पन को समाप्त कर नष्टोमोहा बनना। ऐसे नष्टोमोहा बनने वाले बच्चे बहुतकाल के पुरूषार्थ से बहुतकाल के प्रालब्ध की प्राप्ति के अधिकारी बनेंगे।

स्लोगन:- कमल फूल समान न्यारे रहो तो प्रभू का प्यार मिलता रहेगा।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

जो नम्बरवन परवाने हैं उनको स्वयं का अर्थात् इस देह-भान का, दिन-रात का, भूख और प्यास का, अपने सुख के साधनों का, आराम का, किसी भी बात का आधार नहीं। वे सब प्रकार की देह की स्मृति से खोये हुए अर्थात् निरन्तर शमा के लव में लवलीन रहते हैं। जैसे शमा ज्योति-स्वरुप है, लाइट माइट रूप है, वैसे शमा के समान स्वयं भी लाइट-माइट रूप बन जाते हैं।

''मीठे बच्चे – तुम आसुरी मत पर चलने से दरबदर हो गये, अब ईश्वरीय मत पर चलो तो सुखधाम चले जायेंगे''

प्रश्नः- बच्चों को बाप से कौन सी उम्मीद रखनी है, कौन सी नहीं?

उत्तरः- बाप से यही उम्मीद रखनी है कि हम बाप द्वारा पवित्र बन अपने घर और घाट (राजधानी) में जायें। बाबा कहते हैं – बच्चे, मेरे में यह उम्मीद नहीं रखो कि फलाना बीमार है, आशीर्वाद मिले। यहाँ कृपा या आशीर्वाद की बात ही नहीं है। मैं तो आया हूँ तुम बच्चों को पतित से पावन बनाने। अब मैं तुमको ऐसे कर्म सिखलाता हूँ जो विकर्म न बनें।

गीतः- आज नहीं तो कल बिखरेंगे यह बादल.....

ओम् शान्ति। रूहानी बच्चों ने गीत सुना। बच्चे जानते हैं अब घर चलना है। बाप आये हैं लेने के लिए। यह याद भी तब रहेगी जब आत्म-अभिमानी होंगे। देह-अभिमान में होंगे तो याद भी नहीं रहेगी। बच्चे जानते हैं बाबा मुसाफ़िर होकर आया है। तुम भी मुसाफिर होकर आये थे। अब अपने घर को भूल गये हो। फिर बाप ने घर याद दिलाया है और रोज़-रोज़ समझाते हैं। जब तक सतोप्रधान नहीं बने हो तो चल नहीं सकेंगे। बच्चे समझते हैं बाबा तो ठीक कहते हैं। बाप भी बच्चों को जो श्रीमत देते हैं तो सपूत बच्चे उस पर चल पड़ते हैं। इस समय और तो कोई ऐसा बाप नहीं जो अच्छी मत देवे इसलिए दरबदर हो पड़े हैं। श्रीमत देने वाला एक ही बाप है। उस मत पर भी कोई बच्चे नहीं चलते। वण्डर है। लौकिक बाप की मत पर चल पड़ते हैं। वह है आसुरी मत। यह भी है तो ड्रामा। परन्तु बच्चों को समझाते हैं तुमने आसुरी मत पर चल इस गति को पा लिया है। अब ईश्वरीय मत पर चलने से तुम सुखधाम में चले जायेंगे। वह है बेहद का वर्सा। रोज़ समझाते हैं। तो बच्चों को कितना हर्षित रहना चाहिए। सबको यहाँ तो नहीं बिठा सकते। घर में रहकर भी याद करना है। अभी पार्ट पूरा होने का है, अब वापिस घर चलना है। मनुष्य कितना भूले हुए हैं। कहा जाता है ना - यह तो अपना घर घाट ही भूल गये हैं। अब बाप कहते हैं घर को भी याद करो। अपनी राजधानी भी याद करो। अभी पार्ट पूरा होने का है, अब वापिस घर चलना है। क्या तुम भूल गये हो?

तुम बच्चे कह सकते हो – बाबा ड्रामा अनुसार हमारा पार्ट ही ऐसा है, जो हम घरबार को भूल एकदम भटक रहे हैं। भारतवासी ही अपने श्रेष्ठ धर्म, कर्म को भूल कर दैवी धर्म भ्रष्ट, दैवी कर्म भ्रष्ट हो पड़े हैं। अभी बाप ने सावधानी दी है, तुम्हारा धर्म कर्म तो यह था। वहाँ तुम जो कर्म करते थे वह अकर्म होता था। कर्म, अकर्म, विकर्म की गति बाप ने ही तुम्हें समझाई है। सतयुग में कर्म, अकर्म हो जाते हैं। रावण राज्य में कर्म विकर्म होते हैं। अभी बाप आया हुआ है, धर्म श्रेष्ठ कर्म श्रेष्ठ बनाने। तो अब श्रीमत पर कर्म श्रेष्ठ करना चाहिए। कोई भ्रष्ट कर्म करके किसको दु:ख नहीं देना चाहिए। ईश्वरीय बच्चों का यह काम नहीं है। जो डायरेक्शन मिलते हैं उस पर चलना है, दैवीगुण धारण करने हैं। भोजन भी शुद्ध लेना है, अगर लाचारी नहीं मिलता तो राय पूछो। बाबा समझते हैं नौकरी आदि में कहाँ थोड़ा खाना भी पड़ता है। जबकि योगबल से तुम राजाई स्थापन करते हो, पतित दुनिया को पावन बनाते हो तो भोजन को शुद्ध बनाना क्या बड़ी बात है। नौकरी तो करनी ही है। ऐसे तो नहीं बाप का बनें तो सब कुछ छोड़ यहाँ आकर बैठ जाना है। कितने ढेर बच्चे हैं, इतने सब तो रह नहीं सकते। रहना सबको गृहस्थ व्यवहार में है। यह समझना है – मैं आत्मा हूँ, बाबा आया हुआ है, हमको पवित्र बनाकर अपने घर ले जाते हैं फिर राजधानी में आ जायेंगे। यह तो पराया रावण का छी-छी घाट है। तुम बिल्कुल ही पतित बन गये हो, ड्रामा प्लैन अनुसार। बाप कहते हैं अभी मैं तुमको सुजाग करने आया हूँ तो श्रीमत पर चलो। जितना चलेंगे उतना श्रेष्ठ बनेंगे।

अभी तुम समझते हो हम बाप को जो बाप स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, उनको भूल गये। अब बाबा सुधारने आये हैं तो अच्छी रीति सुधरना चाहिए ना। खुशी में आना चाहिए। बेहद का बाप मिला है, बच्चों से बात ऐसे करते हैं जैसे तुम आत्मायें आपस में करती हो। है तो वह भी आत्मा। परम आत्मा है, उनका भी पार्ट है। तुम आत्मायें पार्टधारी हो। ऊंच ते ऊंच से लेकर नीच ते नीच का पार्ट है। भक्ति मार्ग में मनुष्य गाते हैं ईश्वर ही सब कुछ करते हैं। बाप कहते हैं मेरा ऐसा पार्ट थोड़ेही

है जो बीमार को अच्छा कर दूँ। हमारा पार्ट है रास्ता बताना कि तुम पवित्र कैसे बनो? पवित्र बनने से ही तुम घर में भी जा सकेंगे। राजधानी में भी जा सकेंगे। और कोई उम्मीद मत रखो। फलाना बीमार है, आशीर्वाद मिले। नहीं, आशीर्वाद, कृपा आदि की बात मेरे पास कुछ भी नहीं। उसके लिए साधू-सन्तों आदि के पास जाओ। तुम हमको बुलाते ही हो कि हे पतित-पावन आओ, आकर हमको पावन बनाओ। पावन दुनिया में ले चलो। तो बाप पूछते हैं मैं तुमको विषय सागर से निकाल पार ले जाता हूँ, फिर तुम विषय सागर में क्यों फँस जाते हो? भक्ति मार्ग में तुम्हारा यह हाल हुआ है। ज्ञान, भक्ति तुम्हारे लिए है। संन्यासी लोग भी कहते हैं ज्ञान, भक्ति और वैराग्य। परन्तु उनका अर्थ वह नहीं समझते। अब तुम्हारी बुद्धि में है ज्ञान, भक्ति बाद में वैराग्य। तो बेहद का वैराग्य सिखलाने वाला चाहिए। बाप ने समझाया था यह कब्रिस्तान है, इनके बाद परिस्तान बनना है। वहाँ हर कर्म, अकर्म होता है। अभी बाबा तुमको ऐसे कर्म सिखलाते हैं जो कोई भी विकर्म न बनें। किसी को भी दु:ख न दो। पतित का अन्न मत खाओ। विकार में मत जाओ। अबलाओं पर अत्याचार ही इस पर होते हैं। देखते रहते हो – माया के विघ्न कैसे पड़ते हैं। यह है सब गुप्त। कहते हैं देवताओं और असुरों की युद्ध लगी। फिर कहते हैं – पाण्डव और कौरवों की युद्ध लगी। अब लड़ाई तो एक ही है। बाप समझाते हैं मैं तुमको राजयोग सिखला रहा हूँ भविष्य 21 जन्मों के लिए। यह मृत्युलोक है। मनुष्य सत्य नारायण की कथा सुनते आये हैं, फायदा कुछ नहीं। अभी तुम सच्ची गीता सुनाते हो। रामायण भी तुम सच्ची सुनाते हो। एक राम-सीता की बात नहीं थी। इस समय तो सारी दुनिया लंका है। चारों ओर पानी है ना। यह है बेहद की लंका, जिसमें रावण का राज्य है। एक बाप है ब्राइडग्रूम। बाकी सब हैं ब्राइड्स। तुमको अब रावण राज्य से बाप छुड़ाते हैं। यह है शोक वाटिका। सतयुग को कहा जाता है अशोक वाटिका। वहाँ कोई शोक होता नहीं। इस समय तो शोक ही शोक है। अशोक एक भी नहीं रहता। नाम तो रख देते हैं अशोका होटल। बाप कहते हैं सारी दुनिया इस समय बेहद की होटल ही समझो। शोक की होटल है। खान-पान मनुष्यों का जानवरों मिसल है। तुमको देखो बाप कहाँ ले जाते हैं। सच्ची-सच्ची अशोक वाटिका है सतयुग में। हद और बेहद का कान्ट्रास्ट बाप ही बतलाते हैं। तुम बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। जानते हो बाबा हमको पढ़ाते हैं। हमारा भी वही धन्धा है – सबको रास्ता बताना, अन्धों की लाठी बनना। चित्र भी तुम्हारे पास हैं। जैसे स्कूल में चित्रों पर समझाते हैं, यह फलाना देश है। तुम तो फिर समझाते हो तुम आत्मा हो, शरीर नहीं हो। आत्मायें भाई-भाई हैं। कितनी सहज बात सुनाते हो। कहते भी हैं हम सब भाई-भाई हैं। बाप कहते हैं तुम सभी आत्मायें भाई-भाई हो ना। गॉड फादर कहते हो ना। तो कभी भी आपस में लड़ना-झगड़ना नहीं चाहिए। शरीरधारी बनते हैं तो फिर भाई-बहन हो जाते। हम शिवबाबा के बच्चे सब भाई-भाई हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे भाई-बहिन हैं, हमको वर्सा दादे से लेना है इसलिए दादे को ही याद करते हैं। इस बच्चे (ब्रह्मा) को भी हमने अपना बनाया है अथवा इनमें प्रवेश किया है। इन सब बातों को तुम अभी समझते हो। बाप कहते हैं – बच्चे, अब नया दैवी प्रवृत्ति मार्ग स्थापन हो रहा है। तुम सभी बी.के. शिवबाबा की मत पर चलते हो। ब्रह्मा भी उनकी मत पर चलते हैं। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो और सर्व संबंधों को हल्का करते जाओ। 8 घण्टा याद रखनी है बाकी 16 घण्टे में आराम वा धंधा आदि जो करना है सो करो। मैं बाप का बच्चा हूँ, यह नहीं भूलो। ऐसे भी नहीं यहाँ आकर हॉस्टल में रहना है। नहीं, गृहस्थ व्यवहार में बाल बच्चों के साथ रहना है। बाबा पास आते ही हैं रिफ्रेश होने। मथुरा, वृन्दावन में जाते हैं मधुबन का दीदार करने। छोटा मॉडल रूप में बना रखा है। अब तो यह बेहद की बात समझने की है। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा नई सृष्टि रच रहे हैं। हम प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान बी.के. हैं। विकार की बात हो न सके। संन्यासियों के शिष्य बनते हैं, अगर वह संन्यासी कपड़ा पहन लेवे तो नाम बदली हो जाता है। यहाँ भी तुम बाबा के बन गये तो नाम रखे ना बाबा ने। कितने भट्ठी में रहे थे। इस भट्ठी का किसको पता नहीं। शास्त्रों में तो क्या-क्या बातें लिखी हैं, फिर भी ऐसा ही होगा। अब तुम्हारी बुद्धि में सृष्टि का चक्र फिरता है। बाप भी स्वदर्शन चक्रधारी है ना। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानता है। बाबा को तो शरीर भी नहीं। तुमको तो स्थूल शरीर है। वह है ही परम आत्मा। आत्मा ही स्वदर्शन चक्रधारी है ना। अब आत्मा को अलंकार कैसे दिये जायें? समझ की बात है ना। यह कितनी महीन बातें हैं। बाप कहते हैं वास्तव में मैं हूँ स्वदर्शन चक्रधारी। तुम जानते हो – आत्मा में सारे सृष्टि चक्र का ज्ञान आ जाता। बाबा भी परमधाम में रहने वाला है, हम भी वहाँ के रहने वाले हैं। बाप आकर अपना परिचय देते हैं – बच्चे मैं भी स्वदर्शन

चक्रधारी हूँ। मैं पतित-पावन आया हूँ तुम्हारे पास। मुझे बुलाया ही है कि आकर पतित से पावन बनाओ, लिबरेट करो। उनको शरीर तो है नहीं। वह अजन्मा है। भल जन्म लेते भी हैं परन्तु दिव्य। शिव जयन्ती अथवा शिवरात्रि मनाते हैं। बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ तब जब रात पूरी होती है, तो दिन बनाने आता हूँ। दिन में 21 जन्म फिर रात में 63 जन्म, आत्मा ही भिन्न-भिन्न जन्म लेती है। अब दिन से रात में आई है फिर दिन में जाना है। स्वदर्शन चक्रधारी भी तुमको बनाया है। इस समय मेरा पार्ट है। तुमको भी स्वदर्शन चक्रधारी बनाता हूँ। तुम फिर औरों को बनाओ। 84 जन्म कैसे लिये हैं, वह 84 जन्मों का चक्र तो समझ लिया है। आगे तुमको यह ज्ञान था क्या? बिल्कुल नहीं। अज्ञानी थे। बाबा मूल बात समझाते हैं कि बाबा है स्वदर्शन चक्रधारी, उनको ज्ञान का सागर कहा जाता है। वह सत्य है, चैतन्य है। तुम बच्चों को वर्सा दे रहे हैं। बाबा बच्चों को समझाते हैं, आपस में लड़ो-झगड़ो मत। लूनपानी मत बनो। सदैव हर्षित रहना है और सबको बाप का परिचय देना है। बाप को ही सब भूले हुए हैं। अब बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। निराकार भगवानुवाच – निराकारी आत्माओं प्रति। असुल तुम निराकार हो फिर साकारी बनते हो। साकार बिगर तो आत्मा कुछ कर ही नहीं सकती। आत्मा शरीर से निकल जाती तो चुरपुर कुछ भी हो नहीं सकती। आत्मा फौरन जाकर दूसरे शरीर में अपना पार्ट बजाती है। इन बातों को अच्छी रीति समझो, अन्दर घोटते रहो। हम आत्मा बाबा से वर्सा लेते हैं। वर्सा मिलता है सतयुग का। जरूर बाप ने ही भारत को वर्सा दिया होगा। कब वर्सा दिया फिर क्या हुआ? यह मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं है। अभी बाप सब बताते हैं। तुम बच्चों को ही स्वदर्शन चक्रधारी बनाया है, फिर तुमने 84 जन्म भोगे। अब फिर मैं आया हूँ, कितना सहज समझाते रहते हैं। बाप को याद करो और मीठे बनो। एम ऑबजेक्ट सामने खड़ी है। बाप वकीलों का वकील है, सब झगड़ों से छुड़ा देते हैं। तुम बच्चों को आन्तरिक खुशी बहुत होनी चाहिए। हम बाबा के बच्चे बने हैं। बाप ने हमको एडाप्ट किया है वर्सा देने। यहाँ तुम आते ही हो वर्सा लेने। बाप कहते हैं बाल-बच्चे आदि देखते हुए बुद्धि बाप और राजधानी की तरफ रहे। पढ़ाई कितनी सहज है। बाप जो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं, उनको तुम भूल जाते हो। पहले अपने को आत्मा जरूर समझो। यह ज्ञान बाप संगम पर ही देते हैं क्योंकि संगम पर ही तुमको पतित से पावन होना है।

अच्छा, मीठे-मीठे रूहानी ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण कुल भूषण, यह देवताओं से भी ऊंच कुल है। तुम भारत की बहुत ऊंच सेवा करते हो। अभी फिर तुम पूज्य बन जायेंगे। अब पुजारी को पूज्य, कौड़ी से हीरे जैसा बना रहे हैं। ऐसे रूहानी बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) श्रीमत पर अब हर कर्म श्रेष्ठ करना है, किसी को भी दु:ख नहीं देना है, दैवीगुण धारण करने हैं। बाप के डायरेक्शन पर ही चलना है।

2) सदैव हर्षित रहने के लिए स्वदर्शन चक्रधारी बनना है, कभी लूनपानी नहीं होना है। सबको बाप का परिचय देना है। बहुत-बहुत मीठा बनना है।

वरदान:- मान मांगने के बजाए सबको मान देने वाले, सदा निष्काम योगी भव

आपको कोई मान दे, माने वा न माने लेकिन आप उसको मीठा भाई, मीठी बहन मानते हुए सदा स्वमान में रह, स्नेही दृष्टि से, स्नेह की वृत्ति से आत्मिक मान देते चलो। यह मान देवे तो मैं मान दूँ-यह भी रॉयल भिखारीपन है, इसमें निष्काम योगी बनो। रूहानी स्नेह की वर्षा से दुश्मन को भी दोस्त बना दो। आपके सामने कोई पत्थर भी फेकें तो भी आप उसे रत्न दो क्योंकि आप रत्नागर बाप के बच्चे हो।

स्लोगन:- विश्व का नव-निर्माण करने के लिए दो शब्द याद रखो–निमित्त और निर्मान।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

सेवा में सफलता का मुख्य साधन है–त्याग और तपस्या। ऐसे त्यागी और तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लग्न में लवलीन, प्रेम के सागर में समाए हुए, ज्ञान, आनन्द, सुख, शान्ति के सागर में समाये हुए को ही कहेंगे–तपस्वी। ऐसे त्याग तपस्या वाले ही सच्चे सेवाधारी हैं।

''मीठे बच्चे – तुम्हें कौन पढ़ाने आया है, विचार करो तो खुशी में रोमांच खड़े हो जायेंगे, ऊंचे ते ऊंचा बाप पढ़ाते हैं, ऐसी पढ़ाई कभी छोड़नी नहीं है''

प्रश्नः- अभी तुम बच्चों को कौन-सा निश्चय हुआ है? निश्चयबुद्धि की निशानी क्या होगी?

उत्तरः- तुम्हें निश्चय हुआ हम अभी ऐसी पढ़ाई पढ़ रहे हैं, जिससे डबल सिरताज राजाओं का राजा बनेंगे। स्वयं भगवान पढ़ाकर हमें विश्व का मालिक बना रहे हैं। अभी हम उनके बच्चे बने हैं तो फिर इस पढ़ाई में लग जाना है। जैसे छोटे बच्चे अपने माँ-बाप के सिवाए किसी के पास भी नहीं जाते। ऐसा बेहद का बाप मिला है तो और कोई भी पसन्द न आये। एक की ही याद रहे।

गीतः- कौन आया आज सवेरे-सवेरे.....

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे बच्चों ने गीत सुना – कौन आया है और कौन पढ़ाता है? यह समझ की बात है। कोई बहुत अक्लमंद होते हैं, कोई कम अक्लमंद होते हैं। जो बहुत पढ़ा लिखा होता है, उसे बहुत अक्लमंद कहेंगे। शास्त्र आदि जो भी पढ़े लिखे होते हैं, उनका मान होता है। कम पढ़े हुए को कम मान मिलता है। अब गीत का अक्षर सुना – कौन आया पढ़ाने! टीचर आते हैं ना। स्कूल में पढ़ने वाले जानते हैं टीचर आया। यहाँ कौन आया है? एकदम रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। ऊंच ते ऊंच बाप फिर से पढ़ाने आये हैं। समझने की बात है ना! तकदीर की भी बात है। पढ़ाने वाला कौन है? भगवान। वह आकर पढ़ाते हैं। विवेक कहता है – भल कोई कितनी भी बड़े ते बड़ी पढ़ाई पढ़ता हो, फट से वह पढ़ाई छोड़कर आए भगवान से पढ़े। एक सेकण्ड में सब कुछ छोड़ बाप के पास पढ़ने आए।

बाबा ने समझाया है – अभी तुम पुरूषोत्तम संगमयुगी बने हो। उत्तम ते उत्तम पुरुष हैं यह लक्ष्मी-नारायण। दुनिया में किसको भी पता नहीं है कि किस एज्युकेशन से इन्होंने यह पद पाया है। तुम पढ़ते हो – यह पद पाने लिए। कौन पढ़ाते हैं? भगवान। तो और सब पढ़ाईयाँ छोड़ इस पढ़ाई में लग जाना चाहिए क्योंकि बाप आते ही हैं कल्प के बाद। बाप कहते हैं – मैं हर 5 हज़ार वर्ष के बाद आता हूँ सम्मुख पढ़ाने। वन्डर है ना। कहते भी हैं भगवान हमको पढ़ाते हैं, यह पद प्राप्त कराने। फिर भी पढ़ते नहीं। तो बाप कहेंगे ना यह सयाना नहीं है। बाप की पढ़ाई पर पूरा ध्यान नहीं देते हैं। बाप को भूल जाते हैं। तुम कहते हो कि बाबा हम भूल जाते हैं। टीचर को भी भूल जाते हैं। यह हैं माया के तूफान। परन्तु पढ़ाई तो पढ़नी चाहिए ना। विवेक कहता है भगवान पढ़ाते हैं तो उस पढ़ाई में एकदम लग जाना चाहिए। छोटे बच्चों को ही पढ़ना होता है। आत्मा तो सबकी है। बाकी शरीर छोटा-बड़ा होता है। आत्मा कहती है मैं आपका छोटा बच्चा बना हूँ। अच्छा मेरे बने हो तो अब पढ़ो। दूध-पाक तो नहीं हो। पढ़ाई फर्स्ट। इसमें बहुत अटेन्शन देना है। स्टूडेन्ट फिर आते हैं यहाँ सुप्रीम टीचर के पास। वह पढ़ाने वाले टीचर्स भी मुकरर हैं। तो भी सुप्रीम टीचर तो है ना। 7 रोज़ भट्ठी भी गाई हुई है। बाप कहते हैं पवित्र रहो और मुझे याद करो। दैवीगुण धारण किये तो तुम यह बन जायेंगे। बेहद के बाप को याद करना पड़े। छोटे बच्चे को माँ-बाप के सिवाए दूसरा कोई उठाते हैं तो उनके पास जाते नहीं। तुम भी बेहद के बाप के बने हो तो और कोई को देखना पसन्द भी नहीं आयेगा, फिर कोई भी हो। तुम जानते हो हम ऊंच ते ऊंच बाप के हैं। वह हमको डबल सिरताज राजाओं का राजा बनाते हैं। लाइट का ताज मनमनाभव और रतन जड़ित ताज मध्याजीभव। निश्चय हो जाता है हम इस पढ़ाई से विश्व का मालिक बनते हैं, 5 हज़ार वर्ष बाद हिस्ट्री रिपीट होती है ना। तुमको राजाई मिलती है। बाकी सब आत्मायें शान्तिधाम अपने घर चली जाती हैं। अभी तुम बच्चों को मालूम पड़ा है – असुल में हम आत्मायें बाप के साथ अपने घर में रहती हैं। बाप का बनने से अभी तुम स्वर्ग के मालिक बनते हो फिर बाप को भूल आरफन बन पड़ते हो। भारत इस समय आरफन है। आरफन उनको कहा जाता है जिनको माँ-बाप नहीं होते। धक्का खाते रहते हैं। तुमको तो अब बाप मिला है, तुम सारे सृष्टि चक्र को जानते हो तो खुशी में गदगद होना चाहिए। हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। परमपिता परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई सृष्टि ब्राह्मणों की रचते हैं। यह तो बहुत सहज समझने की बात है। तुम्हारे चित्र भी हैं, विराट रूप का चित्र भी बनाया है। 84 जन्मों की कहानी दिखाई है। हम सो देवता फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनते हैं। यह कोई भी मनुष्य नहीं जानते क्योंकि ब्राह्मण और ब्राह्मणों को पढ़ाने वाले बाप का, दोनों का नाम-निशान गुम कर दिया है। इंगलिश में भी तुम लोग अच्छी रीति समझा सकते हो। जो इंगलिश जानते हैं तो ट्रांसलेशन कर फिर समझाना चाहिए। फादर

नॉलेजफुल है, उनको ही यह नॉलेज है कि सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। यह है पढ़ाई। योग को भी बाप की याद कही जाती है, जिसको अंग्रेजी में कम्यूनियन कहा जाता है। बाप से कम्यूनियन, टीचर से कम्यूनियन, गुरू से कम्यूनियन। यह है गॉड फादर से कम्यूनियन। खुद बाप कहते हैं मुझे याद करो और कोई भी देहधारी को याद नहीं करो। मनुष्य गुरू आदि करते हैं, शास्त्र पढ़ते हैं। एम ऑब्जेक्ट कुछ भी नहीं। सद्गति तो होती नहीं। बाप तो कहते हैं हम आये हैं सबको वापिस ले जाने। अभी तुमको बाप के साथ बुद्धि का योग रखना है, तो तुम वहाँ जाए पहुँचेंगे। अच्छी रीति याद करने से विश्व के मालिक बनेंगे। यह लक्ष्मी-नारायण पैराडाइज़ के मालिक थे ना। यह कौन समझाने वाला है। बाप को कहा जाता है नॉलेजफुल। मनुष्य फिर कह देते अन्तर्यामी। वास्तव में अन्तर्यामी का अक्षर है नहीं। अन्दर रहने वाली, निवास करने वाली तो आत्मा है। आत्मा जो काम करती है, वह तो सब जानते हैं। सब मनुष्य अन्तर्यामी हैं। आत्मा ही सीखती है। बाप तुम बच्चों को आत्म-अभिमानी बनाते हैं। तुम आत्मा हो मूलवतन की रहने वाली। तुम आत्मा कितनी छोटी हो। अनेक बार तुम आई हो पार्ट बजाने। बाप कहते हैं मैं बिन्दी हूँ। मेरी पूजा तो कर नहीं सकते। क्यों करेंगे, दरकार ही नहीं। मैं तुम आत्माओं को पढ़ाने आता हूँ। तुमको ही राजाई देता हूँ फिर रावण राज्य में चले जाते हो तो मुझे ही भूल जाते हो। पहले-पहले आत्मा आती है पार्ट बजाने। मनुष्य कहते हैं 84 लाख जन्म लेते हैं। परन्तु बाप कहते हैं मैक्सीमम हैं ही 84 जन्म। फॉरेन में जाकर यह बातें सुनायेंगे तो उनको कहेंगे यह नॉलेज तो हमको यहाँ बैठ पढ़ाओ। तुमको वहाँ 1000 रूपया मिलते हैं, हम आपको 10-20 हज़ार रूपया देंगे। हमको भी नॉलेज सुनाओ। गॉड फादर हम आत्माओं को पढ़ाते हैं। आत्मा ही जज आदि बनती है। बाकी मनुष्य तो सब हैं देह-अभिमानी। कोई को भी ज्ञान नहीं है। भल बड़े-बड़े फिलॉसाफर आदि बहुत हैं, परन्तु यह नॉलेज किसको भी नहीं है। गॉड फादर निराकार पढ़ाने आते हैं। हम उनसे पढ़ते हैं, यह बातें सुनकर चक्रित हो जायेंगे। यह बातें तो कभी सुनी पढ़ी नहीं। एक बाप को ही कहते हो लिबरेटर, गाइड जबकि वही लिबरेटर है तो फिर क्राइस्ट को क्यों याद करते हो? यह बातें अच्छी रीति समझाओ तो वह चक्रित हो जायेंगे। कहेंगे यह हम सुनें तो सही। पैराडाइज़ की स्थापना हो रही है, उसके लिए यह महाभारत लड़ाई भी है। बाप कहते हैं मैं तुमको राजाओं का राजा डबल सिरताज बनाता हूँ। प्योरिटी, पीस, प्रासपर्टी सब थी। विचार करो, कितने वर्ष हुए? क्राइस्ट से 3 हज़ार वर्ष पहले इन्हों का राज्य था ना। कहेंगे यह तो स्प्रीचुअल नॉलेज है। यह तो डायरेक्ट उस सुप्रीम फादर का बच्चा है, उनसे राजयोग सीख रहा है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, यह सारी नॉलेज है। हमारी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। इस योग की ताकत से आत्मा सतोप्रधान बन गोल्डन एज में चली जायेगी, फिर उनके लिए राज्य चाहिए। पुरानी दुनिया का विनाश भी चाहिए। सो सामने खड़ा है फिर एक धर्म का राज्य होगा। यह पाप आत्माओं की दुनिया है ना। अभी तुम पावन बन रहे हो, बोलो इस याद के बल से हम पवित्र बनते हैं और सबका विनाश हो जायेगा। नैचुरल कैलेमिटीज भी आने वाली हैं। हमारा रियलाइज़ किया हुआ है और दिव्य दृष्टि से देखा हुआ है। यह सब खलास होना है। बाप आये हैं डीटी वर्ल्ड स्थापन करने। सुनकर कहेंगे ओहो! यह तो गॉड फादर के बच्चे हैं। तुम बच्चे जानते हो यह लड़ाई लगेगी, नैचुरल कैलेमिटीज़ होगी। क्या हाल होगा? यह बड़े-बड़े मकान आदि सब गिरने लग पड़ेंगे। तुम जानते हो यह बाम्ब्स आदि 5 हज़ार वर्ष पहले भी बनाये थे अपने ही विनाश के लिए। अभी भी बॉम्ब्स तैयार हैं। योगबल क्या चीज़ है, जिससे तुम विश्व पर विजय पाते हो और कोई थोड़ेही जानते। बोलो, साइंस तुम्हारा ही विनाश करती है। हमारा बाप के साथ योग है तो उस साइलेन्स के बल से हम विश्व पर जीत पाकर सतोप्रधान बन जाते हैं। बाप ही पतित-पावन है। पावन दुनिया जरूर स्थापन करके ही छोड़ेंगे। ड्रामा अनुसार नूँध है। बॉम्बस जो बनाये हैं तो रख देंगे क्या! ऐसे-ऐसे समझायेंगे तो समझेंगे यह तो कोई अथॉरिटी है, इनमें गॉड ने आकर प्रवेश किया है। यह भी ड्रामा में नूँध है। ऐसी-ऐसी बातें बताते रहेंगे तो वह खुश होंगे। आत्मा में कैसे पार्ट है, यह भी अनादि बना-बनाया ड्रामा है। फिर अपने समय पर क्राइस्ट आकर तुम्हारा धर्म स्थापन करेंगे। ऐसी अथॉरिटी से बोलेंगे तो वह समझेंगे बाप सब बच्चों को बैठ समझाते हैं। तो इस पढ़ाई में बच्चों को लग जाना चाहिए। बाप, टीचर, गुरू तीनों एक ही हैं। वह कैसे नॉलेज देते हैं, यह भी तुम समझते हो। सबको पवित्र बनाकर ले जाते हैं। डीटी डिनायस्टी थी तो पवित्र थे। गॉड-गाडेज थे। बात करने का बड़ा होशियार हो, स्पीड भी अच्छी हो। बोलो बाकी सब आत्मायें स्वीट होम में रहती हैं। बाप ही ले जाते हैं, सर्व का सद्गति दाता वह बाप

है। उनका बर्थ प्लेस है भारत। यह कितना बड़ा तीर्थ हो गया।

तुम जानते हो सबको तमोप्रधान बनना ही है। पुनर्जन्म सबको लेना है, वापिस कोई भी जा नहीं सकते। ऐसी-ऐसी बातें समझाने से बहुत वन्डर खायेंगे। बाबा तो कहते हैं जोड़ी हो तो बहुत अच्छा समझा सकते हैं। भारत में पहले पवित्रता थी। फिर अपवित्र कैसे होते हैं। यह भी बता सकते हैं। पूज्य ही पुजारी बन जाते हैं। इमप्योर बनने से फिर अपनी ही पूजा करने लगते हैं। राजाओं के घर में भी इन देवताओं के चित्र रहते हैं, जो पवित्र डबल सिरताज थे उन्हों को बिगर ताज वाले अपवित्र पूजते हैं। वो हो गये पुजारी राजायें। उनको तो गॉड-गॉडेज नहीं कहेंगे क्योंकि इन देवताओं की पूजा करते हैं। आपेही पूज्य, आपेही पुजारी, पतित बन जाते हैं तो रावण राज्य शुरू हो जाता है। इस समय रावण राज्य है। ऐसे-ऐसे बैठ समझायें तो कितना मज़ा कर दिखायें। गाड़ी के दो पहिये युगल हो तो बहुत वन्डर कर दिखायें। हम युगल ही फिर सो पूज्य बनेंगे। हम प्योरिटी, पीस, प्रासपर्टी का वर्सा ले रहे हैं। तुम्हारे चित्र भी निकलते रहते हैं। यह है ईश्वरीय परिवार। बाप के बच्चे हैं, पोत्रे और पोत्रियां हैं, बस और कोई संबंध नहीं। नई सृष्टि इनको कही जाती है फिर देवी-देवता तो थोड़े बनेंगे। फिर आहिस्ते-आहिस्ते वृद्धि होती है। यह नॉलेज कितनी समझने की है। यह बाबा भी धन्धे में जैसे नवाब था। कोई बात की परवाह नहीं रहती थी। जब देखा यह तो बाप पढ़ाते हैं, विनाश सामने खड़ा है तो फट से छोड़ दिया। यह जरूर समझा हमको बादशाही मिलती है तो फिर गदाई क्या करेंगे। तो तुम भी समझते हो भगवान पढ़ाते हैं, यह तो पूरी रीति पढ़ना चाहिए ना। उनकी मत पर चलना चाहिए। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप को तुम भूल जाते हो, लज्जा नहीं आती है, वह नशा नहीं चढ़ता है। यहाँ से बहुत अच्छा रिफ्रेश हो जाते हैं फिर वहाँ सोडावाटर हो जाते हैं। अब तुम बच्चे पुरुषार्थ करते हो – गांव-गांव में सर्विस करने का। बाबा कहते हैं पहले-पहले तो यह बताओ कि आत्माओं का बाप कौन है। भगवान तो निराकार ही है। वही इस पतित दुनिया को पावन बनायेंगे। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) स्वयं भगवान सुप्रीम टीचर बनकर पढ़ा रहे हैं इसलिए अच्छी रीति पढ़ना है, उनकी मत पर चलना है।

2) बाप के साथ ऐसा योग रखना है जिससे साइलेन्स का बल जमा हो। साइलेन्स बल से विश्व पर जीत पानी है, पतित से पावन बनना है।

वरदान:- समय और संकल्पों को सेवा में अर्पण करने वाले विधाता, वरदाता भव

अभी स्व की छोटी-छोटी बातों के पीछे, तन के पीछे, मन के पीछे, साधनों के पीछे, सम्बन्ध निभाने के पीछे समय और संकल्प लगाने के बजाए इसे सेवा में अर्पण करो, यह समर्पण समरोह मनाओ। श्वांसों श्वांस सेवा की लगन हो, सेवा में मगन रहो। तो सेवा में लगने से स्वउन्नति की गिफ्ट स्वत:प्राप्त हो जायेगी। विश्व कल्याण में स्व कल्याण समाया हुआ है इसलिए निरन्तर महादानी, विधाता और वरदाता बनो।

स्लोगन:- अपनी इच्छाओं को कम कर दो तो समस्यायें कम हो जायेंगी।

अव्यक्त-इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

जैसे लौकिक रीति से कोई किसके स्नेह में लवलीन होता है तो चेहरे से, नयनों से, वाणी से अनुभव होता है कि यह लवलीन है, आशिक है, ऐसे जिस समय स्टेज पर आते हो तो जितना अपने अन्दर बाप का स्नेह इमर्ज होगा उतना स्नेह का बाण औरों को भी स्नेह में घायल कर देगा।

''मीठे बच्चे – बाप आये हैं तुम्हारा ज्ञान रत्नों से श्रृंगार कर वापस घर ले जाने, फिर राजाई में भेज देंगे तो अपार खुशी में रहो, एक बाप से ही प्यार करो''

प्रश्नः- अपनी धारणा को मजबूत (पक्का) बनाने का आधार क्या है?

उत्तरः- अपनी धारणा को मजबूत बनाने के लिए सदैव यह पक्का करो कि आज के दिन जो पास हुआ अच्छा हुआ फिर कल्प के बाद होगा। जो कुछ हुआ कल्प पहले भी ऐसे हुआ था, नथिंग न्यु। यह लड़ाई भी 5 हज़ार वर्ष पहले लगी थी, फिर लगेगी जरूर। इस भंभोर का विनाश होना ही है..... ऐसे हर पल ड्रामा की स्मृति में रहो तो धारणा मजबूत होती जाये।

गीतः- दूरदेश का रहने वाला.....

ओम् शान्ति। बच्चे पहले भी दूरदेश से पराये देश में आये हैं। अब इस पराये देश में दु:खी हैं इसलिए पुकारते हैं अपने देश घर ले चलो। तुम्हारी पुकार है ना। बहुत समय से याद करते आये हो तो बाप भी खुशी से आता है। जानते हैं मैं जाता हूँ बच्चों के पास। जो बच्चे काम चिता पर बैठ जल गये हैं उन्हों को अपने घर भी ले आऊं और फिर राजाई में भेज दूँ। उसके लिए ज्ञान से श्रृंगार भी करूँ। बच्चे भी बाप से जास्ती खुश होने चाहिए। बाप जबकि आये हैं तो उनका बन जाना चाहिए। उनको बहुत लव करना चाहिए। बाबा रोज़ समझाते हैं, आत्मा बात करती है ना। बाबा 5 हज़ार वर्ष बाद ड्रामा अनुसार आप आये हैं, हमको बहुत खुशी का खज़ाना मिल रहा है। बाबा आप हमारी झोली भर रहे हैं, हमको अपने घर शान्तिधाम में ले चलते हैं फिर राजधानी में भेज देंगे। कितनी अपार खुशी होनी चाहिए। बाप कहते हैं हमको इस पराई राजधानी में ही आना है। बाप का बड़ा मीठा और वन्डरफुल पार्ट है। खास जबकि इस पराये देश में आये हैं। यह बातें तुम अभी ही समझते हो फिर यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है। वहाँ दरकार ही नहीं रहती। बाबा कहते हैं तुम कितने बेसमझ बन गये हो। ड्रामा का एक्टर होते हुए भी बाप को नहीं जानते! जो बाप ही करनकरावनहार है, क्या करते क्या कराते – यह भूल गये हो। सारी पुरानी दुनिया को हेविन बनाने आते हैं और ज्ञान देते हैं। वह ज्ञान का सागर है तो जरूर ज्ञान देने का कर्तव्य करेंगे ना। फिर तुमसे कराते भी हैं कि औरों को भी मैसेज दो कि बाप सबके लिए कहते हैं कि अब देह का भान छोड़ मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। मैं श्रीमत देता हूँ। पाप आत्मायें तो सब हैं। इस समय सारा झाड़ तमोप्रधान, जड़जड़ीभूत अवस्था को पाया हुआ है। जैसे बांस के जंगल को आग लग जाती है तो एकदम सारा ही जलकर खत्म हो जाता। जंगल में पानी कहाँ से आयेगा जो आग को बुझावें। यह जो भी पुरानी दुनिया है उनको आग लग जायेगी। बाप कहते हैं – नथिंग न्यु। बाप अच्छी-अच्छी प्वाइंट्स देते रहते हैं जो नोट करनी चाहिए। बाप ने समझाया है और धर्म स्थापक सिर्फ अपना धर्म स्थापन करने आते हैं, उनको पैगम्बर वा मैसेन्जर आदि कुछ भी नहीं कह सकते। यह भी बड़ा युक्ति से लिखना है। शिवबाबा बच्चों को समझा रहे हैं – बच्चे तो सब हैं ऑल ब्रदर्स। तो हर एक चित्र में, हर एक लिखत में यह जरूर लिखना है – शिवबाबा ऐसे समझाते हैं। बाप कहते हैं – बच्चे, मैं आकर सतयुगी आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करता हूँ, जिसमें 100 प्रतिशत सुख-शान्ति-पवित्रता सब है इसलिए उनको हेविन कहा जाता है। वहाँ दु:ख का नाम नहीं है। बाकी जो भी सब धर्म हैं उन सबका विनाश कराने निमित्त बनता हूँ। सतयुग में होता ही एक धर्म है। वह है नई दुनिया। पुरानी दुनिया को खत्म कराता हूँ। ऐसा धन्धा तो और कोई नहीं करते हैं। कहा जाता है शंकर द्वारा विनाश। विष्णु भी लक्ष्मी-नारायण ही हैं। प्रजापिता ब्रह्मा भी तो यहाँ है। यही पतित से पावन फरिश्ता बनते हैं इसलिए फिर ब्रह्मा देवता कहा जाता है। जिससे देवी-देवता धर्म स्थापन होता है। यह बाबा भी देवी-देवता धर्म का पहला प्रिन्स बनता है। तो ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश। चित्र तो देने पड़े ना। समझाने के लिए यह चित्र बनाये हैं। इनके अर्थ का कोई को भी पता नहीं है। स्वदर्शन चक्रधारी का भी समझाया – परमपिता परमात्मा सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। उनमें सारा ज्ञान है तो स्वदर्शन चक्रधारी ठहरे ना। जानते हैं हम ही यह ज्ञान सुनाते हैं। बाबा तो ऐसे नहीं कहेंगे कि मुझे कमल फूल समान बनना है। सतयुग में तुम कमल फूल समान ही रहते हो। संन्यासियों के लिए यह नहीं कहेंगे। वह तो जंगल में चले जाते हैं। बाप भी कहते हैं पहले वह पवित्र सतोप्रधान होते हैं। भारत को थमाते हैं, पवित्रता के बल से। भारत जैसा पवित्र देश कोई होता ही नहीं। जैसे बाप की महिमा है वैसे भारत की भी महिमा है। भारत हेविन था, यह लक्ष्मी-

नारायण राज्य करते थे फिर कहाँ गये। यह अभी तुम जानते हो और किसकी बुद्धि में थोड़ेही होगा कि यह देवतायें ही 84 जन्म ले फिर पुजारी बनते हैं। अभी तुमको सारा ज्ञान है, हम अभी पूज्य देवी-देवता बनते हैं फिर पुजारी मनुष्य बनेंगे। मनुष्य तो मनुष्य ही होता है। यह जो चित्र किस्म-किस्म के बनाते हैं, ऐसे कोई मनुष्य होते नहीं। यह सब भक्ति मार्ग के ढेर चित्र हैं। तुम्हारा ज्ञान तो है गुप्त। यह ज्ञान सब नहीं लेंगे। जो इस देवी-देवता धर्म के पत्ते होंगे वही लेंगे। बाकी जो औरों को मानने वाले हैं वह सुनेंगे नहीं। जो शिव और देवताओं की भक्ति करते हैं वही आयेंगे। पहले-पहले मेरी भी पूजा करते हैं फिर पुजारी बन अपनी भी पूजा करते हैं। तो अब खुशी होती है कि हम पूज्य से पुजारी बने, अब फिर पूज्य बनते हैं। कितनी खुशियाँ मनाते हैं। यहाँ तो अल्पकाल के लिए खुशी मनाते हैं। वहाँ तो तुमको सदैव खुशी रहती है। दीपमाला आदि लक्ष्मी को बुलाने के लिए नहीं होती है। दीपमाला होती है कारोनेशन पर। बाकी इस समय जो उत्सव मनाये जाते हैं वह वहाँ होते नहीं। वहाँ तो सुख ही सुख है। यह एक ही समय है जबकि तुम आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। यह सब प्वाइंट्स लिखो। संन्यासियों का है हठयोग। यह है राजयोग। बाबा कहते हैं एक-एक पेज़ में जहाँ-तहाँ शिवबाबा का नाम जरूर हो। शिवबाबा हम बच्चों को समझाते हैं। निराकार आत्मायें अब साकार में बैठी हैं। तो बाप भी साकार में समझायेंगे ना। वह कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। शिव भगवानुवाच बच्चों प्रति। खुद यहाँ प्रेजन्ट है ना। मुख्य-मुख्य प्वाइंट किताब में ऐसी क्लीयर लिखी हुई हो जो पढ़ने से आपेही ज्ञान आ जाए। शिव भगवानुवाच होने से पढ़ने में मज़ा आ जायेगा। यह बुद्धि का काम है ना। बाबा भी शरीर का लोन लेकर फिर सुनाते हैं ना, इनकी आत्मा भी सुनती है। बच्चों को नशा बहुत रहना चाहिए। बाप पर बहुत लव होना चाहिए। यह तो उनका रथ है, यह बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। इनमें प्रवेश किया है। ब्रह्मा द्वारा यह ब्राह्मण बनते हैं फिर मनुष्य से देवता बनते हैं। चित्र कितना क्लीयर है। भल अपना भी चित्र दो ऊपर में वा बाजू में डबल सिरताज वाला। योगबल से हम ऐसे बनते हैं। ऊपर में शिवबाबा। उनको याद करते-करते मनुष्य से देवता बन जाते हैं। बिल्कुल क्लीयर है। रंगीन चित्र का किताब ऐसा हो जो मनुष्य देखकर खुश हो जाएं। उनसे फिर कुछ हल्के भी छपा सकते हो गरीबों के लिए। बड़े से छोटा, छोटे से छोटा कर सकते हो, रहस्य उसमें आ जाए। गीता के भगवान वाला चित्र है मुख्य। उस गीता पर कृष्ण का चित्र, उस गीता पर त्रिमूर्ति का चित्र होने से मनुष्यों को समझाने में सहज होता है। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण यहाँ हैं। प्रजापिता ब्रह्मा सूक्ष्मवतन में तो हो नहीं सकता। कहते हैं ब्रह्मा देवताए नम:, विष्णु देवताए नम: अब देवता कौन ठहरे! देवतायें तो यहाँ राज्य करते थे। डिटीज्म तो है ना। तो यह सब अच्छी रीति समझाना पड़ता है। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा दोनों यहाँ हैं। चित्र है तो समझाया जा सकता है। पहले-पहले अल्फ को सिद्ध करो तो सब बातें सिद्ध हो जायेंगी। प्वाइंट्स तो बहुत हैं और सब धर्म स्थापन करने आते हैं। बाप तो स्थापना और विनाश दोनों कराते हैं। होता है सब ड्रामा अनुसार ही। ब्रह्मा बोल सकते, विष्णु बोल सकते हैं? सूक्ष्मवतन में क्या बोलेंगे। यह सब समझने की बातें हैं। यहाँ तुम समझकर फिर ट्रांसफर होते हो, ऊपर क्लास में। कमरा ही दूसरा मिलता है। मूलवतन में कोई बैठ तो नहीं जाना है। फिर वहाँ से नम्बरवार आना होता है। पहले-पहले मूल बात एक ही है उस पर ज़ोर देना चाहिए। कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। यह सेमीनार आदि भी ऐसे ही कल्प पहले हुए थे। ऐसी प्वाइंट्स निकली थी। आज का दिन जो पास हुआ अच्छा हुआ फिर कल्प बाद ऐसे ही होगा। ऐसे-ऐसे अपनी धारणा करते पक्के होते जाओ। बाबा ने कहा था मैगज़ीन में भी डालो – यह लड़ाई लगी, नथिंग न्यु। 5 हज़ार वर्ष पहले भी ऐसे हुआ था। यह बातें तुम ही समझते हो। बाहर वाले समझ न सके। सिर्फ कहेंगे बातें तो वन्डरफुल हैं। अच्छा, कभी जाकर समझ लेंगे। शिव भगवानुवाच बच्चों प्रति। ऐसे-ऐसे अक्षर होंगे तो आकर समझेंगे भी। नाम लिखा हुआ है प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ। प्रजापिता ब्रह्मा से ही ब्राह्मण रचते हैं। ब्राह्मण देवी-देवता नम: कहते हैं ना। कौन से ब्राह्मण? तुम ब्राह्मणों को भी समझा सकते हो ब्रह्मा की औलाद कौन हैं? प्रजापिता ब्रह्मा के इतने बच्चे हैं, तो जरूर यहाँ एडाप्ट होते होंगे। जो अपने कुल के होंगे वह अच्छी रीति समझेंगे। तुम तो बाप के बच्चे हो गये। बाप ब्रह्मा को भी एडाप्ट करते हैं। नहीं तो शरीर वाली चीज़ आई कहाँ से। ब्राह्मण इन बातों को समझेंगे, संन्यासी नहीं समझेंगे। अजमेर में ब्राह्मण होते हैं और हरिद्वार में संन्यासी ही संन्यासी हैं। पण्डे ब्राह्मण होते हैं। परन्तु वह तो भूखे होते हैं। बोलो तुम अभी जिस्मानी पण्डे हो। अब रूहानी पण्डे बनो। तुम्हारा भी नाम पण्डा है। पाण्डव सेना को भी समझते नहीं हैं। बाबा है पाण्डवों का सिरमौर। कहते हैं

हे बच्चे मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे और चले जायेंगे अपने घर। फिर बड़ी यात्रा होगी अमरपुरी की। मूलवतन की कितनी बड़ी यात्रा होगी। सबकी सब आत्मायें जायेंगी। जैसे मक्कड़ों का झुण्ड जाता है ना। मक्खियों की भी रानी भागती है तो उनके पिछाड़ी सब भागते हैं। वन्डर है ना। सब आत्मायें भी मच्छरों मिसल जायेंगी। शिव की बरात है ना। तुम सब हो ब्राइड्स। मैं ब्राइडग्रूम आया हूँ सबको ले जाने। तुम छी-छी हो गये हो इसलिए श्रृंगार कर साथ ले जाऊंगा। जो श्रृंगार नहीं करेंगे तो सज़ा खायेंगे। जाना तो है ही। काशी कलवट में भी मनुष्य मरते हैं तो सेकण्ड में कितनी सज़ायें भोग लेते हैं। मनुष्य चिल्लाते रहते हैं। यह भी ऐसे है, समझते हैं हम जैसेकि जन्म-जन्मान्तर का दु:ख सज़ा भोग रहा हूँ। वह दु:ख की फीलिंग ऐसी होती है। जन्म-जन्मान्तर के पापों की सज़ा मिलती है। जितनी सज़ायें खायेंगे उतना पद कम हो जायेगा इसलिए बाबा कहते हैं योगबल से हिसाब-किताब चुक्तू करो। याद से जमा करते जाओ। नॉलेज तो बहुत सहज है। अब हर कर्म ज्ञानयुक्त करना है। दान भी पात्र को देना है। पाप आत्माओं को देने से फिर देने वाले पर भी उसका असर पड़ जाता है। वह भी पाप आत्मायें बन जाते हैं। ऐसे को कभी नहीं देना चाहिए, जो उस पैसे से जाकर फिर कोई पाप आदि करें। पाप आत्माओं को देने वाले तो दुनिया में बहुत बैठे हैं। अब तुमको तो ऐसा नहीं करना है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) अभी हर कर्म ज्ञानयुक्त करना है, पात्र को ही दान देना है। पाप आत्माओं से अब कोई पैसे आदि की लेन-देन नहीं करनी है। योगबल से सब पुराने हिसाब-किताब चुक्तू करने हैं।

2) अपार खुशी में रहने के लिए अपने आपसे बातें करनी है – बाबा, आप आये हैं हमें अपार खुशी का खज़ाना देने, आप हमारी झोली भर रहे हैं, आपके साथ पहले हम शान्तिधाम जायेंगे फिर अपनी राजधानी में आयेंगे.....।

वरदान:- समस्याओं को समाधान रूप में परिवर्तित करने वाले विश्व कल्याणी भव

मैं विश्व कल्याणी हूँ–अब इस श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना के संस्कार इमर्ज करो। इस श्रेष्ठ संस्कार के आगे हद के संस्कार स्वत: समाप्त हो जायेंगे। समस्यायें समाधान के रूप में परिवर्तित हो जायेंगी। अब युद्ध में समय नहीं गंवाओ लेकिन विजयीपन के संस्कार इमर्ज करो। अब सब कुछ सेवा में लगा दो तो मेहनत से छूट जायेंगे। समस्याओं में जाने के बजाए दान दो, वरदान दो तो स्व का ग्रहण स्वत:समाप्त हो जायेगा।

स्लोगन:- किसी की कमी, कमजोरियों का वर्णन करने के बजाए गुण स्वरूप बनो, गुणों का ही वर्णन करो।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

बाप का बच्चों से इतना प्यार है जो अमृतवेले से ही बच्चों की पालना करते हैं। दिन का आरम्भ ही कितना श्रेष्ठ होता है! स्वयं भगवन मिलन मनाने के लिये बुलाते हैं, रुहरिहान करते हैं, शक्तियाँ भरते हैं! बाप की मोहब्बत के गीत आपको उठाते हैं। कितना स्नेह से बुलाते हैं, उठाते हैं – मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे, आओ.....। तो इस प्यार की पालना का प्रैक्टिकल स्वरूप है 'सहज योगी जीवन'।

''मीठे बच्चे – कदम-कदम पर जो होता है वह कल्याणकारी है, इस ड्रामा में सबसे अधिक कल्याण उनका होता है जो बाप की याद में रहते हैं''

प्रश्नः- ड्रामा की किस नूँध को जानने वाले बच्चे अपार खुशी में रह सकते हैं?

उत्तरः- जो जानते हैं कि ड्रामानुसार अब इस पुरानी दुनिया का विनाश होगा, नैचुरल कैलेमिटीज भी होंगी। लेकिन हमारी राजधानी तो स्थापन होनी ही है, इसमें कोई कुछ कर नहीं सकता। भल अवस्थायें नीचे-ऊपर होती रहेंगी, कभी बहुत उमंग, कभी ठण्डे ठार हो जायेंगे, इसमें मूँझना नहीं है। सभी आत्माओं का बाप भगवान हमको पढ़ा रहे हैं, इस खुशी में रहना है।

गीतः- महफिल में जल उठी शमा .....

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार चैतन्य परवानों को बाबा याद-प्यार दे रहे हैं। तुम सब हो चैतन्य परवाने। बाप को शमा भी कहते हैं, परन्तु उनको जानते बिल्कुल नहीं हैं। शमा कोई बड़ी नहीं, एक बिन्दी है। किसकी भी बुद्धि में नहीं होगा कि हम आत्मा बिन्दी हैं। हमारी आत्मा में सारा पार्ट है। आत्मा और परमात्मा का नॉलेज और किसकी बुद्धि में नहीं है। तुम बच्चों को ही बाप ने आकर समझाया है, आत्मा का रियलाइजेशन दिया है। आगे यह पता नहीं था कि आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है! इसलिए देह-अभिमान के कारण बच्चों में मोह भी है, विकार भी बहुत हैं। भारत कितना ऊंच था। विकार का नाम भी नहीं था। वह था वाइसलेस भारत, अभी है विशश भारत। कोई भी मनुष्य ऐसे नहीं कहेंगे जैसे बाप समझाते हैं। आज से 5 हज़ार वर्ष पहले हमने इनको शिवालय बनाया था। मैंने ही शिवालय स्थापन किया था। कैसे? सो भी तुम अभी समझ रहे हो। तुम जानते हो कदम-कदम पर जो होता है वह कल्याणकारी ही है। एक-एक दिन जास्ती कल्याणकारी उनका है जो बाप को अच्छी रीति याद कर अपना भी कल्याण करते रहते हैं। यह है ही कल्याणकारी पुरूषोत्तम बनने का युग। बाप की कितनी महिमा है। तुम जानते हो अभी सच्चा-सच्चा भागवत चल रहा है। द्वापर में जब भक्ति मार्ग शुरू होता है तो पहले-पहले तुम भी हीरों का लिंग बनाकर पूजा करते हो। अभी तुमको स्मृति आई है, हम जब पुजारी बने थे तब मन्दिर बनाये थे। हीरे माणिक का बनाते थे। वह चित्र तो अभी मिल न सकें। यहाँ तो यह लोग चांदी आदि का बनाकर पूजा करते हैं। ऐसे पुजारियों का भी मान देखो कितना है। शिव की पूजा तो सब करते हैं। लेकिन अव्यभिचारी पूजा तो है नहीं।

यह भी बच्चे जानते हैं – विनाश भी आने का है जरूर, तैयारियाँ हो रही हैं। नैचुरल कैलेमिटीज की भी ड्रामा में नूँध है। कोई कितना भी माथा मारे, तुम्हारी राजधानी तो स्थापन होनी ही है। कोई की भी ताकत नहीं जो इसमें कुछ कर सके। बाकी अवस्थायें तो नीचे-ऊपर होंगी ही। यह है बहुत बड़ी कमाई। कभी तुम बहुत खुशी में अच्छे ख्यालात में रहेंगे, कभी ठण्डे पड़ जायेंगे। यात्रा में भी नीचे-ऊपर होते हैं, इसमें भी ऐसे होता है। कभी तो सुबह को उठ बाप को याद करने से बहुत खुशी होती है ओहो! बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। वण्डर है। सभी आत्माओं का बाप भगवान हमको पढ़ा रहे हैं। उन्होंने फिर श्रीकृष्ण को भगवान समझ लिया है। सारी दुनिया में गीता का मान बहुत है क्योंकि भगवानुवाच है ना। परन्तु यह किसको पता नहीं है कि भगवान किसको कहा जाता है। भल कितनी भी पोजीशन वाले बड़े-बड़े विद्वान, पण्डित आदि हैं, कहते भी हैं गॉड फादर को याद करते हैं परन्तु वह कब आया, क्या आकर किया यह सब भूल गये हैं। बाप सब बातें समझाते रहते हैं। ड्रामा में यह सब नूँध है। यह रावणराज्य फिर भी होगा और हमको आना पड़ेगा। रावण ही तुमको अज्ञान के घोर अन्धियारे में सुला देते हैं। ज्ञान तो सिर्फ एक ज्ञान सागर ही बतलाते हैं जिससे सद्गति होती है। सिवाए बाप के और कोई सद्गति कर न सके। सर्व का सद्गति दाता एक है। गीता का ज्ञान जो बाप ने सुनाया था वह फिर प्राय: लोप हो गया। ऐसे नहीं, यह ज्ञान कोई परम्परा चला आता है। औरों के कुरान, बाइबिल आदि चले आते हैं, विनाश नहीं हो जाते। तुमको तो जो ज्ञान अभी मैं देता हूँ, इनका कोई शास्त्र बनता नहीं है। जो परम्परा अनादि हो जाए। यह तो तुम लिखते हो फिर खत्म कर देते हो। यह तो सब नैचुरल जलकर खत्म हो जायेंगे। बाप ने कल्प पहले भी कहा था, अभी भी तुमको कह रहे हैं – यह ज्ञान तुमको मिलता है फिर प्रालब्ध जाकर पाते हो फिर इस ज्ञान की दरकार नहीं रहती। भक्ति मार्ग में

सब शास्त्र हैं। बाबा तुमको कोई गीता पढ़कर नहीं सुनाते हैं। वह तो राजयोग की शिक्षा देते हैं, जिसका फिर भक्ति मार्ग में शास्त्र बनाते हैं तो अगड़म बगड़म कर देते हैं। तो तुम्हारी मूल बात है कि गीता का ज्ञान किसने दिया! उनका नाम बदली कर दिया है, और कोई के भी नाम बदली नहीं हुए हैं। सबके मुख्य धर्म शास्त्र हैं ना। इसमें मुख्य है डिटीज्म, इस्लामिज़म, बुद्धिज़म। भल करके कोई कहते हैं कि पहले बुद्धिज़म है पीछे इस्लामिज़म। बोलो, इन बातों से गीता का कोई तैलुक नहीं है। हमारा तो काम है बाप से वर्सा लेने का। बाप कितना अच्छी रीति समझाते हैं – यह है बड़ा झाड़। अच्छा है, जैसा फ्लावरवाज़ है। 3 ट्युब्स निकलती हैं। कितना अच्छी समझ से बनाया हुआ झाड़ है। कोई भी झट समझ जायेंगे कि हम किस धर्म के हैं। हमारा धर्म किसने स्थापन किया? यह दयानंद, अरविन्द घोस आदि तो अभी होकर गये हैं। वो लोग भी योग आदि सिखलाते हैं। है सब भक्ति। ज्ञान का तो नाम-निशान नहीं। कितने बड़े-बड़े टाइटिल मिलते हैं। यह भी सब ड्रामा में नूँध है, फिर भी होगा – 5 हज़ार वर्ष बाद। शुरू से लेकर यह चक्र कैसे चला है, फिर कैसे रिपीट होता रहता है? तुम जानते हो। अभी का प्रेजन्ट फिर पास्ट हो फ्युचर हो जायेगा। पास्ट, प्रेजन्ट, फ्युचर। जो पास्ट हो जाता है वह फिर फ्युचर होता है। इस समय तुमको नॉलेज मिलती है फिर तुम राजाई लेते हो, इन देवताओं का राज्य था ना। उस समय और कोई का राज्य नहीं था। यह भी एक कहानी मिसल बताओ। बड़ी सुन्दर कहानी बन जायेगी। लांग-लांग 5 हज़ार वर्ष पहले यह भारत सतयुग था, कोई धर्म नहीं था, सिर्फ देवी-देवताओं का ही राज्य था। उनको सूर्यवंशी राज्य कहा जाता था। लक्ष्मी-नारायण का राज्य चला 1250 वर्ष, फिर उन्होंने राज्य दिया दूसरे भाइयों क्षत्रियों को फिर उनका राज्य चला। तुम समझा सकते हो कि बाप ने आकर पढ़ाया था। जो अच्छी रीति पढ़े वह सूर्यवंशी बनें। जो फेल हुए उनका नाम क्षत्रिय पड़ा। बाकी लड़ाई आदि की बात नहीं है। बाबा कहते हैं बच्चे तुम मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। तुम्हें विकारों पर जीत पानी है। बाप ने ऑर्डीनेन्स निकाला है, जो काम पर जीत पायेंगे वही जगतजीत बनेंगे। पीछे आधाकल्प बाद फिर वाम मार्ग में गिरते हैं। उन्हों के भी चित्र हैं। शक्ल देवताओं की बनी हुई है। राम राज्य और रावण राज्य आधा-आधा है। उनकी कहानी बैठ बनानी चाहिए। फिर क्या हुआ, फिर क्या हुआ। यही सत्य नारायण की कहानी है। सत्य तो एक ही बाप है, जो इस समय आकर सारे आदि-मध्य-अन्त का तुमको नॉलेज दे रहे हैं, जो और कोई दे न सके। मनुष्य तो बाप को ही नहीं जानते। जिस ड्रामा में एक्टर हैं, उनके क्रियेटर-डायरेक्टर आदि को नहीं जानते। तो बाकी कौन जानेंगे! अभी तुमको बाप बताते हैं – ड्रामा अनुसार यह फिर भी ऐसे होगा। बाप आकर तुम बच्चों को फिर पढ़ायेंगे। यहाँ दूसरा कोई आ न सके। बाप कहते हैं मैं बच्चों को ही पढ़ाता हूँ। कोई नये को यहाँ बिठा नहीं सकते। इन्द्रप्रस्थ की कहानी भी है ना। नीलम परी, पुखराज परी नाम है ना। तुम्हारे में भी कोई हीरे जैसा रत्न है। देखो रमेश ने ऐसी बात निकाली प्रदर्शनी की जो सबका विचार सागर मंथन हुआ। तो हीरे जैसा काम किया ना। कोई पुखराज है, कोई क्या है! कोई तो बिल्कुल कुछ नहीं जानते। यह भी जानते हो कि राजधानी स्थापन होती है। उनमें राजायें-रानियाँ आदि सब चाहिए। तुम समझते हो हम ब्राह्मण श्रीमत पर पढ़कर विश्व के मालिक बनते हैं। कितनी खुशी होनी चाहिए। यह मृत्युलोक खत्म होना है। यह बाबा तो अभी ही समझते रहते हैं कि हम जाकर बच्चा बनेंगे। बचपन की वह बातें अभी ही सामने आ रही हैं, चलन ही बदल जाती है। ऐसे ही वहाँ भी जब बूढ़े होंगे तो समझेंगे अब यह वानप्रस्थ शरीर छोड़ हम किशोर अवस्था में चले जायेंगे। बचपन है सतोप्रधान अवस्था। लक्ष्मी-नारायण तो युवा हैं, शादी किये हुए को किशोर अवस्था थोड़ेही कहेंगे। युवा अवस्था को रजो, वृद्ध को तमो कहते हैं इसलिए श्रीकृष्ण पर लव जास्ती रहता है। हैं तो लक्ष्मी-नारायण भी वही। परन्तु मनुष्य यह बातें नहीं जानते हैं। श्रीकृष्ण को द्वापर में, लक्ष्मी-नारायण को सतयुग में ले गये हैं। अभी तुम देवता बनने का पुरूषार्थ कर रहे हो।

बाप कहते हैं कुमारियों को तो बहुत खड़ा होना चाहिए। कुंवारी कन्या, अधर कुमारी, देलवाड़ा आदि जो भी मन्दिर हैं, यह तुम्हारे ही एक्यूरेट यादगार हैं। वह जड़, यह चैतन्य। तुम यहाँ चैतन्य में बैठे हो, भारत को स्वर्ग बना रहे हो। स्वर्ग तो यहाँ ही होगा। मूलवतन, सूक्ष्मवतन कहाँ है, तुम बच्चों को सब मालूम है। सारे ड्रामा को तुम जानते हो। जो पास्ट हो गया है सो फिर फ्युचर होगा फिर पास्ट होगा। तुमको कौन पढ़ाते हैं, यह समझना है। हमको भगवान पढ़ाते हैं। बस खुशी में ठण्डेठार हो जाना चाहिए। बाप की याद से सब घोटाले निकल जाते हैं। बाबा हमारा बाप भी है, हमको पढ़ाते भी हैं फिर

हमको साथ भी ले जायेंगे। अपने को आत्मा समझ परमात्मा बाप से ऐसी बातें करनी हैं। बाबा हमको अभी मालूम पड़ा है, ब्रह्मा और विष्णु का भी मालूम पड़ा है। विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। अब विष्णु दिखाते हैं क्षीरसागर में। ब्रह्मा को सूक्ष्मवतन में दिखाते हैं। वास्तव में है यहाँ। विष्णु तो हुआ राज्य करने वाला। अगर विष्णु से ब्रह्मा निकला तो जरूर राज्य भी करेगा। विष्णु की नाभी से निकला तो जैसे कि बच्चा हो गया। यह सब बातें बाप बैठ समझाते हैं। ब्रह्मा ही 84 जन्म पूरे कर अब फिर विष्णुपुरी के मालिक बनते हैं। यह बातें भी कोई पूरी रीति समझते नहीं हैं, तब तो वह खुशी का पारा नहीं चढ़ता। गोप-गोपियाँ तो तुम हो। सतयुग में थोड़ेही होंगे। वहाँ तो होंगे प्रिन्स-प्रिन्सेज। गोप-गोपियों का गोपी वल्लभ है ना। प्रजापिता ब्रह्मा है सबका बाप और फिर सब आत्माओं का बाप है निराकार शिव। यह सब हैं मुख वंशावली। तुम सब बी.के. भाई-बहन हो गये। क्रिमिनल आई हो न सके, इसमें ही माया हार खिलाती है। बाप कहते हैं अभी तक जो कुछ पढ़ा है उसे बुद्धि से भूल जाओ। मैं जो सुनाता हूँ वह पढ़ो। सीढ़ी तो बड़ी फर्स्टक्लास है। सारा मदार है एक बात पर। गीता का भगवान कौन? श्रीकृष्ण को भगवान कह नहीं सकते। वह तो सर्वगुण सम्पन्न देवता है। उनका नाम गीता में दे दिया है। सांवरा भी उनको बनाया है और फिर लक्ष्मी-नारायण को भी सांवरा कर देते। कोई हिसाब-किताब ही नहीं। रामचन्द्र को भी काला कर देते। बाप कहते हैं काम चिता पर बैठने से सांवरा हुआ है। नाम करके एक का लिया जाता है। तुम सब ब्राह्मण हो। अभी तुम ज्ञान चिता पर बैठते हो। शूद्र काम चिता पर बैठे हैं। बाप कहते हैं – विचार सागर मंथन कर युक्तियां निकालो कि कैसे जगायें? जागेंगे भी ड्रामा अनुसार। ड्रामा बड़ा धीरे-धीरे चलता है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) सदा इसी स्मृति में रहना है कि हम गोपी वल्लभ के गोप-गोपियां हैं। इसी स्मृति से सदा खुशी का पारा चढ़ा रहे।

2) अभी तक जो कुछ पढ़ा है, उसे बुद्धि से भूल बाप जो सुनाते हैं वही पढ़ना है। हम भाई बहिन हैं इस स्मृति से क्रिमिनल आई को खत्म करना है। माया से हार नहीं खानी है।

वरदान:- सेवा द्वारा योगयुक्त स्थिति का अनुभव करने वाले रूहानी सेवाधारी भव

ब्राह्मण जीवन सेवा का जीवन है। माया से जिंदा रखने का श्रेष्ठ साधन सेवा है। सेवा योगयुक्त बनाती है लेकिन सिर्फ मुख की सेवा नहीं, सुने हुए मधुर बोल का स्वरूप बन सेवा करना, नि:स्वार्थ सेवा करना, त्याग, तपस्या स्वरूप से सेवा करना, हद की कामनाओं से परे निष्काम सेवा करना–इसको कहा जाता है ईश्वरीय वा रूहानी सेवा। मुख के साथ मन द्वारा सेवा करना अर्थात् मनमनाभव स्थिति में स्थित होना।

स्लोगन:- आकृति को न देखकर निराकार बाप को देखेंगे तो आकर्षण मूर्त बन जायेंगे।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

बापदादा का बच्चों से इतना प्यार है जो समझते हैं हर एक बच्चा मेरे से भी आगे हो। दुनिया में भी जिससे ज्यादा प्यार होता है उसे अपने से भी आगे बढ़ाते हैं। यही प्यार की निशानी है। तो बापदादा भी कहते हैं मेरे बच्चों में अब कोई भी कमी नहीं रहे, सब सम्पूर्ण, सम्पन्न और समान बन जायें। यही परमात्म प्यार सहजयोगी बना देता है।

''मीठे बच्चे – ज्ञान सागर बाप आये हैं ज्ञान वर्षा कर इस धरती को सब्ज बनाने, अभी स्वर्ग की स्थापना हो रही है, उसमें चलने के लिए दैवी सम्प्रदाय का बनना है''

प्रश्नः- सर्वोत्तम कुल वाले बच्चों का मुख्य कर्तव्य क्या है?

उत्तरः- सदा ऊंची रूहानी सेवा करना। यहाँ बैठे वा चलते-फिरते खास भारत और आम सारे विश्व को पावन बनाना, श्रीमत पर बाप के मददगार बनना – यही सर्वोत्तम ब्राह्मणों का कर्तव्य है।

गीतः- जो पिया के साथ है.....

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझा रहे हैं जो रूहानी बाप के साथ हैं क्योंकि बाप है ज्ञान का सागर। कौन सा बाप? शिवबाबा। ब्रह्मा बाबा को ज्ञान का सागर नहीं कहेंगे। शिवबाबा जिसको ही परमपिता परमात्मा कहा जाता है। एक है लौकिक जिस्मानी पिता, दूसरा है पारलौकिक रूहानी पिता। वह शरीर का पिता, वह आत्माओं का पिता। यह बड़ी अच्छी रीति समझने की बातें हैं और यह ज्ञान सुनाने वाला है ज्ञान सागर। जैसे भगवान सबका एक है, वैसे ज्ञान भी एक दे सकते हैं। बाकी जो शास्त्र गीता आदि पढ़ते हैं, भक्ति करते हैं वह कोई ज्ञान नहीं, उनसे ज्ञान वर्षा नहीं होती है, इसलिए भारत बिल्कुल ही सूख गया है। कंगाल हो गया है। वह बरसात भी नहीं पड़ती है तो जमीन आदि सब सूख जाती है। वह है भक्ति मार्ग। उसको ज्ञान मार्ग नहीं कहेंगे। ज्ञान से स्वर्ग की स्थापना होती है। वहाँ हमेशा धरनी सब्ज रहती है, कभी सूखती नहीं। यह है ज्ञान की पढ़ाई। ईश्वर बाप ज्ञान देकर दैवी सम्प्रदाय का बनाते हैं। बाप ने समझाया है मैं तुम सभी आत्माओं का बाप हूँ। परन्तु मुझे और मेरे कर्तव्य को न जानने कारण ही मनुष्य इतने पतित दु:खी निधनके बन गये हैं। आपस में लड़ते रहते हैं। घर में बाप नहीं होता है, बच्चे लड़ते हैं तो कहते हैं ना कि तुम्हारा बाप है या नहीं है? इस समय भी सारी दुनिया बाप को जानती नहीं। न जानने कारण इतनी दुर्गति हुई है। जानने से सद्गति होती है। सर्व का सद्गति दाता एक है। उनको बाबा कहा जाता है। उनका नाम शिव ही है। उनका नाम कभी बदल नहीं सकता। जब संन्यास करते हैं तो नाम बदलते हैं ना। शादी में भी कुमारी का नाम बदलते हैं। यह यहाँ भारत में रिवाज है। बाहर में ऐसा नहीं होता है। यह शिवबाबा सभी का माई बाप है। गाते भी हैं तुम मात पिता..... भारत में ही पुकारते हैं – तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे। ऐसे नहीं कि भक्ति मार्ग में भगवान कृपा करते आये हैं। नहीं, भक्ति में सुख घनेरे होते ही नहीं। बच्चे जानते हैं स्वर्ग में बहुत सुख हैं। वह नई दुनिया है। पुरानी दुनिया में दु:ख ही होता है। जो जीते जी अच्छी रीति मरे हुए हैं उनके नाम बदल सकते हैं। परन्तु माया जीत लेती है तो ब्राह्मण से बदल शूद्र बन जाते हैं इसलिए बाबा नाम नहीं रखते हैं। ब्राह्मणों की माला तो होती नहीं। तुम बच्चे सर्वोत्तम ऊंच कुल वाले हो। ऊंच रूहानी सेवा करते हो। यहाँ बैठे वा चलते फिरते तुम भारत की खास और विश्व की आम सेवा करते हो। विश्व को तुम पवित्र बनाते हो। तुम हो बाप के मददगार। बाप की श्रीमत पर चल तुम मदद करते हो। यह भारत ही पावन बनने का है। तुम कहेंगे हम कल्प-कल्प इस भारत को पवित्र बनाए पवित्र भारत पर राज्य करते हैं। ब्राह्मण से फिर हम भविष्य देवी-देवता बनते हैं। विराट रूप का चित्र भी है। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण ही ठहरे। ब्राह्मण तब होंगे जब प्रजापिता सम्मुख होगा। अभी तुम सम्मुख हो। तुम हर एक प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद अपने को समझते हो। यह युक्ति है। औलाद समझने से भाई-बहन हो जाते हैं। भाई-बहन की कभी क्रिमिनल आंख नहीं होनी चाहिए। अभी बाप आर्डीनेन्स निकालते हैं कि तुम 63 जन्म पतित रहे हो, अब पावन दुनिया स्वर्ग में चलना चाहते हो तो पवित्र बनो। वहाँ पतित आत्मा जा नहीं सकती इसलिए ही मुझ बेहद के बाप को तुम बुलाते हो। यह आत्मा शरीर द्वारा बात करती है। शिवबाबा भी कहते हैं मैं इस शरीर द्वारा बात करता हूँ। नहीं तो मैं कैसे आऊं? मेरा जन्म दिव्य है। सतयुग में हैं दैवीगुणों वाले देवतायें। इस समय हैं आसुरी गुणों वाले मनुष्य। यहाँ के मनुष्यों को देवता नहीं कहेंगे। फिर भल कोई भी हो नाम तो बहुत बड़े-बड़े रख देते हैं। साधू अपने को श्री श्री कहते हैं और मनुष्यों को श्री कहते हैं क्योंकि खुद पवित्र हैं इसलिए श्री श्री कहते हैं। हैं तो मनुष्य। भल विकार में नहीं जाते परन्तु विकारी दुनिया में तो हैं ना। तुम भविष्य में निर्विकारी दैवी दुनिया में राज्य करेंगे। होंगे वहाँ भी मनुष्य परन्तु दैवी गुणों वाले होंगे। इस समय मनुष्य आसुरी गुणों वाले पतित हैं। गुरू नानक ने भी कहा है मूत पलीती कपड़ धोए..... गुरू नानक भी बाप की महिमा करते हैं।

अब बाप आये हैं स्थापना और विनाश करने। और जो भी धर्म स्थापक हैं वह सिर्फ धर्म स्थापन करते हैं और धर्मों का विनाश नहीं करते हैं, उन्हों की तो वृद्धि होती रहती है। अभी बाप वृद्धि को बन्द करते हैं। एक धर्म की स्थापना और अनेक धर्मों का विनाश करा देते हैं। ड्रामा अनुसार यह होना ही है। बाप कहते हैं मैं आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कराता हूँ, जिसके लिए तुमको पढ़ा रहा हूँ। सतयुग में अनेक धर्म होते ही नहीं। ड्रामा में इन सबके वापिस जाने की नूँध है। इस विनाश को कोई टाल नहीं सकते। विश्व में शान्ति तब होती है जब विनाश होता है। इस लड़ाई द्वारा ही स्वर्ग के गेट खुलते हैं। यह भी तुम लिख सकते हो कि यह महाभारी लड़ाई कल्प पहले भी लगी थी। तुम प्रदर्शनी का उद्घाटन कराते हो तो यह लिखो। बाप परमधाम से आये हैं – हेविन का उद्घाटन करने। बाप कहते हैं मैं हेविनली गॉड फादर हेविन का उद्घाटन करने आया हूँ। बच्चों की ही मदद लेता हूँ, स्वर्गवासी बनाने के लिए। इतनी सब आत्माओं को पावन नहीं तो कौन बनाये। ढेर आत्मायें हैं। घर-घर में तुम यह समझा सकते हो। भारतवासी तुम सतोप्रधान थे फिर 84 जन्मों बाद तमोप्रधान बने हो। अब फिर सतोप्रधान बनो। मनमनाभव। ऐसे मत कहो कि हम शास्त्रों को नहीं मानते हैं। बोलो, शास्त्रों को और भक्तिमार्ग को तो हम मानते थे परन्तु अभी यह भक्तिमार्ग की रात पूरी होती है। ज्ञान से दिन शुरू होता है। बाप आये हैं सद्गति करने। समझाने की बड़ी युक्ति चाहिए। कोई अच्छी रीति धारणा करते हैं, कोई कम करते हैं। प्रदर्शनी में भी जो अच्छे-अच्छे बच्चे हैं – वह अच्छा समझाते हैं। जैसे बाप टीचर है तो बच्चों को भी टीचर बनना पड़े। गाया भी जाता है सतगुरू तारे, बाप को कहा जाता है सचखण्ड की स्थापना करने वाला सच्चा बाबा। झूठ खण्ड स्थापन करने वाला है रावण। अब जबकि सद्गति करने वाला मिला है तो फिर हम भक्ति कैसे करेंगे? भक्ति सिखलाने वाले हैं अनेक गुरू लोग। सतगुरू तो एक ही है। कहते भी हैं सतगुरू अकाल..... फिर भी अनेक गुरू बनते रहते हैं। संन्यासी, उदासी बहुत प्रकार के गुरू लोग होते हैं। सिक्ख लोग खुद ही कहते हैं सतगुरू अकाल..... अर्थात् जिसको काल नहीं खाता। मनुष्य को तो काल खा जाता है। बाप समझाते हैं मनमनाभव। उनका फिर है जप साहेब को तो सुख मिले..... मुख्य दो अक्षर हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो – जप साहेब को। साहेब तो एक है। गुरूनानक ने भी उनके लिए इशारा किया है कि उनको जपो। वास्तव में तुमको जपना नहीं है, याद करना है। यह है अजपाजाप। मुख से कुछ बोलो नहीं। शिव-शिव भी कहना नहीं है। तुमको तो जाना है शान्तिधाम। अब बाप को याद करो। अजपाजाप भी एक ही होता है जो बाप सिखलाते हैं। वह कितने घण्टे बजाते, आवाज़ करते, महिमा करते। कहते हैं अचतम् केशवम्..... लेकिन एक भी अक्षर को समझते नहीं। सुख देने वाला तो एक ही बाप है। व्यास भी उनको ही कहेंगे। उनमें नॉलेज है जो देते हैं। सुख भी वही देते हैं। तुम बच्चे समझते हो – अब हमारी चढ़ती कला होती है। सीढ़ी में कलाओं को भी दिखाया है। इस समय कोई कला नहीं है। मैं निर्गुण हारे में.....। एक निर्गुण संस्था भी है। अब बाप कहते हैं – बालक तो महात्मा मिसल होता है। उनमें कोई अवगुण नहीं है। उनका फिर नाम रख देते हैं निर्गुण बालक। अगर बालक में गुण नहीं तो बाप में भी नहीं। सबमें अवगुण हैं। गुणवान सिर्फ देवतायें बनते हैं। नम्बरवन अवगुण है जो बाप को नहीं जानते। दूसरा अवगुण है जो विषय सागर में गोता खाते हैं। बाप कहते हैं आधाकल्प तुमने गोता खाया है। अब मैं ज्ञान सागर तुमको क्षीरसागर में ले जाता हूँ। मैं तो क्षीर सागर में जाने के लिए तुमको शिक्षा देता हूँ। मैं इनके बाजू में आकर बैठता हूँ, जहाँ आत्मा रहती है। मैं स्वतन्त्र हूँ। कहाँ भी जा आ सकता हूँ। तुम पित्रों को खिलाते हो तो आत्मा को खिलाते हो ना। शरीर तो भस्म हो जाता है। उनको देख भी नहीं सकते। समझते हो फलाने की आत्मा का श्राद्ध है। आत्मा को बुलाया जाता है – यह भी ड्रामा में पार्ट है। कभी आती है, कभी नहीं भी आती है। कोई बताते हैं, कोई नहीं भी बताते हैं। यहाँ भी आत्मा को बुलाते हैं, आकर बोलती है। परन्तु ऐसे नहीं बताती कि फलानी जगह जन्म लिया है। सिर्फ इतना कहेगी कि हम बहुत सुखी हैं, अच्छे घर में जन्म लिया है। अच्छे ज्ञान वाले बच्चे अच्छे घर में जायेंगे। कम ज्ञान वाले कम पद पायेंगे। बाकी सुख तो है। राजा बनना अच्छा है या दासी बनना अच्छा? राजा बनना है तो इस पढ़ाई में लग जाओ। दुनिया तो बहुत गन्दी है। दुनिया के संग को कहेंगे कुसंग। एक सत का संग ही पार करता है, बाकी सब डुबोते हैं। बाप तो सबकी जन्मपत्री जानते हैं ना। यह पाप की दुनिया है, तब तो पुकारते हैं – और कहीं ले चलो। अब बाप कहते हैं – मीठे-मीठे बच्चों, मेरा बनकर फिर मेरी मत पर चलो। यह बहुत गन्दी दुनिया है। करप्शन है। लाखों-करोड़ों रूपयों की ठगी होती है। अब बाप आये हैं बच्चों को स्वर्ग का मालिक बनाने

तो अथाह खुशी होनी चाहिए ना। वास्तव में यह है सच्ची गीता। फिर यह ज्ञान प्राय: लोप हो जायेगा। अभी तुमको यह ज्ञान है फिर दूसरा जन्म लेंगे तो ज्ञान खलास। फिर है प्रालब्ध। तुमको पुरूषोत्तम बनाने के लिए बाप पढ़ाते हैं। अभी तुमने बाप को जाना है। अब अमरनाथ की यात्रा होती है। बोलो, जिनको सूक्ष्मवतन में दिखाते हो वह फिर स्थूल वतन में कहाँ से आया? पहाड़ आदि तो यहाँ हैं ना। वहाँ पतित हो कैसे सकते? जो पार्वती को ज्ञान देते हैं। बर्फ का लिंग बैठ हाथ से बनाते हैं। वह तो कहाँ भी बना सकते हैं। मनुष्य कितने धक्के खाते हैं। समझते नहीं कि शंकर के पास पार्वती कहाँ से आई जो उनको पावन बनायेंगे। शंकर कोई परमात्मा नहीं, वह भी देवता है। मनुष्यों को कितना समझाया जाता है फिर भी समझते नहीं। पारसबुद्धि बन नहीं सकते। प्रदर्शनी में कितने आते हैं। कहेंगे नॉलेज तो बहुत अच्छी है। सबको लेनी चाहिए। अरे तुम तो लो। कहेंगे हमको फुर्सत नहीं। प्रदर्शनी में यह भी लिखना चाहिए कि इस लड़ाई के पहले बाप स्वर्ग का उद्घाटन कर रहे हैं। विनाश के बाद स्वर्ग के द्वार खुल जायेंगे। बाबा ने कहा था हर एक चित्र में लिखो – पारलौकिक परमपिता परमात्मा त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। त्रिमूर्ति न लिखने से कहेंगे शिव तो निराकार है, वह कैसे ज्ञान देंगे? समझाया जाता है यही पहले गोरा था, श्रीकृष्ण था फिर अब सांवरा मनुष्य बना है। अब तुमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। फिर हिस्ट्री रिपीट होनी है। गायन भी है मनुष्य से देवता किये..... फिर सीढ़ी उतर मनुष्य बनते हैं। फिर बाप आकर देवता बनाते हैं। बाप कहते हैं मुझे आना पड़ता है। कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे आता हूँ। युगे-युगे कहना रांग है। मैं संगमयुग पर आकर तुमको पुण्य आत्मा बनाता हूँ। फिर रावण तुमको पाप आत्मा बनाते हैं। बाप ही पुरानी दुनिया को नई दुनिया बनाते हैं। यह समझने की बातें हैं। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) बाप के समान टीचर बनना है, बड़ी युक्ति से सबको इस झूठखण्ड से निकाल सचखण्ड में चलने के लायक बनाना है।

2) दुनिया का संग कुसंग है, इसलिए कुसंग से किनारा कर एक सत का संग करना है। ऊंच पद के लिए इस पढ़ाई में लग जाना है। एक बाप की मत पर ही चलना है।

वरदान:- अपना सब कुछ सेवा में अर्पित करने वाले गुप्त दानी पुण्य आत्मा भव

जो भी सेवा करते हो उसे विश्व कल्याण के लिए अर्पित करते चलो। जैसे भक्ति में जो गुप्त दानी पुण्य आत्मायें होती हैं वो यही संकल्प करती हैं कि सर्व के भले प्रति हो। ऐसे आपका हर संकल्प सेवा में अर्पित हो। कभी अपनेपन की कामना नहीं रखो। सर्व प्रति सेवा करो। जो सेवा विघ्न रूप बने उसे सच्ची सेवा नहीं कहेंगे इसलिए अपना पन छोड़ गुप्त और सच्चे सेवाधारी बन सेवा से विश्व कल्याण करते चलो।

स्लोगन:- हर बात प्रभू अर्पण कर दो तो आने वाली मुश्किलातें सहज अनुभव होंगी।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

आदिकाल, अमृतवेले अपने दिल में परमात्म प्यार को सम्पूर्ण रूप से धारण कर लो। अगर दिल में परमात्म प्यार, परमात्म शक्तियाँ, परमात्म ज्ञान फुल होगा तो कभी और किसी भी तरफ लगाव या स्नेह जा नहीं सकता। बाप से सच्चा प्यार है तो प्यार की निशानी है–समान, कर्मातीत। 'करावनहार' होकर कर्म करो, कराओ। कभी भी मन-बुद्धि वा संस्कारों के वश होकर कोई भी कर्म नहीं करो।

''मीठे बच्चे – अपनी सतोप्रधान तकदीर बनाने के लिए याद में रहने का खूब पुरूषार्थ करो, सदा याद रहे मैं आत्मा हूँ, बाप से पूरा वर्सा लेना है''

प्रश्नः- बच्चों को याद का चार्ट रखना मुश्किल क्यों लगता है?

उत्तरः- क्योंकि कई बच्चे याद को यथार्थ समझते ही नहीं हैं। बैठते हैं याद में और बुद्धि बाहर भटकती है। शान्त नहीं होती। वह फिर वायुमण्डल को खराब करते हैं। याद करते ही नहीं तो चार्ट फिर कैसे लिखें। अगर कोई झूठ लिखते हैं तो बहुत दण्ड पड़ जाता है। सच्चे बाप को सच बताना पड़े।

गीतः- तकदीर जगाकर आई हूँ.....

ओम् शान्ति। रूहानी बच्चों को फिर भी रूहानी बाप रोज़-रोज़ समझाते हैं कि जितना हो सके देही-अभिमानी बनो। अपने को आत्मा निश्चय करो और बाप को याद करो क्योंकि तुम जानते हो हम उस बेहद के बाप से बेहद सुख की तकदीर बनाने आये हैं। तो जरूर बाप को याद करना पड़े। पवित्र सतोप्रधान बनने बिगर सतोप्रधान तकदीर बना नहीं सकते। यह तो अच्छी रीति याद करो। मूल बात है ही एक। यह तो अपने पास लिख दो। बांह पर नाम लिखते हैं ना। तुम भी लिख दो – हम आत्मा हैं, बेहद के बाप से हम वर्सा ले रहे हैं क्योंकि माया भुला देती है इसलिए लिखा हुआ होगा तो घड़ी-घड़ी याद रहेगी। मनुष्य ओम् का वा कृष्ण आदि का चित्र भी लगाते हैं याद के लिए। यह तो है नये ते नई याद। यह सिर्फ बेहद का बाप ही समझाते हैं। इस समझने से तुम सौभाग्यशाली तो क्या पदम भाग्यशाली बनते हो। बाप को न जानने कारण, याद न करने कारण कंगाल बन गये हैं। एक ही बाप है जो सदैव के लिए जीवन को सुखी बनाने आये हैं। भल याद भी करते हैं परन्तु जानते बिल्कुल नहीं हैं। विलायत वाले भी सर्वव्यापी कहना भारतवासियों से सीखे हैं। भारत गिरा है, तो सब गिरे हैं। भारत ही रेसपान्सिबुल है अपने को गिराने और सबको गिराने। बाप कहते हैं मैं भी यहाँ ही आकर भारत को स्वर्ग सचखण्ड बनाता हूँ। ऐसा स्वर्ग बनाने वाले की कितनी ग्लानि कर दी है। भूल गये हैं इसलिए लिखा हुआ है यदा यदाहि..... इनका भी अर्थ बाप ही आकर समझाते हैं। बलिहारी एक बाप की है। अभी तुम जानते हो बाप आते हैं जरूर, शिव-जयन्ती मनाते हैं। परन्तु शिव-जयन्ती का कदर बिल्कुल नहीं है। अभी तुम बच्चे समझते हो जरूर होकर गये हैं, जिसकी जयन्ती मनाते हैं। सतयुगी आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना वही करते हैं। और सब जानते हैं कि हमारा धर्म फलाने ने फलाने समय स्थापन किया। उनके पहले है ही देवी-देवता धर्म। उनको बिल्कुल ही नहीं जानते कि यह धर्म कहाँ गुम हो गया। अभी बाप आकर समझाते हैं – बाप ही सबसे ऊंच है, और किसकी महिमा है नहीं। धर्म स्थापक की महिमा क्या होगी। बाप ही पावन दुनिया की स्थापना और पतित दुनिया का विनाश कराते हैं और तुमको माया पर जीत पहनाते हैं। यह बेहद की बात है। रावण का राज्य सारी बेहद की दुनिया पर है। हद के लंका आदि की बात नहीं। यह हार-जीत की कहानी भी सारे भारत की ही है। बाकी तो बाईप्लाट हैं। भारत में ही डबल सिरताज और सिंगल ताज राजायें बनते हैं और जो भी बड़े-बड़े बादशाह होकर गये हैं, कोई पर भी लाइट का ताज नहीं होता है सिवाए देवी-देवताओं के। देवतायें तो फिर भी स्वर्ग के मालिक थे ना। अब शिवबाबा को कहा ही जाता है परमपिता, पतित-पावन। इनको लाइट कहाँ देंगे। लाइट तब दें जब बिगर लाइट वाला पतित भी हो। वह कभी बिगर लाइट वाला होता ही नहीं। बिन्दी पर लाइट दे कैसे सकेंगे। हो न सके। दिन-प्रतिदिन तुमको बहुत गुह्य-गुह्य बातें समझाते रहते हैं, जो जितना बुद्धि में बिठा सके। मुख्य है ही याद की यात्रा। इसमें माया के विघ्न बहुत पड़ते हैं। भल कोई याद के चार्ट में 50-60 परसेन्ट भी लिखते हैं परन्तु समझते नहीं हैं कि याद की यात्रा किसको कहा जाता है। पूछते रहते हैं – इस बात को याद कहें? बड़ा मुश्किल है। तुम यहाँ 10-15 मिनट बैठते हो, उनमें भी जांच करो – याद में अच्छी रीति रहते हैं? बहुत हैं जो याद में रह नहीं सकते फिर वह वायुमण्डल को खराब कर देते हैं। बहुत हैं जो याद में न रहने से विघ्न डालते हैं। सारा दिन बुद्धि बाहर भटकती रहती है। सो यहाँ थोड़ेही शान्त होगी, इसलिए याद का चार्ट भी रखते नहीं। झूठा लिखने से तो और ही दण्ड पड़े। बहुत बच्चे भूलें करते हैं, छिपाते हैं। सच बताते नहीं। बाप कहे और सच न बताये तो कितना दोष हो जाता। कितना भी बड़ा गन्दा काम किया होगा तो भी सच बताने में लज्जा आयेगी। अक्सर करके सब झूठ बतायेंगे। झूठी माया, झूठी काया..... है ना। एकदम देह-अभिमान में आ जाते हैं। सच सुनाना तो अच्छा ही है और भी सीखेंगे। यहाँ सच

बताना है। नॉलेज के साथ-साथ याद की यात्रा भी जरूरी है क्योंकि याद की यात्रा से ही अपना और विश्व का कल्याण होना है। नॉलेज समझाने के लिए बहुत सहज है। याद में ही मेहनत है। बाकी बीज से झाड़ कैसे निकलता है, वह तो सबको मालूम रहता है। बुद्धि में 84 का चक्र है, बीज और झाड़ की नॉलेज होगी ना। बाप तो सत्य है, चैतन्य है, ज्ञान का सागर है। उनमें नॉलेज है समझाने के लिए। यह है बिल्कुल अनकॉमन बात। यह मनुष्य सृष्टि का झाड़ है। यह भी कोई नहीं जानते। सब नेती-नेती करते गये। ड्युरेशन को ही नहीं जानते तो बाकी क्या जानेंगे। तुम्हारे में भी बहुत थोड़े हैं जो अच्छी रीति जानते हैं, इसलिए सेमीनार भी बुलाते हैं। अपनी-अपनी राय दो। राय तो कोई भी दे सकते हैं। ऐसे नहीं कि जिनके नाम हैं उनको ही देनी है। हमारा नाम नहीं है, हम कैसे देवें। नहीं, कोई को भी सर्विस अर्थ कोई राय हो, एडवाइज़ हो लिख सकते हो। बाप कहते हैं कोई भी राय आये तो लिखना चाहिए। बाबा इस युक्ति से सर्विस बहुत बढ़ सकती है। कोई भी राय दे सकते हैं। देखेंगे किस-किस प्रकार की राय दी है। बाबा तो कहते रहते हैं – किस युक्ति से हम भारत का कल्याण करें, सबको पैगाम देवें। आपस में विचार निकालो, लिखकर भेजो। माया ने सबको सुला दिया है। बाप आते ही हैं जब मौत सामने होता है। अब बाप कहते हैं सबकी वानप्रस्थ अवस्था है, पढ़ो न पढ़ो, मरना जरूर है। तैयारी करो न करो, नई दुनिया जरूर स्थापन होनी है। अच्छे-अच्छे बच्चे जो हैं वह अपनी तैयारी कर रहे हैं। सुदामा का भी मिसाल गाया हुआ है – चावल मुट्ठी ले आया। बाबा हमको भी महल मिलने चाहिए। है ही उनके पास चावल मुट्ठी तो क्या करेंगे। बाबा ने मम्मा का मिसाल बताया है – चावल मुट्ठी भी नहीं ले आई। फिर कितना ऊंच पद पा लिया, इसमें पैसे की बात नहीं है। याद में रहना है और आप समान बनाना है। बाबा की तो कोई फी आदि नहीं। समझते हैं हमारे पास पैसे पड़े हैं तो क्यों न यज्ञ में स्वाहा कर दें। विनाश तो होना ही है। सब व्यर्थ हो जायेगा, इससे कुछ तो सफल करें। हर एक मनुष्य कुछ न कुछ दान-पुण्य आदि जरूर करते हैं। वह है पाप आत्माओं का पाप आत्माओं को दान-पुण्य। फिर भी उसका अल्पकाल के लिए फल मिल जाता है। समझो कोई युनिवर्सिटी, कॉलेज आदि बनाते हैं, पैसे जास्ती हैं, धर्मशाला आदि बना देते हैं तो उनको मकान आदि अच्छा मिल जायेगा। परन्तु फिर भी बीमारी आदि तो होगी ना। समझो किसने हॉस्पिटल आदि बनाई होगी तो करके तन्दुरूस्ती अच्छी रहेगी। परन्तु उनसे सब कामनायें तो सिद्ध नहीं होती हैं। यहाँ तो बेहद के बाप द्वारा तुम्हारी सब कामनायें पूरी हो जाती हैं।

तुम बनते हो पावन तो सब पैसे विश्व को पावन बनाने में लगाना अच्छा है ना। मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हो सो भी आधाकल्प के लिए। सब कहते हैं हमको शान्ति कैसे मिले। वह तो शान्तिधाम में मिलती है और सतयुग में एक धर्म होने कारण वहाँ अशान्ति होती नहीं। अशान्ति होती है रावण राज्य में। गायन भी है ना – राम राजा राम प्रजा..... वह है अमरलोक। वहाँ अमरलोक में मरने का अक्षर होता नहीं। यहाँ तो बैठे-बैठे अचानक मर जाते हैं, इसको मृत्युलोक उसको अमरलोक कहा जाता है। वहाँ मरना होता नहीं। पुराना एक शरीर छोड़ फिर बालक बन जाते हैं। रोग होता नहीं। कितना फायदा होता है। श्री श्री की मत पर तुम एवरहेल्दी बनते हो। तो ऐसे रूहानी सेन्टर्स कितने खुलने चाहिए। थोड़े भी आते हैं वह कम है क्या। इस समय कोई भी मनुष्य ड्रामा के ड्युरेशन को नहीं जानते हैं। पूछेंगे तुमको फिर यह किसने सिखलाया है। अरे, हमको बताने वाला बाप है। इतने ढेर बी.के. हैं। तुम भी बी.के. हो। शिवबाबा के बच्चे हो। प्रजापिता ब्रह्मा के भी बच्चे हो। यह है ह्युमैनिटी का ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर। इनसे हम बी.के. निकले हैं। बिरादरियाँ होती हैं ना। तुम्हारे देवी-देवताओं का कुल बहुत सुख देने वाला है। यहाँ तुम उत्तम बनते हो फिर वहाँ राज्य करते हो। यह किसको बुद्धि में रह न सके। यह भी बच्चों को समझाया है देवताओं के पैर इस तमोप्रधान दुनिया में पड़ न सके। जड़ चित्र का परछाया पड़ सकता है, चैतन्य का नहीं पड़ सकता। तो बाप समझाते हैं – बच्चे, एक तो याद की यात्रा में रहो, कोई भी विकर्म न करो और सर्विस की युक्तियाँ निकालो। बच्चे कहते हैं – बाबा, हम तो लक्ष्मी-नारायण जैसा बनेंगे। बाबा कहते तुम्हारे मुख में गुलाब लेकिन इसके लिए मेहनत भी करनी है। ऊंच पद पाना है तो आप समान बनाने की सेवा करो। तुम एक दिन देखेंगे - एक-एक पण्डा अपने साथ 100-200 यात्री भी ले आयेंगे। आगे चल देखते रहेंगे। पहले से थोड़ेही कुछ कह सकते हैं। जो होता रहेगा सो देखते रहेंगे।

यह बेहद का ड्रामा है। तुम्हारा है सबसे मुख्य पार्ट बाप के साथ, जो तुम पुरानी दुनिया को नई बनाते हो। यह है पुरूषोत्तम

संगम युग। अब तुम सुखधाम के मालिक बनते हो। वहाँ दु:ख का नाम-निशान नहीं होगा। बाप है ही दु:ख हर्ता, सुख कर्ता। दु:ख से आकर लिबरेट करते हैं। भारतवासी फिर समझते हैं इतना धन है, बड़े-बड़े महल है, बिजलियाँ हैं, बस यही स्वर्ग है। यह सब है माया का पाम्प। सुख के लिए साधन बहुत करते हैं। बड़े-बड़े महल मकान बनाते हैं फिर मौत कैसे अचानक हो जाता है, वहाँ मरने का डर नहीं। यहाँ तो अचानक मर जाते हैं फिर कितना शोक करते हैं। फिर समाधि पर जाकर आंसू बहाते हैं। हर एक की अपनी-अपनी रसम-रिवाज है। अनेक मत हैं। सतयुग में ऐसी बात होती नहीं। वहाँ तो एक शरीर छोड़ दूसरा ले लेते हैं। तो तुम कितना सुख में जाते हो। उसके लिए कितना पुरूषार्थ करना चाहिए। कदम-कदम पर मत लेनी चाहिए। गुरू की वा पति की मत लेते हैं वा तो अपनी मत से चलना होता है। आसुरी मत क्या काम देंगी। आसुरी तरफ ही ढकेलेगी। अब तुमको मिलती है ईश्वरीय मत, ऊंच ते ऊंच इसलिए गाया हुआ भी है – श्रीमत भगवानुवाच। तुम बच्चे श्रीमत से सारे विश्व को हेविन बनाते हो। उस हेविन के तुम मालिक बनते हो इसलिए तुम्हें हर कदम पर श्रीमत लेनी है परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तो फिर मत पर चलते नहीं हैं। बाबा ने समझाया है किसको भी अपना कुछ अक्ल हो, राय हो तो बाबा को भेज देवें। बाबा जानते हैं कौन-कौन राय देने लायक हैं। नये-नये बच्चे निकलते रहते हैं। बाबा तो जानते हैं ना कौन से अच्छे-अच्छे बच्चे हैं। दुकानदारों को भी राय निकालनी चाहिए – ऐसे यत्न करें जो बाप का परिचय मिले। दुकान में भी सबको याद कराते रहें। भारत में जब सतयुग था तो एक धर्म था। इसमें नाराज़ होने की तो बात ही नहीं। सबका एक बाप है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जाएं। स्वर्ग के मालिक बन जायेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) श्रीमत पर चलकर सारे विश्व को स्वर्ग बनाने की सेवा करनी है, बहुतों को आप समान बनाना है। आसुरी मत से अपनी सम्भाल करनी है।

2) याद की मेहनत से आत्मा को सतोप्रधान बनाना है। सुदामा मिसल जो भी चावल मुट्ठी हैं वह सब सफल कर अपनी सर्व कामनायें सिद्ध करनी है।

वरदान:- एक बाप दूसरा न कोई – इस दृढ़ संकल्प द्वारा अविनाशी, अमर भव

जो बच्चे यह दृढ़ संकल्प करते हैं कि एक बाप दूसरा न कोई.....उनकी स्थिति स्वत: और सहज एकरस हो जाती है। इसी दृढ़ संकल्प से सर्व सम्बन्धों की अविनाशी तार जुड़ जाती है और उन्हें सदा अविनाशी भव, अमर भव का वरदान मिल जाता है। दृढ़ संकल्प करने से पुरूषार्थ में भी विशेष रूप से लिफ्ट मिलती है। जिनके एक बाप से सर्व सम्बन्ध हैं उन्हें सर्व प्राप्तियां स्वत: हो जाती हैं।

स्लोगन:- सोचना-बोलना और करना तीनों को एक समान बनाओ–तब कहेंगे सर्वोत्तम पुरूषार्थी।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

जिस समय जिस सम्बन्ध की आवश्यकता हो, उसी सम्बन्ध से भगवान को अपना बना लो। दिल से कहो मेरा बाबा, और बाबा कहे मेरे बच्चे, इसी स्नेह के सागर में समा जाओ। यह स्नेह छत्रछाया का काम करता है, इसके अन्दर माया आ नहीं सकती, यही सहजयोगी बनने का साधन है।

''मीठे बच्चे – अभी तुम्हारी सुनवाई हुई है, आखिर वह दिन आ गया जब तुम उत्तम से उत्तम पुरुष इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर बन रहे हो''

प्रश्नः- हार और जीत से सम्बन्धित कौन-सा एक ऐसा भ्रष्ट कर्म है जो मनुष्य को दु:खी करता है?

उत्तरः- ''जुआ''। बहुत मनुष्यों में जुआ खेलने की आदत होती है, यह भ्रष्ट कर्म है क्योंकि हारने से दु:ख, जीतने से खुशी होगी। तुम बच्चों को बाप का फरमान है – बच्चे, दैवी कर्म करो। ऐसा कोई भी कर्म नहीं करना है जिसमें टाइम वेस्ट हो। सदा बेहद की जीत पाने का पुरुषार्थ करो।

गीतः- आखिर वह दिन आया आज.....

ओम् शान्ति। डबल ओम् शान्ति। तुम बच्चों को भी कहना होगा ओम् शान्ति। यहाँ फिर है डबल ओम् शान्ति। एक सुप्रीम आत्मा (शिवबाबा) कहते हैं ओम् शान्ति, दूसरा यह दादा कहते हैं ओम् शान्ति। फिर तुम बच्चे भी कहते हो हम आत्मा शान्त स्वरूप हैं, रहने वाले भी शान्ति देश के हैं। यहाँ इस स्थूल देश में पार्ट बजाने आये हैं। यह बातें आत्मायें भूल गई हैं फिर आखिर वह दिन तो जरूर आया है, जब सुनवाई होती है। कौन सी सुनवाई? कहते हैं बाबा दु:ख हरकर सुख दो। हर एक मनुष्य सुख-शान्ति ही पसन्द करते हैं। बाप है भी गरीब निवाज़। इस समय भारत बिल्कुल गरीब है। बच्चे जानते हैं हम बिल्कुल साहूकार थे। यह भी तुम ब्राह्मण बच्चे जानते हो, बाकी तो सब जंगल में हैं। तुम बच्चों को भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार निश्चय है। तुम जानते हो यह है श्री श्री, उनकी मत भी श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ है। भगवानुवाच है ना। मनुष्य तो राम-राम की ऐसी धुन लगाते हैं जैसे बाजा बजता है। अब राम तो त्रेता का राजा था, उनकी महिमा बड़ी थी। 14 कला था। दो कला कम, उनके लिए भी गाते हैं राम राजा, राम प्रजा,..... तुम साहूकार बनते हो ना। राम से ज्यादा साहूकार फिर लक्ष्मी-नारायण होंगे। राजा को अन्नदाता कहते हैं। बाप भी दाता है, वह सब कुछ देते हैं, बच्चों को विश्व का मालिक बनाते हैं। वहाँ कोई अप्राप्त वस्तु होती नहीं, जिसके लिए पाप करना पड़े। वहाँ पाप का नाम नहीं होता। आधाकल्प है दैवी राज्य फिर आधाकल्प है आसुरी राज्य। असुर अर्थात् जिनमें देह-अभिमान है, 5 विकार हैं।

अभी तुम आये हो खिवैया अथवा बागवान के पास। तुम जानते हो हम डायरेक्ट उनके पास बैठे हैं। तुम बच्चे भी बैठे-बैठे भूल जाते हो। भगवान जो फरमाते हैं वह मानना चाहिए ना। पहले तो वह श्रीमत देते हैं श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनाने के लिए। तो मत पर चलना चाहिए ना। पहली-पहली मत देते हैं - देही-अभिमानी बनो। बाबा हम आत्माओं को पढ़ाते हैं। यह पक्का-पक्का याद करो। यह अक्षर याद किया तो बेड़ा पार है। बच्चों को समझाया है, तुम ही 84 जन्म लेते हो। तुम ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हो। यह दुनिया तो पतित दु:खी है। स्वर्ग को कहा जाता है सुखधाम। बच्चे जानते हैं शिवबाबा, भगवान हमको पढ़ाते हैं। उनके हम स्टूडेण्ट हैं। वह बाप भी है, टीचर भी है, तो पढ़ना भी अच्छी रीति चाहिए। दैवी कर्म भी चाहिए। कोई भ्रष्ट कर्म नहीं करना चाहिए। भ्रष्ट कर्म में जुआ भी आ जाता है। यह भी दु:ख देते हैं। हारा तो दु:ख होगा, जीता तो खुशी होगी। अभी तुम बच्चों ने माया से बेहद की हार खाई है। यह है भी बेहद के हार और जीत का खेल। 5 विकारों रूपी रावण से हारे हार है, उन पर जीत पानी है। माया ते हारे हार है। अब तुम बच्चों की जीत होनी है। अब तुमको भी जुआ आदि सब छोड़ देना चाहिए। अब बेहद की जीत पाने पर पूरा अटेन्शन देना चाहिए। कोई भी ऐसा कर्म नहीं करना है, टाइम वेस्ट नहीं करना है। बेहद की जीत पाने के लिए पुरुषार्थ करना है। कराने वाला बाप समर्थ है। वह है सर्वशक्तिमान्। यह भी समझाया है सिर्फ बाप सर्वशक्तिमान् नहीं है। रावण भी सर्वशक्तिमान् है। आधाकल्प रावण राज्य, आधाकल्प राम राज्य चलता है। अभी तुम रावण पर जीत पाते हो। अब वह हद की बातें छोड़ बेहद में लग जाना है। खिवैया आया है। आखिर वह दिन आया तो है ना। पुकार की सुनवाई होती है ऊंच ते ऊंच बाप के पास। बाप कहते हैं – बच्चे, तुमने आधाकल्प बहुत धक्के खाये हैं। पतित बने हो। पावन भारत शिवालय था। तुम शिवालय में रहते थे। अभी तुम वेश्यालय में हो। तुम शिवालय में रहने वालों को पूजते हो। यहाँ इन अनेक धर्मों का कितना घमसान है। बाप कहते हैं इन सबको मैं खलास कर देता हूँ। सबका विनाश होना है और धर्म-स्थापक विनाश नहीं करते हैं। वह सद्गति देने वाले गुरू भी नहीं हैं। सद्गति ज्ञान से ही होती है। सर्व का सद्गति दाता ज्ञान-सागर बाप ही है। यह अक्षर अच्छी रीति नोट करो। बहुत हैं जो यहाँ सुनकर बाहर गये तो यहाँ की यहाँ रह जाती है। जैसे गर्भ जेल में कहते हैं – हम पाप नहीं

करेंगे। बाहर निकले, बस वहाँ की वहाँ रही। थोड़ा बड़ा हुआ पाप करने लग पड़ते। काम कटारी चलाते हैं। सतयुग में तो गर्भ भी महल रहता है। तो बाप बैठ समझाते हैं – आखिर वह दिन आया आज। कौन-सा दिन? पुरुषोत्तम संगमयुग का। जिसका कोई को पता नहीं है। बच्चे फील करते हैं हम पुरुषोत्तम बनते हैं। उत्तम ते उत्तम पुरुष हम ही थे, श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ धर्म था। कर्म भी श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ थे। रावण राज्य ही नहीं होता। आखरीन वह दिन आया जो बाप आया है पढ़ाने। वही पतित-पावन है। तो ऐसे बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए ना। अभी है कलियुग का अन्त। थोड़ा टाइम भी चाहिए ना, पावन बनने के लिए। 60 वर्ष के बाद वानप्रस्थ कहते हैं। 60 तो लगी लाठ। अभी तो देखो 80 वर्ष वाले भी विकारों को छोड़ते नहीं। बाप कहते हैं मैं इनकी वानप्रस्थ अवस्था में प्रवेश कर इनको समझाता हूँ। आत्मा ही पवित्र बन पार जाती है। आत्मा ही उड़ती है। अभी आत्मा के पंख कटे हुए हैं। उड़ नहीं सकती है। रावण ने पंख काट दिये हैं। पतित बन गई है। कोई एक भी वापिस जा न सके। पहले तो सुप्रीम बाप को जाना चाहिए। शिव की बरात कहते हैं ना। शंकर की बरात होती नहीं। बाप के पिछाड़ी हम सब बच्चे जाते हैं। बाबा आया हुआ है लेने के लिए। शरीर सहित तो नहीं ले जायेंगे ना। आत्मायें सब पतित हैं। जब तक पवित्र न बनें तब तक वापिस जा न सकें। प्योरिटी थी तो पीस और प्रासपर्टी थी। सिर्फ तुम आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले ही थे। अभी और सब धर्म वाले हैं। डिटीज्म है नहीं। इनको कल्प वृक्ष कहा जाता है। बड़ के झाड़ से इनकी भेंट की जाती है। थुर है नहीं। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। वैसे यह भी देवी-देवता धर्म का फाउन्डेशन है नहीं। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। था जरूर परन्तु प्राय: लोप हो गया है फिर रिपीट होगा। बाप कहते हैं मैं फिर आता हूँ एक धर्म की स्थापना करने, बाकी सब धर्मों का विनाश हो जाता है। नहीं तो सृष्टि चक्र कैसे फिरे? कहा भी जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट। अभी पुरानी दुनिया है फिर नई दुनिया को रिपीट होना है। यह पुरानी दुनिया बदल नई दुनिया स्थापन होगी। यही भारत नया सो पुराना बनता है। कहते हैं जमुना के कण्ठे पर परिस्तान था। बाबा कहते हैं तुम काम चिता पर बैठ कब्रिस्तानी बन पड़े हो। फिर तुमको परिस्तानी बनाते हैं। श्रीकृष्ण को श्याम-सुन्दर कहते हैं – क्यों? किसकी भी बुद्धि में नहीं होगा। नाम तो अच्छा है ना। राधे और कृष्ण – यह हैं न्यु वर्ल्ड के प्रिन्स-प्रिन्सेज। बाप कहते हैं काम चिता पर बैठने से आइरन एज में हैं। गाया हुआ भी है, सागर के बच्चे काम चिता पर जल मरे। अब बाप सब पर ज्ञान वर्षा करते हैं। फिर सब चले जायेंगे गोल्डन एज में। अभी है संगमयुग। तुमको अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान मिलता है, जिससे तुम साहूकार बनते हो। यह एक-एक रत्न लाखों रूपये का है। वो लोग फिर समझते हैं – शास्त्रों के वरशन्स लाखों रूपये के हैं। तुम बच्चे इस पढ़ाई से पद्मपति बनते हो। सोर्स ऑफ इनकम है ना। इन ज्ञान रत्नों को तुम धारण करते हो। झोली भरते हो। वह फिर शंकर के लिए कहते हैं – हे बम बम महादेव, भर दो झोली। शंकर पर कितने इल्ज़ाम लगाये हैं। ब्रह्मा और विष्णु का पार्ट यहाँ है। यह भी तुम जानते हो 84 जन्म विष्णु के लिए भी कहेंगे, लक्ष्मी-नारायण के लिए भी। तुम ब्रह्मा के लिए भी कहेंगे। बाप बैठ समझाते हैं – राइट क्या है, रांग क्या है, ब्रह्मा और विष्णु का पार्ट क्या है। तुम ही देवता थे, चक्र लगाए ब्राह्मण बने फिर अब देवता बनते हो। पार्ट सारा यहाँ बजता है। वैकुण्ठ के खेल-पाल देखते हैं। यहाँ तो वैकुण्ठ नहीं है। मीरा डांस करती थी। वह सब साक्षात्कार कहेंगे। कितना उनका मान है। साक्षात्कार किया, श्रीकृष्ण से डांस की। सो क्या! स्वर्ग में तो नहीं गई ना। गति-सद्गति तो संगम पर ही मिल सकती है। इस पुरूषोत्तम संगमयुग को तुम समझते हो। हम बाबा द्वारा अब मनुष्य से देवता बन रहे हैं। विराट रूप की भी नॉलेज चाहिए ना। चित्र रखते हैं, समझते कुछ भी नहीं। अकासुर-बकासुर यह सब इस संगम के नाम हैं। भस्मासुर भी नाम है। काम चिता पर बैठ भस्म हो गये हैं। अब बाप कहते हैं – मैं सबको फिर से ज्ञान चिता पर बिठाए ले जाता हूँ। आत्मायें सब भाई-भाई हैं। कहते भी हैं हिन्दू-चीनी भाई-भाई, हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई हैं। अब भाई-भाई भी आपस में लड़ते रहते हैं। कर्म तो आत्मा करती है ना। शरीर द्वारा आत्मा लड़ती है। पाप भी आत्मा पर लगता है, इसलिए पाप आत्मा कहा जाता है। बाप कितना प्यार से बैठ समझाते हैं। शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों को हक है बच्चे-बच्चे कहना। बाप, दादा द्वारा कहते हैं – हे बच्चों! समझते हो ना, हम आत्मा यहाँ आकर पार्ट बजाती हैं। फिर अन्त में बाप आकर सबको पवित्र बनाए साथ ले जाते हैं। बाप ही आकर नॉलेज देते हैं। आते भी यहाँ ही हैं। शिव जयन्ती भी मनाते हैं। शिव जयन्ती के बाद फिर होती है कृष्ण जयन्ती। श्रीकृष्ण ही फिर श्रीनारायण बनते हैं। फिर चक्कर लगाए अन्त में सांवरा (पतित) बनते हैं। बाप आकर फिर गोरा बनाते हैं। तुम ब्राह्मण सो देवता बनेंगे। फिर सीढ़ी उतरेंगे। यह 84 जन्मों का हिसाब और कोई की बुद्धि में नहीं

होगा। बाप ही बच्चों को समझाते हैं। गीत भी सुना – आखरीन भक्तों की सुनवाई होती है। बुलाते भी हैं – हे भगवान आकर हमको भक्ति का फल दो। भक्ति फल नहीं देती। फल भगवान देता है। भक्तों को देवता बनाते हैं। बहुत भक्ति तुमने की है। पहले-पहले तुमने ही शिव की भक्ति की। जो अच्छी रीति इन बातों को समझेंगे, तुम फील करेंगे यह हमारे कुल का है। किसकी बुद्धि में ठहरता नहीं है तो समझो भक्ति बहुत नहीं की है, पीछे आया है। यहाँ भी पहले नहीं आयेंगे। यह हिसाब है। जिसने बहुत भक्ति की है उनको बहुत फल मिलेगा। थोड़ी भक्ति थोड़ा फल। वह स्वर्ग के सुख भोग नहीं सकते क्योंकि शुरू में शिव की भक्ति थोड़ी की है। तुम्हारी बुद्धि अब काम करती है। बाबा भिन्न-भिन्न युक्तियाँ बहुत समझाते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) एक-एक अविनाशी ज्ञान रत्न जो पद्मों के समान हैं, इनसे अपनी झोली भर, बुद्धि में धारण कर फिर दान करना है।

2) श्री श्री की श्रेष्ठ मत पर पूरा-पूरा चलना है। आत्मा को सतोप्रधान बनाने के लिए देही-अभिमानी बनने का पूरा-पूरा पुरुषार्थ करना है।

वरदान:- सर्व के प्रति शुभ भाव और श्रेष्ठ भावना धारण करने वाले हंस बुद्धि होलीहंस भव

हंस बुद्धि अर्थात् सदा हर आत्मा के प्रति श्रेष्ठ और शुभ सोचने वाले। पहले हर आत्मा के भाव को परखने वाले और फिर धारण करने वाले। कभी भी बुद्धि में किसी भी आत्मा के प्रति अशुभ वा साधारण भाव धारण न हो। सदा शुभ भाव और शुभ भावना रखने वाले ही होलीहंस हैं। वे किसी भी आत्मा के अकल्याण की बातें सुनते, देखते भी अकल्याण को कल्याण की वृत्ति से बदल देंगे। उनकी दृष्टि हर आत्मा के प्रति श्रेष्ठ शुद्ध स्नेह की होगी।

स्लोगन:- प्रेम से भरपूर ऐसी गंगा बनो जो आपसे प्यार का सागर बाप दिखाई दे।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

कई भक्त आत्मायें प्रभु प्रेम में लीन होना चाहती हैं और कई फिर ज्योति में लीन होना चाहती हैं। ऐसी आत्माओं को सेकेण्ड में बाप का परिचय, बाप की महिमा और प्राप्ति सुनाए सम्बन्ध की लवलीन अवस्था का अनुभव कराओ। लवलीन होंगे तो सहज ही लीन होने के राज़ को भी समझ जायेंगे।

''मीठे बच्चे – अपनी सेफ्टी के लिए विकारों रूपी माया के चम्बे (पंजे) से सदा बचकर रहना है, देह-अभिमान में कभी नहीं आना है''

प्रश्नः- पुण्य आत्मा बनने के लिए बाप सभी बच्चों को कौन-सी मुख्य शिक्षा देते हैं?

उत्तरः- बाबा कहते – बच्चे, पुण्यात्मा बनना है तो 1. श्रीमत पर सदा चलते रहो। याद की यात्रा में गफ़लत नहीं करो। 2. आत्म-अभिमानी बनने का पूरा-पूरा पुरूषार्थ कर काम महाशत्रु पर जीत प्राप्त करो। यही समय है – पुण्यात्मा बन इस दु:खधाम से पार सुखधाम में जाने का।

ओम् शान्ति। बाप ही रोज़ बच्चों से पूछते हैं। शिवबाबा के लिए ऐसे नहीं कहेंगे कि बचड़ेवाल है। आत्मायें तो अनादि हैं ही। बाप भी है। इस समय जबकि बाप और दादा दोनों हैं तब ही बच्चों की सम्भाल करनी होती है। कितने बच्चे हैं जिनकी सम्भाल करनी होती है। एक-एक का पोतामेल रखना होता है। जैसे लौकिक बाप को भी फुरना रहता है ना। समझते हैं – हमारा बच्चा भी इस ब्राह्मण कुल में आ जाए तो अच्छा है। हमारे बच्चे भी पवित्र बन पवित्र दुनिया में चलें। कहाँ इस पुराने माया के नाले में बह न जायें। बेहद के बाप को बच्चों का फुरना रहता है। कितने सेन्टर्स हैं, किस बच्चे को कहाँ भेजना है जो सेफ्टी में रहें। आजकल सेफ्टी भी मुश्किल है। दुनिया में कोई भी सेफ्टी नहीं है। स्वर्ग में तो हर एक की सेफ्टी है। यहाँ कोई की सेफ्टी नहीं है। कहाँ न कहाँ विकारों रूपी माया के चम्बे में फंस पड़ते हैं। अभी तुम आत्माओं को यहाँ पढ़ाई मिल रही है। सत का संग भी यहाँ है। यहाँ ही दु:खधाम से पार सुखधाम में जाना है क्योंकि अब बच्चों को पता पड़ा है दु:खधाम क्या है, सुखधाम क्या है। बरोबर अभी दु:खधाम है। हमने पाप बहुत किये हैं और वहाँ पुण्य आत्मायें ही रहती हैं। हमको अभी पुण्य आत्मा बनना है। अभी तुम हर एक अपने 84 जन्मों की हिस्ट्री-जॉग्राफी जान गये हो। दुनिया में कोई भी 84 जन्मों की हिस्ट्री-जॉग्राफी नहीं जानते। अभी बाप ने आकर सारी जीवन कहानी समझाई है। अभी तुम जानते हो हमें पूरा पुण्य आत्मा बनना है - याद की यात्रा से। इसमें ही बहुत धोखा खाते हैं गफलत करने से। बाप कहते हैं इस समय गफ़लत अच्छी नहीं है। श्रीमत पर चलना है। उसमें भी मुख्य बात कहते हैं एक तो याद की यात्रा में रहो, दूसरा काम महाशत्रु पर जीत पानी है। बाप को सब पुकारते हैं क्योंकि उनसे शान्ति और सुख का वर्सा मिलता है आत्माओं को। आगे देह-अभिमानी थे तो कुछ पता नहीं पड़ता था। अभी बच्चों को आत्म-अभिमानी बनाया जाता है। नये को पहले-पहले एक हद के, दूसरा बेहद के बाप का परिचय देना है। बेहद के बाप से स्वर्ग (बहिश्त) नसीब होता है। हद के बाप से दोज़क (नर्क) नसीब होता है। बच्चा जब बालिग बनता है तो प्रापर्टी का हकदार बनता है। जब समझ आती है फिर धीरे-धीरे माया के अधीन बन पड़ते हैं। वह सब है रावण राज्य (विकारी दुनिया) की रस्म रिवाज़। अभी तुम बच्चे जानते हो यह दुनिया बदल रही है। इस पुरानी दुनिया का विनाश हो रहा है। एक गीता में ही विनाश का वर्णन है और कोई शास्त्र में महाभारत महाभारी लड़ाई का वर्णन नहीं है। गीता का है ही यह पुरूषोत्तम संगमयुग। गीता का युग माना आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना। गीता है ही देवी-देवता धर्म का शास्त्र। तो यह गीता का युग है, जबकि नई दुनिया स्थापन हो रही है। मनुष्यों को भी बदलना है। मनुष्य से देवता बनना है। नई दुनिया में जरूर दैवी गुणों वाले मनुष्य चाहिए ना। इन बातों को दुनिया नहीं जानती। उन्हों ने कल्प की आयु का टाइम बहुत दे दिया है। अभी तुम बच्चों को बाप समझा रहे हैं – तुम समझते हो बरोबर बाबा हमको पढ़ाते हैं। श्रीकृष्ण को कभी बाप, टीचर या गुरू नहीं कह सकते। श्रीकृष्ण टीचर हो तो सीखा कहाँ से? उनको ज्ञान सागर नहीं कहा जा सकता।

अभी तुम बच्चों को बड़ो-बड़ों को समझाना है, आपस में मिलकर राय करनी है कि सर्विस की वृद्धि कैसे हो। विहंग मार्ग की सर्विस कैसे हो। ब्रह्माकुमारियों के लिए जो इतना हंगामा करते हैं फिर समझेंगे यह तो सच्चे हैं। बाकी दुनिया तो है झूठी, इसलिए सच की नईया को हिलाते रहेंगे। तूफान तो आते हैं ना। तुम नईया हो जो पार जाती हो। तुम जानते हो हमको इस मायावी दुनिया से पार जाना है। सबसे पहले नम्बर में तूफान आता है देह-अभिमान का। वह है सबसे बुरा, इसने ही सबको पतित बनाया है। तब तो बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। यह जैसे बहुत तेज़ तूफान है। कोई तो इन पर जीत पाये हुए भी हैं। गृहस्थ व्यवहार में गये हुए हैं फिर कोशिश करते हैं बचने की। कुमार-कुमारियों के लिए तो बहुत सहज है इसलिए नाम भी गाया हुआ है कन्हैया। इतनी कन्यायें जरूर शिवबाबा की होगी। देहधारी श्रीकृष्ण की तो इतनी कन्यायें

हो न सकें। अभी तुम इस पढ़ाई से पटरानी बन रहे हो, इसमें पवित्रता भी मुख्य चाहिए। अपने आपको देखना है कि याद का चार्ट ठीक है? बाबा के पास कोई का 5 घण्टे का, कोई का 2-3 घण्टे का भी चार्ट आता है। कोई तो लिखते ही नहीं हैं। बहुत कम याद करते हैं। सबकी यात्रा एकरस हो न सके। अजुन ढेर बच्चे वृद्धि को पायेंगे। हर एक को अपना चार्ट देखना है – मैं कहाँ तक पद पा सकूँगा? कहाँ तक खुशी है? हमको सदैव खुशी क्यों नहीं होनी चाहिए। जबकि ऊंच ते ऊंच बाप के बने हैं। ड्रामा अनुसार तुमने भक्ति बहुत की है। भक्तों को फल देने के लिए ही बाप आया है। रावण राज्य में तो विकर्म होते ही हैं। तुम पुरुषार्थ करते हो – सतोप्रधान दुनिया में जाने का। जो पूरा पुरुषार्थ नहीं करेंगे तो सतो में आयेंगे। सब थोड़ेही इतना ज्ञान लेंगे। सन्देश जरूर सुनेंगे। फिर कहाँ भी होंगे इसलिए कोने-कोने में जाना चाहिए। विलायत में भी मिशन जानी चाहिए। जैसे बौद्धियों की, क्रिश्चियन्स की यहाँ मिशन है ना। दूसरे धर्म वालों को अपने धर्म में लाने की मिशन होती है। तुम समझाते हो कि हम असुल में देवी-देवता धर्म के थे। अब हिन्दू धर्म के बन गये हैं। तुम्हारे पास बहुत करके हिन्दू धर्म वाले ही आयेंगे। उनमें भी जो शिव के, देवताओं के पुजारी होंगे वह आयेंगे। जैसे बाबा ने कहा – राजाओं की सेवा करो। वह अक्सर करके देवताओं के पुजारी होते हैं। उन्हों के घर में मन्दिर रहते हैं। उन्हों का भी कल्याण करना है। तुम भी समझो हम बाप के साथ दूरदेश से आये हैं। बाप आये ही हैं नई दुनिया स्थापन करने। तुम भी कर रहे हो। जो स्थापना करेंगे वह पालना भी करेंगे। अन्दर में नशा रहना चाहिए – हम शिवबाबा के साथ आये हैं दैवी राज्य स्थापन करने, सारे विश्व को स्वर्ग बनाने। आश्चर्य लगता है इस देश में क्या-क्या करते रहते हैं। पूजा कैसे करते हैं। नवरात्रि में देवियों की पूजा होती है ना। रात्रि है तो दिन भी है। तुम्हारा एक गीत भी है ना – क्या कौतुक देखा..... मिट्टी का पुतला बनाए, श्रृंगार कर उसकी पूजा करते हैं, उनसे फिर दिल इतनी लग जाती है जो जब डुबोने जाते हैं तो रो पड़ते हैं। मनुष्य जब मरते हैं तो अर्थी को भी ले जाते हैं। हरीबोल, हरीबोल कर डुबो देते हैं। जाते तो बहुत हैं ना। नदी तो सदैव है। तुम जानते हो यह जमुना का कण्ठा था, जहाँ रास विलास आदि करते थे। वहाँ तो बड़े-बड़े महल होते हैं। तुमको ही जाकर बनाने हैं। जब कोई बड़ा इम्तहान पास करते हैं तो उनकी बुद्धि में चलता है – पास होकर फिर यह करेंगे, मकान बनायेंगे। तुम बच्चों को भी ख्याल रखना है – हम देवता बनते हैं। अब हम अपने घर जायेंगे। घर को याद कर खुश होना चाहिए। मनुष्य मुसाफ़िरी कर घर लौटते हैं तो खुशी होती है। हम अब घर जाते हैं। जहाँ जन्म हुआ था। हम आत्माओं का भी घर है मूलवतन। कितनी खुशी होती है। मनुष्य इतनी भक्ति करते ही हैं मुक्ति के लिए। परन्तु ड्रामा में पार्ट ऐसा है जो वापिस जाने का कोई को मिलता नहीं है। तुम जानते हो उन्हों को आधाकल्प पार्ट जरूर बजाना है। हमारे अब 84 जन्म पूरे होते हैं। अब वापिस जाना है और फिर राजधानी में आयेंगे। बस घर और राजधानी याद है। यहाँ बैठे भी कोई-कोई को अपने कारखाने आदि याद रहते हैं। जैसे देखो बिड़ला है, कितने उनके कारखाने आदि हैं। सारा दिन उनको ख्यालात रहती होगी। उनको कहें बाबा को याद करो तो कितनी उनको अटक पड़ेगी। घड़ी-घड़ी धन्धा याद आता रहेगा। सबसे सहज है माताओं को, उनसे भी कन्याओं को। जीते जी मरना है, सारी दुनिया को भूल जाना है। तुम अपने को आत्मा समझ शिवबाबा के बनते हो, इसको जीते जी मरना कहा जाता है। देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा समझ शिवबाबा का बन जाना है। शिवबाबा को ही याद करते रहना है क्योंकि पापों का बोझा सिर पर बहुत है। दिल तो सबकी होती है, हम जीते जी मरकर शिवबाबा का बन जायें। शरीर का भान न रहे। हम अशरीरी आये थे फिर अशरीरी बनकर जाना है। बाप के बने हैं तो बाप के सिवाए दूसरा कोई याद न रहे। ऐसा जल्दी हो जाए तो फिर लड़ाई भी जल्दी लगे। बाबा कितना समझाते हैं हम तो शिवबाबा के हैं ना। हम वहाँ के रहने वाले हैं। यहाँ तो कितना दु:ख है। अभी यह अन्तिम जन्म है। बाप ने बताया है तुम सतोप्रधान थे तो और कोई नहीं था। तुम कितने साहूकार थे। भल इस समय पैसे कौड़ी हैं परन्तु यह तो कुछ है नहीं। कौड़ियां हैं। यह सब अल्पकाल सुख के लिए है। बाप ने समझाया है – पास्ट में दान-पुण्य किया है तो पैसा भी बहुत मिलता है। फिर दान करते हैं। परन्तु यह है एक जन्म की बात। यहाँ तो जन्म-जन्मान्तर के लिए साहूकार बनते हैं। जितना बड़ा कहावना, उतना बड़ा दु:ख पाना। जिनको बहुत धन है वह फिर बहुत फंसे हुए हैं। कभी ठहर न सकें। कोई साधारण गरीब ही सरेन्डर होंगे। साहूकार कभी नहीं होंगे। वह कमाते ही हैं पुत्र-पोत्रों के लिए कि हमारा कुल चलता रहे। खुद उस घर में नहीं आने वाले हैं। पुत्र पोत्रे आयें, जिन्होंने अच्छे कर्म किये हैं। जैसे बहुत दान

जो करते हैं तो वह राजा बनते हैं। परन्तु एवरहेल्दी तो नहीं हैं। राजाई की तो क्या हुआ, अविनाशी सुख नहीं है। यहाँ कदम-कदम पर अनेक प्रकार के दु:ख होते हैं। वहाँ यह सब दु:ख दूर हो जाते हैं। बाप को पुकारते हैं कि हमारे दु:ख दूर करो। तुम समझते हो दु:ख दूर सब होने हैं। सिर्फ बाप को याद करते रहें। सिवाए एक बाप के और कोई से वर्सा मिल नहीं सकता। बाप सारे विश्व का दु:ख दूर करते हैं। इस समय तो जानवर आदि भी कितना दु:खी हैं। यह है ही दु:खधाम। दु:ख बढ़ता जाता है, तमोप्रधान बनते जाते हैं। अभी हम संगमयुग पर बैठे हैं। वह सब कलियुग में हैं। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। बाबा हमको पुरूषोत्तम बना रहे हैं। यह याद रहे तो भी खुशी रहे। भगवान पढ़ाते हैं, विश्व का मालिक बनाते हैं। यह भला याद करो। उनके बच्चे भगवान-भगवती होने चाहिए ना पढ़ाई से। भगवान तो सुख देने वाला है फिर दु:ख कैसे मिलता है? वह भी बाप बैठ समझाते हैं। भगवान के बच्चे फिर दु:ख में क्यों हैं, भगवान दु:ख हर्ता सुख कर्ता है तो जरूर दु:ख में आते हैं तब तो गाते हैं। तुम जानते हो बाप हमको राजयोग सिखा रहे हैं। हम पुरुषार्थ कर रहे हैं। इसमें संशय थोड़ेही हो सकता है। हम बी.के. राजयोग सीख रहे हैं। झूठ थोड़ेही बोलेंगे। कोई को यह संशय आये तो समझाना चाहिए, यह तो पढ़ाई है। विनाश सामने खड़ा है। हम हैं संगमयुगी ब्राह्मण चोटी। प्रजापिता ब्रह्मा है तो जरूर ब्राह्मण भी होने चाहिए। तुमको भी समझाया है तब तो निश्चय किया है। बाकी मुख्य बात है याद की यात्रा, इसमें ही विघ्न पड़ते हैं। अपना चार्ट देखते रहो – कहाँ तक बाबा को याद करते हैं, कहाँ तक खुशी का पारा चढ़ता है? यह आन्तरिक खुशी रहनी चाहिए कि हमको बागवान-पतित पावन का हाथ मिला है, हम शिवबाबा से ब्रह्मा द्वारा हैण्ड-शेक करते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) अपने घर और राजधानी को याद कर अपार खुशी में रहना है। सदा याद रहे – अब हमारी मुसाफ़िरी पूरी हुई, हम जाते हैं अपने घर, फिर राजधानी में आयेंगे।

2) हम शिवबाबा से ब्रह्मा द्वारा हैण्ड शेक करते हैं, वह बागवान हमें पतित से पावन बना रहे हैं। हम इस पढ़ाई से स्वर्ग की पटरानी बनते हैं – इसी आन्तरिक खुशी में रहना है।

वरदान:- तीन प्रकार की विजय का मैडल प्राप्त करने वाले सदा विजयी भव

विजय माला में नम्बर प्राप्त करने के लिए पहले स्व पर विजयी, फिर सर्व पर विजयी और फिर प्रकृति पर विजयी बनो। जब यह तीन प्रकार की विजय के मैडल प्राप्त होंगे तब विजय माला का मणका बन सकेंगे। स्व पर विजयी बनना अर्थात् अपने व्यर्थ भाव, स्वभाव को श्रेष्ठ भाव, शुभ भावना से परिवर्तन करना। जो ऐसे स्व पर विजयी बनते हैं वही दूसरों पर भी विजय प्राप्त कर लेते हैं। प्रकृति पर विजय प्राप्त करना अर्थात् वायुमण्डल, वायब्रेशन और स्थूल प्रकृति की समस्याओं पर विजयी बनना।

स्लोगन:- स्वयं की कर्मेन्द्रियों पर सम्पूर्ण राज्य करने वाले ही सच्चे राजयोगी हैं।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

आप बच्चों को ज्ञान के साथ-साथ सच्चा रूहानी प्यार मिला है। उस रूहानी प्यार ने ही प्रभु का बनाया है। हर बच्चे को डबल प्यार मिलता है - एक बाप का, दूसरा दैवी परिवार का। तो प्यार के अनुभव ने परवाना बनाया है। प्यार ही चुम्बक का काम करता है। फिर सुनने व मरने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। संगम पर जो सच्चे प्यार में जीते जी मरता है, वही स्वर्ग में जाता है।

''मीठे बच्चे – ज्ञान को बुद्धि में धारण कर आपस में मिलकर क्लास चलाओ, अपना और औरों का कल्याण कर सच्ची कमाई करते रहो''

प्रश्नः- तुम बच्चों में कौन-सा अहंकार कभी नहीं आना चाहिए?

उत्तरः- कई बच्चों में अहंकार आता है कि यह छोटी-छोटी बालकियाँ हमें क्या समझायेंगी। बड़ी बहन चली गई तो रूठकर क्लास में आना बंद कर देंगे। यह हैं माया के विघ्न। बाबा कहते – बच्चे, तुम सुनाने वाली टीचर के नाम-रूप को न देख, बाप की याद में रह मुरली सुनो। अहंकार में मत आओ।

ओम् शान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। अब बाप जब कहा जाता है तो इतने बच्चों का एक जिस्मानी बाप तो हो नहीं सकता। यह है रूहानी बाप। उनके ढेर बच्चे हैं, बच्चों के लिए यह टेप मुरली आदि सामग्री है। बच्चे जानते हैं अभी हम संगमयुग पर बैठे हैं पुरूषोत्तम बनने के लिए। यह भी खुशी की बात है। बाप ही पुरूषोत्तम बनाते हैं। यह लक्ष्मी-नारायण पुरूषोत्तम हैं ना। इस सृष्टि में ही उत्तम पुरूष, मध्यम और कनिष्ट होते हैं। आदि में हैं उत्तम, बीच में हैं मध्यम, अन्त में हैं कनिष्ट। हर चीज़ पहले नई उत्तम फिर मध्यम फिर कनिष्ट अर्थात् पुरानी बनती है। दुनिया का भी ऐसे है। तो जिन-जिन बातों पर मनुष्यों को संशय आता है, उस पर तुमको समझाना है। बहुत करके ब्रह्मा के लिए ही कहते हैं कि इनको क्यों बिठाया है? तो उनको झाड़ के चित्र पर ले आना चाहिए। देखो नीचे भी तपस्या कर रहे हैं और ऊपर में एकदम अन्त में बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में खड़े हैं। बाप कहते हैं मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। यह बातें समझाने वाला बड़ा अक्लमंद चाहिए। एक भी बेअक्ल निकलता है, तो सभी बी.के. का नाम बदनाम हो जाता है। पूरा समझाना आता नहीं है। भल कम्पलीट पास तो अन्त में ही होते हैं, इस समय 16 कला सम्पूर्ण कोई बन न सके लेकिन समझाने में नम्बरवार जरूर होते हैं। परमपिता परमात्मा से प्रीत नहीं है तो विप्रीत बुद्धि ठहरे ना। इस पर तुम समझा सकते हो जो प्रीत बुद्धि हैं वह विजयन्ती और जो विप्रीत बुद्धि हैं वह विनशन्ती हो जाते हैं। इस पर भी कई मनुष्य बिगड़ते हैं, फिर कोई न कोई इल्ज़ाम लगा देते हैं। झगड़ा-फसाद मचाने में देरी नहीं करते हैं। कोई कर ही क्या सकते हैं। कभी चित्रों को आग लगाने में भी देरी नहीं करेंगे। बाबा राय भी देते हैं - चित्रों को इन्श्योर करा दो। बच्चों की अवस्था को भी बाप जानते हैं, क्रिमिनल आई पर भी बाबा रोज़ समझाते रहते हैं। लिखते हैं – बाबा, आपने जो क्रिमिनल आई पर समझाया है यह बिल्कुल ठीक कहा है। यह दुनिया तमोप्रधान है ना। दिन-प्रतिदिन तमोप्रधान बनते जाते हैं। वो तो समझते हैं कलियुग अभी रेगड़ी पहन रहा है (घुटनों के बल चल रहा है) अज्ञान नींद में बिल्कुल सोये हुए हैं। कभी-कभी कहते भी हैं यह महाभारत लड़ाई का समय है तो जरूर भगवान कोई रूप में होगा। रूप तो बताते नहीं। उनको जरूर किसमें प्रवेश होना है। भाग्यशाली रथ गाया जाता है। रथ तो आत्मा का अपना होगा ना। उसमें आकर प्रवेश करेंगे। उनको कहा जाता है भाग्यशाली रथ। बाकी वह जन्म नहीं लेते हैं। इनके ही बाजू में बैठ ज्ञान देते हैं। कितना अच्छी रीति समझाया जाता है। त्रिमूर्ति चित्र भी है। त्रिमूर्ति तो ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को कहेंगे। जरूर यह कुछ करके गये हैं। जो फिर रास्तों पर, मकान पर भी त्रिमूर्ति नाम रखा है। जैसे इस रोड को सुभाष मार्ग नाम दिया है। सुभाष की हिस्ट्री तो सब जानते हैं। उन्हों के पीछे बैठ हिस्ट्री लिखते हैं। फिर उनको बनाकर बड़ा कर देते हैं। कितनी भी बड़ाई बैठ लिखें। जैसे गुरुनानक का पुस्तक कितना बड़ा बनाया है। इतना उसने तो लिखा नहीं है। ज्ञान के बदले भक्ति की बातें बैठ लिखी हैं। यह चित्र आदि तो बनाये जाते हैं समझाने के लिए। यह तो जानते हैं इन आंखों से जो कुछ दिखाई पड़ता है यह सब भस्म हो जाना है। बाकी आत्मा तो यहाँ रह न सके। जरूर घर चली जायेगी। ऐसी-ऐसी बातें कोई सबकी बुद्धि में बैठती थोड़ेही है। अगर धारणा होती है तो क्लास क्यों नहीं चलाते। 7-8 वर्ष में ऐसा कोई तैयार नहीं होता जो क्लास चला सके। बहुत जगह ऐसे चलाते भी हैं। फिर भी समझते हैं माताओं का मर्तबा ऊंच है। चित्र तो बहुत हैं फिर मुरली धारण कर उस पर थोड़ा समझाते हैं। यह तो कोई भी कर सकते हैं। बहुत सहज है। फिर पता नहीं क्यों ब्राह्मणी की मांगनी करते हैं। ब्राह्मणी कहाँ गई तो बस रूठकर बैठ जाते हैं। क्लास में नहीं आते, आपस में खिटपिट हो जाती है। मुरली तो कोई भी बैठ सुना सकते हैं ना। कहेंगे फुर्सत नहीं। यह तो अपना भी कल्याण करना है तो औरों का भी कल्याण करना है। बहुत भारी कमाई है। सच्ची कमाई करानी है जो मनुष्यों का हीरे जैसा जीवन बन जाये। स्वर्ग में सब जायेंगे ना। वहाँ सदैव सुखी रहते हैं। ऐसे नहीं, प्रजा की आयु कम होती है। नहीं, प्रजा की भी आयु बड़ी होती है। वह

है ही अमर लोक। बाकी पद कम-जास्ती होते हैं। तो कोई भी टॉपिक पर क्लास कराना चाहिए। ऐसे क्यों कहते हैं अच्छी ब्राह्मणी चाहिए। आपस में क्लास चला सकते हैं। रड़ी नहीं मारनी चाहिए। कोई-कोई को अहंकार आ जाता है - यह छोटी-छोटी बालकियां क्या समझायेंगी? माया के विघ्न भी बहुत आते हैं। बुद्धि में नहीं बैठता।

बाबा तो रोज़ समझाते रहते हैं, शिवबाबा तो टॉपिक पर नहीं समझायेंगे ना। वह तो सागर है। उछलें मारते रहेंगे। कभी बच्चों को समझाते, कभी बाहर वालों के लिए समझाते। मुरली तो सबको मिलती है। अक्षर नहीं जानते हैं तो सीखना चाहिए ना – अपनी उन्नति के लिए पुरूषार्थ करना चाहिए। अपना भी और दूसरों का भी कल्याण करना है। यह बाप (ब्रह्मा बाबा) भी सुना सकते हैं ना, परन्तु बच्चों का बुद्धियोग शिवबाबा तरफ रहे इसलिए कहते हैं हमेशा समझो शिवबाबा सुनाते हैं। शिवबाबा को ही याद करो। शिवबाबा परमधाम से आये हैं, मुरली सुना रहे हैं। यह ब्रह्मा तो परमधाम से नहीं आकर सुनाते हैं। समझो शिवबाबा इस तन में आकर हमको मुरली सुना रहे हैं। यह बुद्धि में याद होना चाहिए। यथार्थ रीति यह बुद्धि में रहे तो भी याद की यात्रा रहेगी ना। परन्तु यहाँ बैठे भी बहुतों का बुद्धियोग इधर-उधर चला जाता है। यहाँ तुम यात्रा पर अच्छी रीति रह सकते हो। नहीं तो गांव याद आयेगा। घरबार याद आयेगा। बुद्धि में यह याद रहता है – शिवबाबा हमको इसमें बैठ पढ़ाते हैं। हम शिवबाबा की याद में मुरली सुन रहे थे फिर बुद्धियोग कहाँ भाग गया। ऐसे बहुतों का बुद्धियोग चला जाता है। यहाँ तुम यात्रा पर अच्छी रीति रह सकते हो। समझते हो शिवबाबा परमधाम से आये हैं। बाहर गांवड़ों आदि में रहने से यह ख्याल नहीं रहता है। कोई-कोई समझते हैं शिवबाबा की मुरली इन कानों से सुन रहे हैं फिर सुनाने वाले का नाम-रूप याद न रहे। यह ज्ञान सारा अन्दर का है। अन्दर में ख्याल रहे शिवबाबा की मुरली हम सुनते हैं। ऐसे नहीं, फलानी बहन सुना रही है। शिवबाबा की मुरली सुन रहे हैं। यह भी याद में रहने की युक्तियां हैं। ऐसे नहीं कि जितना समय हम मुरली सुनते हैं, याद में हैं। नहीं, बाबा कहते हैं – बहुतों की बुद्धि कहाँ-कहाँ बाहर में चली जाती है। खेतीबाड़ी आदि याद आती रहेगी। बुद्धि योग कहाँ बाहर भटकना नहीं चाहिए। शिवबाबा को याद करने में कोई तकलीफ थोड़ेही है। परन्तु माया याद करने नहीं देती है। सारा समय शिवबाबा की याद रह नहीं सकती, और-और ख्यालात आ जाते हैं। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार है ना। जो बहुत नज़दीक वाले होंगे उनकी बुद्धि में अच्छी रीति बैठेगा। सब थोड़ेही 8 की माला में आ सकेंगे। ज्ञान, योग, दैवीगुण यह सब अपने में देखना है। हमारे में कोई अवगुण तो नहीं है? माया के वश कोई विकर्म तो नहीं होता है? कोई-कोई बहुत लालची बन जाते हैं। लालच का भी भूत होता है। तो माया की प्रवेशता ऐसी होती है जो भूख-भूख करते रहते हैं – खाऊं-खाऊं पेट में बलाऊं..... कोई में खाने की बहुत आसक्ति होती है। खाना भी कायदे अनुसार होना चाहिए। ढेर बच्चे हैं। अब बहुत बच्चे बनने वाले हैं। कितने ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ बनेंगे। बच्चों को भी कहता हूँ – तुम ब्राह्मण बन बैठो। माताओं को आगे रखा जाता है। शिव शक्ति भारत माताओं की जय।

बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो। स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। स्वदर्शन चक्रधारी तुम ब्राह्मण हो। यह बातें नया कोई आये तो समझ न सके। तुम हो सर्वोत्तम ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण कुल भूषण, स्वदर्शन चक्रधारी। नया कोई सुने तो कहेंगे स्वदर्शन चक्र तो विष्णु को है। यह फिर इन सबको कहते रहते हैं, मानेंगे नहीं इसलिए नये-नये को सभा में एलाऊ नहीं करते। समझ नहीं सकेंगे। कोई-कोई फिर बिगड़ पड़ते हैं – क्या हम बेसमझ हैं जो आने नहीं दिया जाता है क्योंकि और-और सतसंगों में तो ऐसे कोई भी जाते रहते हैं। वहाँ तो शास्त्रों की ही बातें सुनाते रहते हैं। वह सुनना हर एक का हक है। यहाँ तो सम्भाल रखनी पड़ती है। यह ईश्वरीय ज्ञान बुद्धि में नहीं बैठता तो बिगड़ पड़ते हैं। चित्रों की भी सम्भाल रखनी पड़ती है। इस आसुरी दुनिया में अपनी दैवी राजधानी स्थापन करनी है। जैसे क्राइस्ट आया अपना धर्म स्थापन करने। यह बाप दैवी राजधानी स्थापन करते हैं। इसमें हिंसा की कोई बात नहीं है। तुम न काम कटारी की और न स्थूल हिंसा कर सकते हो। गाते भी हैं मूत पलीती कपड़ धोए। मनुष्य तो बिल्कुल घोर अन्धियारे में हैं। बाप आकर घोर अन्धियारे से घोर सोझरा करते हैं। फिर भी कोई-कोई बाबा कहकर फिर मुँह मोड़ देते हैं। पढ़ाई छोड़ देते हैं। भगवान विश्व का मालिक बनाने के लिए पढ़ाते हैं, ऐसी पढ़ाई को छोड़ दे तो उनको कहा जाता है महामूर्ख। कितना जबरदस्त खज़ाना मिलता है। ऐसे बाप को थोड़ेही कभी छोड़ना चाहिए। एक गीत भी है – आप प्यार करो या ठुकराओ, हम आपका दर कभी नहीं छोड़ेंगे। बाप आये ही हैं – बेहद की बादशाही देने। छोड़ने की तो बात ही नहीं। हाँ, लक्षण

अच्छे धारण करने हैं। स्त्रियाँ भी रिपोर्ट लिखती हैं – यह हमको बहुत तंग करते हैं। आजकल लोग बहुत-बहुत खराब हैं। बड़ी सम्भाल रखनी चाहिए। भाइयों को बहनों की सम्भाल रखनी है। हम आत्माओं को कोई भी हालत में बाप से वर्सा जरूर लेना है। बाप को छोड़ने से वर्सा खलास हो जाता है। निश्चयबुद्धि विजयन्ती, संशयबुद्धि विनशन्ती। फिर पद बहुत कम हो जाता है। ज्ञान एक ही ज्ञान सागर बाप दे सकते हैं। बाकी सब है भक्ति। भल कोई कितना भी अपने को ज्ञानी समझें परन्तु बाप कहते हैं सबके पास शास्त्रों और भक्ति का ज्ञान है। सच्चा ज्ञान किसको कहा जाता है, यह भी मनुष्य नहीं जानते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) ध्यान रखना है कि मुरली सुनते समय बुद्धियोग बाहर भटकता तो नहीं है? सदा स्मृति रहे कि हम शिवबाबा के महावाक्य सुन रहे हैं। यह भी याद की यात्रा है।

2) अपने आपको देखना है कि हमारे में ज्ञान-योग और दैवी गुण हैं? लालच का भूत तो नहीं है? माया के वश कोई विकर्म तो नहीं होता है?

वरदान:- निमित्त भाव की स्मृति से हलचल को समाप्त करने वाले सदा अचल-अडोल भव

निमित्त भाव से अनेक प्रकार का मैं पन, मेरा पन सहज ही खत्म हो जाता है। यह स्मृति सर्व प्रकार की हलचल से छुड़ाकर अचल-अडोल स्थिति का अनुभव कराती है। सेवा में भी मेहनत नहीं करनी पड़ती। क्योंकि निमित्त बनने वालों की बुद्धि में सदा याद रहता है कि जो हम करेंगे हमें देख सब करेंगे। सेवा के निमित्त बनना अर्थात् स्टेज पर आना। स्टेज तरफ स्वत: सबकी नजर जाती है। तो यह स्मृति भी सेफ्टी का साधन बन जाती है।

स्लोगन:- सर्व बातों में न्यारे बनो तो परमात्म बाप के सहारे का अनुभव होगा।

अव्यक्त इशारे - सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

वर्तमान समय भटकती हुई आत्माओं को एक तो शान्ति चाहिए, दूसरा रूहानी स्नेह चाहिए। प्रेम और शान्ति का ही सब जगह अभाव है इसलिए जो भी प्रोग्राम करो उसमें पहले तो बाप के सम्बन्ध के स्नेह की महिमा करो और फिर उस प्यार से आत्माओं का सम्बन्ध जोड़ने के बाद शान्ति का अनुभव कराओ। प्रेम स्वरूप और शान्त स्वरूप दोनों का बैलेन्स हो।